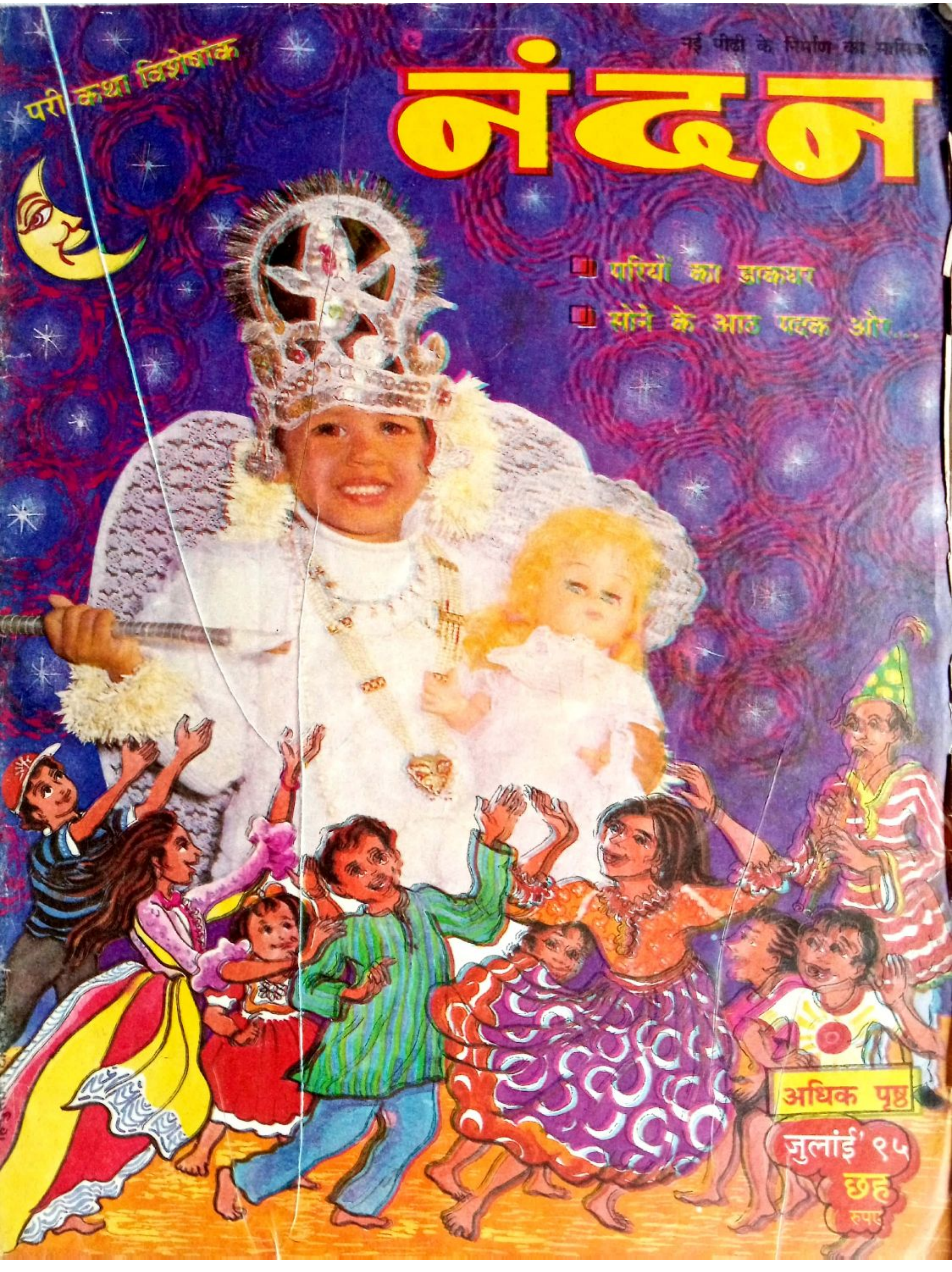
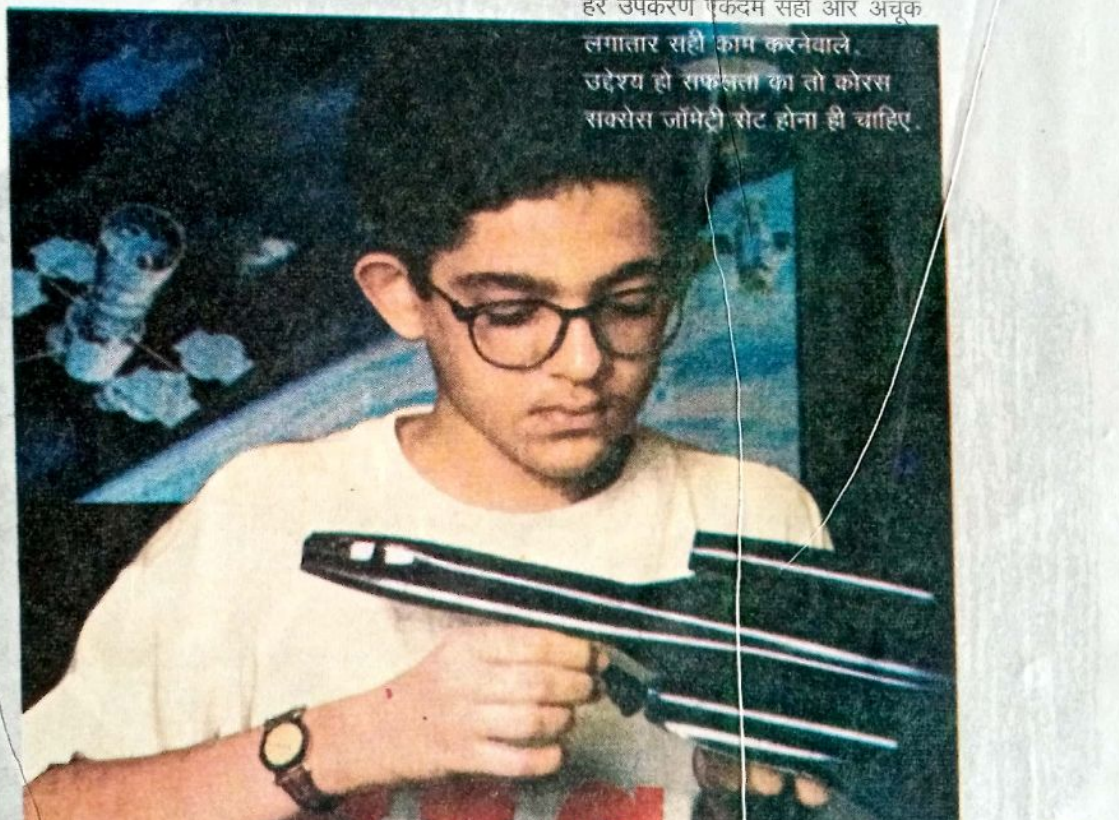

परी कथा विशेषांक
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
परियों का डाकघर
सोने के आठ पदक और...
अधिक पृष्ठ
जुलाई' ९५
छह
रुपए

बहुत महत्त्वाकांक्षी. बहुत ही होशियार
और होनहार
अपने हर काम में पूरी सफलता
चाहते हैं ये

मिलिए आलोक आइनस्टाइन से

बेहतरीन एस्ट्रोफिजिसिस्ट बनना
इनका सपना है जिसे ये साकार
करके रहेंगे
इसलिए ये हमेशा चुनते है सबसे
अच्छा जॉमेट्री सेट – कोरस सक्सेस
प्रोट्रेक्टर. डिवायडर. कम्पास. स्केल
हर उपकरण एकदम सही और अचूक
लगातार सही काम करनेवाले.
उद्देश्य हो सफलता का तो कोरस
सक्सेस जॉमेट्री सेट होना ही चाहिए.



मुफ्त !
*अक्षरों का स्टेंसिल
साथ में

कोरस सक्सेस जॉमेट्री सेट
आपकी सफलता का साधन

कोरस
कोरस (इंडिया) लि. का उत्कृष्ट उत्पादन

* स्टॉक खत्म होने तक

AKA/724-HN



अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और रु. 200/- वार्षिक बचाएं

हर माह छः कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर 4/- **रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री** (लगभग 7/-) लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।

1 वर्ष में महीने	बचत (रु.)	कुल बचत (रु.)
12	4/- (छूट)	48.00
12	7/- (डाक व्यय)	84.00
1	48/- (13वीं वी.पी. फ्री)	48.00
सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक 'उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री		20.00
		200.00

सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और **सदस्यता शुल्क के 10 रु.** डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छः कॉमिक्स होगी।

हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ____________________

पता ____________________

____

डाक __________ जिला __________ पिनकोड __________

सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्म ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

नये डायमण्ड मिनी कॉमिक्स

लम्बू मोटू और कातिल कालूरा	3.00
ताऊजी और प्रेत बाला	3.00
चाचा भतीजा और तीसरी आंख	3.00
मोटू छोटू और टाईम मशीन	3.00

पारिवारिक फिल्म पत्रिका

मूवी चित्रहार

अंक 146

चटपटे फिल्मी समाचार

छोटे पर्दे पर बड़े कलाकारों का बोलबाला

महिलाओं की अपनी पत्रिका

गृहलक्ष्मी

अंक 51

स्त्री रोग विशेषांक

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. X-30 ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेस-2 नई दिल्ली-110020


Hamdard
आह !
क्या
ताज़गी
शरबत
रूह अफ़ज़ा
कुछ चीजें कभी नहीं बदलतीं

आओ बात करें

यह चंदन वन किसका है ? इसके बीच में अमृत से भरा यह सरोवर— शायद इसे झील कहना ठीक रहेगा। लहरें उठ-गिर रही हैं। लगता है, न जाने कितने सूरज इनमें डुबकियां खा रहे हैं। आसपास नहीं, दूर-दूर तक रंग-बिरंगे फूलों के गलीचे बिछे हैं। तैरते हुए हंस-जिनके सफेद पंख ऐसे हैं मानो बर्फ से बने हों। सांझ होती है तो यहां बहुत तेज हवा चलने लगती है। ये हंस ही परियां बन जाते हैं। रुनझुन-रुनझुन शुरू हो जाती है। मोतियों में ढला परी-महल उभर आता है जो दिन के उजाले में दिखाई ही नहीं देता।

रात में परी-महल झिलमिल-झिलमिल कर रहा था। उसके ऊपर चांद जैसा दीपक जगर-मगर किया करता। इस दीपक को न कोई जलाता, न बुझाता। परियां अपनी सुध-बुध खो देतीं-नाचतीं, गातीं, मोद मनातीं। उस रात भी वैसा ही उत्सव था। परी रानी आ गई। परियां किस्से-कहानी सुनाने लगीं। अधिकतर किस्से ऐसे जिन पर कोई विश्वास ही न करे। लेकिन अविश्वास तो इंसान किया करते हैं न। वहां जो कुछ कहा जाता—सब सच-सच होता, सच के सिवा कुछ नहीं।

हां, कभी कोई परी गड़बड़ करती तो उसे चंदन वन छोड़ना पड़ता। रिबन जैसी रंगीन बेलों से फिसलकर वह परी धरती पर आ जाती।

उस रात परी-महल का चंदा जैसा दीपक अचानक बुझ गया। चारों ओर घुप्प अंधेरा हो गया। केवल परी-रानी की मणियां जुगनुओं जैसी चमक रही थीं। परियों को लगा शायद काल-राक्षस आ गया। वे महल में भीतर को दौड़ीं। कुछ हंस बन गईं और छप्प-छप्प करके झील में कूद गईं। लेकिन राक्षस कहां आया था ! किसी परी के साथ एक बालक जरूर आ गया था। खेलते-खेलते उसने दीपक को बांहों में भर लिया। अंधेरा तो होना ही था तब।

देर तक कोई हड़बड़ी नहीं हुई, चीख-पुकार नहीं मची। तब परियों की जान में जान आई। धीरे-धीरे



उन्होंने ताक-झांक शुरू की। आखिर उस बालक पर निगाह गई। अरे, यह कहां से आ टपका यहां ? कौन लाया इसे, क्यों लाया—मृगनयनी ले आई थी उसे। परी-रानी के सामने पूरा किस्सा मृगनयनी ने सुनाया। वह बालक कहां मिला। उसकी गोद में सो गया तो सो गया। उठकर ही न दे। बेचारी मृगनयनी को लौटना था चंदनवन। बस, ले आई उसे भी अपने साथ।

उस रात तो रंग में भंग हो गया लेकिन अब बालक का क्या हो ? सवेरे की किरणें झांकने लगतीं तो फिर उसे वहीं रखना पड़ता।

तुरंत रथ तैयार किया। हंस बनी परियों ने उस रथ को खींचा और लेकर उड़ चलीं। पलक झपकते वे उस पहाड़ी गांव में पहुंच गईं। बालक को रथ से उतारा। उसके पास ढेर सारे उपहार रखे और रथ वापसी उड़ान भर छूमंतर।

कई गांव वाले मुंह अंधेरे ही उठ जाते थे। उनमें से किसी ने रथ को जाते देख लिया। उसने सब तरफ खबर फैला दी कि गांव में उड़नतश्तरी उतरी थी। हां, वह लड़का इस बारे में दूसरे संगी-साथियों को बताया करता, पर कौन उसकी बात पर विश्वास करता।

बहुत-सी परी कथाओं को भी लोग बेपर की मानते हैं, लेकिन इनमें सच्चाई और अच्छाई छिपी रहती है। यह विशेषांक रोचक कथाओं के साथ तुम्हारे हाथों में है। लिखना, कैसा लगा ?

—तुम्हारे भइया

जयप्रकाश भारती

परी-कथा विशेषांक

नंदन

जुलाई '९५
वर्ष : ३१ अंक : ९

संम्पादक
जयप्रकाश भारती





कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : राजेन्द्रकुमार वधवा

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार : चित्रकार : नारायण

बज उठे घुंघरू

—श्रीनिवास वत्स

दूर तक फैले रेगिस्तान में कहीं-कहीं पानी के पोखर थे। इन्हीं के आस-पास चालीस-पचास घरों के छोटे-छोटे गांव बसे हुए थे। ऐसे ही एक गांव में सेठ जौहरीमल का मकान था। उनके बाप-दादा कभी इस मकान में रहते थे। जौहरीमल गांव छोड़कर शहर में जा बसे, क्योंकि वहां उनका व्यापार काफी बढ़ गया था। अब वह विदेशों में सामान ले जाते, उसे बेचकर धन कमाते। वापसी में वहां से माल भरकर इधर बेच देते।

सेठ जी पूरे साल व्यापार के काम में ही उलझे रहते, पर उन्होंने एक नियम बना रखा था। कार्तिक मास में अपने गांव अवश्य आते थे। इस महीने में दीपावली का त्योहार होता है। जौहरीमल अपने पैतृक घर में आकर लक्ष्मीजी की पूजा करते थे।

इस प्रकार हर साल वह एक माह के लिए गांव आ जाते। गांव वाले उनके आगमन पर बहुत खुश होते। सेठ जी थे भी बहुत उदार। मंदिर की मरम्मत करवाते। पोखर की मिट्टी हटवाते। गांव के गरीब लोगों को अन्न-वस्त्र आदि दान देते थे।

एक बार व्यापार का कामकाज निबटाने के बाद जौहरीमल गांव के लिए चले। उनके साथ उनकी पत्नी शांति, पुत्र श्यामलाल और दो नौकर भी थे। सेठ जी अपने ऊंट पर सवार होकर सबसे आगे चल रहे थे। श्यामलाल अपनी मां के साथ एक ऊंट पर बैठा था। दो ऊंटों पर सामान लदा था, जिन्हें नौकर हांक रहे थे।

वे अभी लगभग बीस कोस ही चल पाए थे कि अचानक तेज आंधी चलने लगी। उन्होंने अपने ऊंट बैठा दिए और उनकी ओट लेकर खुद भी बैठ गए। काफी समय बीत गया। आंधी रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। देखते-देखते संध्या घिर आई। फिर कुछ देर बाद आंधी भी रुक गई। रात को चलना ठीक न जान, उन्होंने वहीं रुकने का निश्चय किया। जौहरीमल ने देखा, कुछ दूरी पर पेड़ों का एक



झुरमुट-सा है। वहां अवश्य पानी भी होगा, यही सोचकर वे सब वहां पहुंच गए।

उन्होंने सामान उतारकर ऊंटों को पेड़ों से बांध दिया। फिर भोजन आदि का प्रबंध करने लगे।

अचानक रेत के एक टीले के पीछे से दस-पंद्रह आदमी निकलकर आ गए। उनके हाथों में हथियार थे। उन्हें देखते ही जौहरीमल समझ गए कि ये डाकू हैं। विरोध करने से कोई लाभ नहीं है।

डाकू सरदार गरजकर बोला—"तुम्हारे पास जो भी सामान है, हमारे हवाले कर दो।"

शांति ने गिड़गिड़ाते हुए कहा—"भाइयो! यह

सारा सामान हम लक्ष्मीपूजा के लिए गांव ले जा रहे हैं । पूजा के बाद इसे गांव के गरीबों को दान करना है । तुम इसे छीन लोगे, तो बेचारे गरीबों का दिल टूट जाएगा ।''

डाकू सरदार हंसने लगा । बोला—''हमने यह झुरमुट इसीलिए चुना है कि राह चलते मुसाफिर यहां रुकेंगे । हम उन्हें लूट लेंगे । अब देर मत करो, वरना हम तुम्हें मार डालेंगे ।''

उनकी बात सुनकर जौहरीमल और शांति चुप हो गए । परंतु नौकरों ने विरोध करना चाहा । सरदार डाकू को गुस्सा आ गया । उसने अपने लोगों से कहा—''इन सबको पेड़ों से बांध दो । खुद ही भूखे-प्यासे मर जाएंगे । सारा सामान इन्हीं के ऊंटों पर लाद लो । अच्छा है, हमें ऊंट भी मिल गए ।''

बाकी डाकुओं ने वैसा ही किया । जौहरीमल, शांति, श्यामलाल और नौकरों को उन्होंने पेड़ों से बांध दिया, फिर सारा सामान ऊंटों पर लादकर रफूचक्कर हो गए ।

श्यामलाल का भूख के मारे बुरा हाल था । परंतु उसके माता-पिता भी लाचार थे । पेड़ों से बंधे होने के कारण वे एक-दूसरे को देखकर केवल आंसू ही बहा सकते थे ।

रोते-रोते श्यामलाल को नींद आ गई । वह पेड़ के सहारे सिर टिकाकर सो गया । थोड़ी देर बाद दूसरे लोगों की भी आंख लग गई ।



अचानक घुंघरुओं की हल्की-सी आवाज सुनकर श्यामलाल की नींद खुली । उसके माता-पिता और नौकर अभी भी सो रहे थे । श्यामलाल ने देखा, पेड़ों की ओट में कोई नाच रहा है । वह एकटक देखता रहा ।

'अरे ! ये तो एक नहीं, कई हैं ।'—श्यामलाल मन ही मन बुदबुदा उठा ।

घुंघरुओं का स्वर धीरे-धीरे उसके समीप आता जा रहा था । पास आने पर श्यामलाल ने देखा– उनके तो पंख भी हैं । फिर तो जरूर ये परियां ही हैं । उसने आंखें बंदकर लीं, ताकि परियां यह न समझें कि वह जाग रहा है । पर अधमुंदी आंखों से वह उन्हें देखता रहा ।

चांदनी रात में परियां झुरमुटों के आसपास नृत्य करने लगीं । अचानक एक नन्ही परी का ध्यान उस पेड़ की तरफ गया, जहां जौहरीमल बंधे हुए थे । उसने अपनी सखी से कहा—''यहां तो किसी आदमी को पेड़ से बांध रखा है ।''

उसकी सहेली ने दूसरे पेड़ की तरफ देखा । वह भी बोल पड़ी—''उधर देखो, एक स्त्री भी बंधी हुई है ।''

इतनी देर में दूसरी परियां भी वहां आ गईं । नन्ही परी ने उन्हें भी बताया । बस, फिर तो परियों ने सबको देख लिया ।

रानी परी ने कहा—''ये तो मनुष्य हैं । हमें इनसे क्या ! चलो, हम उधर चलकर अपना नृत्य करें और नाचें-गाएं ।''

रानी की बात सुन, नन्ही परी उदास हो गई । रानी ने पूछा—''अरी, तुझे क्या हो गया ?''

नन्ही परी बोली—''रानी मां, जरूर ये लोग मुसीबत में हैं । हमें इन्हें खोल देना चाहिए । उस प्यारे बच्चे को देखो । बेचारा कैसे ऊंघ रहा है ।''

रानी ने कहा—''खुलने पर ये आदमी हमें नुकसान पहुंचा सकते हैं । अगर इन्होंने हमारे पंखों को छू लिया, तो वे घायल हो जाएंगे ।''

नन्ही परी की आंखों में आंसू आ गए । रानी से

उसके आंसू देखे न गए । बोली—"अच्छा बेटी, रो मत । हम धीरे-धीरे इनको खोल देंगे । इन्हें पता भी नहीं चलेगा । फिर इनके जागनेसे पहले ही हम यहां से दूर चली जाएंगी ।"

"ठीक है ।"—नन्ही परी ने खुश होकर कहा ।

सब परियों ने मिलकर उनकी रस्सियां खोल दीं । नन्ही परी श्यामलाल की रस्सी खोलने लगी ।

जौहरीमल, शांति और नौकर अभी भी सो रहे थे । श्यामलाल सोने का बहाना किए हुए था । नन्ही परी का स्पर्श उसे बहुत अच्छा लग रहा था । जी में आया, उससे बात करे परंतु वह चुप रहा । उसे भय था, कहीं उसके बोलते ही परियां उड़ न जाएं ।

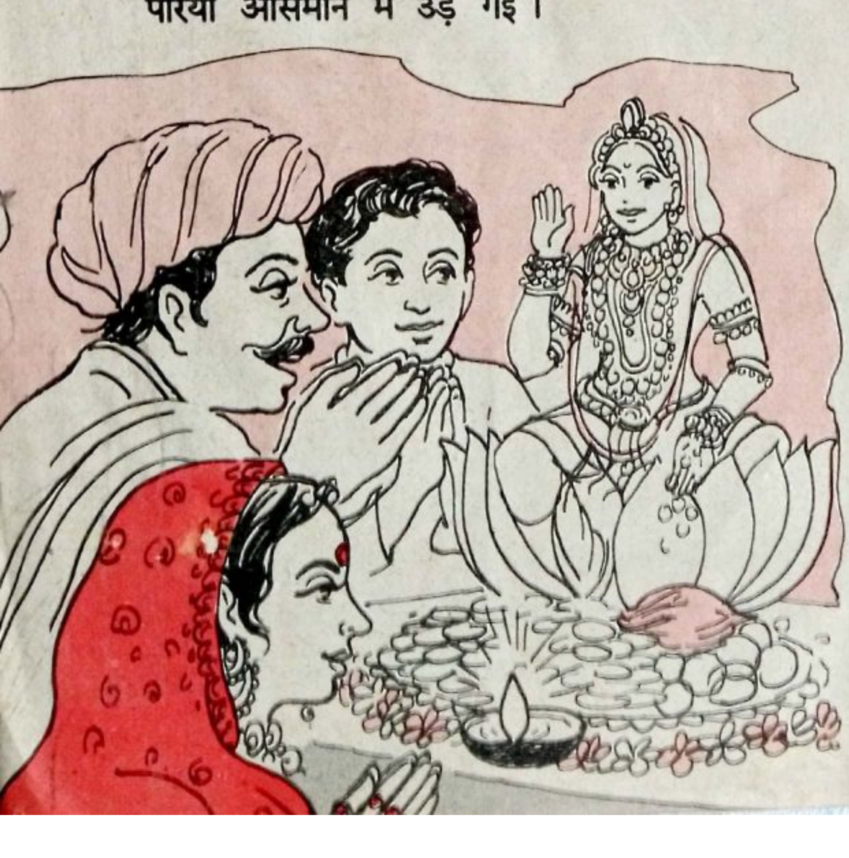
सबकी रस्सियां खुल जाने पर रानी परी बोली—"चलो, अब हमने अपना कार्य कर दिया ।"

परियां जाने लगीं । श्यामलाल ने चुपके से नन्ही परी को शुक्रिया कहा ।

"अरे ! तुम तो जाग रहे थे ।"—नन्ही परी छिटककर दूर खड़ी हो गई ।

—"हां, जाग रहा था । तुम बहुत अच्छी हो । मैं तुम्हें कभी भुला नहीं पाऊंगा ।"

नन्ही परी कुछ कहती, इससे पहले ही रानी मां ने उसे अपने करीब बुला लिया । देखते-देखते सब परियां आसमान में उड़ गईं ।



श्यामलाल ने अपने माता-पिता को जगाया । वे चौंककर उठे । जौहरीमल ने हैरान होकर पूछा—"हमारी रस्सियां किसने खोल दीं ?"

श्यामलाल बोला—"बाबूजी, अभी कुछ देर पहले यहां परियां आईं थीं । उन्होंने ही हमारी रस्सियां खोली हैं ।"

शांति और जौहरीमल को विश्वास नहीं हो रहा था ।

थोड़ी देर बाद सुबह का उजाला फैलने लगा । सेठ जी ने कहा—"चलो, अब पैदल ही गांव चलें । ढोने को हमारे पास कोई सामान भी नहीं बचा है ।"

वे सब गांव की ओर चल पड़े । कुछ दूर चलने पर उन्हें ग्राम वासी उधर ही आते दिखाई दिए । उन लोगों के हाथों में लाठियां और भाले थे ।

थोड़ी देर में वे सब उनके निकट पहुंच गए । सेठ जी को देखते ही मुखिया ने प्रणाम किया । पूछा—"आप कुशल से तो हैं ?"

जौहरीमल को आश्चर्य हुआ —'इन्हें हमारी मुसीबत का पता कैसे चला ?'

उन्होंने मुखिया से पूछा—"तुम्हें कैसे पता लगा कि हम संकट में हैं ?"

मुखिया ने कहा—"रात को सामान से लदे कई ऊंट भागते हुए आए और आपके घर के पास खड़े हो गए । हमने समझा, आप आए हैं । पर जब आप कहीं दिखाई नहीं दिए, तो मैंने गांव वालों से कहा कि सेठ जी के ऊंट उनका घर जानते हैं । जरूर उन पर कोई संकट आया होगा, इसीलिए ये दौड़कर यहां आ खड़े हुए हैं ।"

जौहरीमल ने रात वाली पूरी घटना उन्हें सुनाई । सब हैरान रह गए ।

मुखिया बोला—"सेठ जी, आपके ऊंट वफादार निकले । डाकुओं से नकेल की रस्सी छुड़ाकर सीधे घर भाग आए ।"

नन्हा श्यामलाल एक तरफ खड़ा सोच रहा था—'शायद इसमें भी परियों का ही हाथ है !'

घर आकर जौहरीमल ने ऊंटों की पीठ थपथपाई । फिर उन्होंने धूमधाम से लक्ष्मी पूजा की । ●

परियों का डाकघर



सौजन्य : स्टाम्प कार्नर

जाल में कौन

— कविराज ओमप्रकाश

एक था राक्षस— त्रिकराल और विशाल। उसका नाम था कालक। जैसा शरीर वैसा मन। हर समय दूसरों को तकलीफ पहुंचाने में आनंद आता उसे। रहता था घने वन की घोर अंधेरी गुफा में। कालक को अंधेरा और उजाड़ ही पसंद थे। वह दिन में सोता था और अंधेरा होते ही निकल पड़ता उत्पात मचाने।

कालक को देख, जंगल में खामोशी छा गई। रात को घूमने वाले पशु इधर-उधर दुबक गए। वह धम धम करता चला जा रहा था, एकाएक उसके कदम ठिठक गए। उसकी नाक में फूलों की गंध आई थी।

कालक को फूल अच्छे नहीं लगते थे। फूलों की सुगंध से उसका सिर चकराने लगता था। कालक फूलों से दूर भागता था। उसे मालूम था रात में परियां आकाश से उतरती हैं। वे जहां भी जाती हैं, वहीं विचित्र सुगंध वाले असंख्य फूल खिल उठते हैं। अतः कालक फूलों और परियों से नफरत करता था।

सच तो यह था कि उसे परियों से डर भी लगता था। सोचता था— 'अपने जादू से परियां न जाने क्या गड़बड़ कर दें।' इसीलिए वह चौकन्ना रहता था। जहां कहीं फूल खिले देखता, अपने बेडौल हाथों से उखाड़कर उन्हें फेंक देता। उसे पता था, फूलों के न रहने से परियों का मन दुखी होगा। दूसरों के दुःख में अपने लिए आनंद ढूंढ़ता था कालक।

फूलों की क्यारियों को रौंदता, इधर-उधर पत्थर फेंकता, गुर्राता कालक गांव की सीमा में आ गया। वह अंधेरे में छिप गया। अब वह दिखाई नहीं दे रहा था। उसने देखा, एक मकान से हंसने और गाने-बजाने की आवाजें आ रही हैं। उस घर में एक बच्ची रहती थी तारा। नन्ही-मुन्नी गुड़िया जैसी। आज उसी तारा का जन्म दिन समारोह था।

कालक गुस्से में भर उठा। बड़बड़ाया— 'इनकी यह मजाल! मेरे रहते हुए यह हंसी-खुशी। मैं इन लोगों को मजा चखाता हूं।'' उसने जोर से फूंक मारी तो तेज हवा बहने लगी। पेड़ कांपने लगे। घरों में जलते दीपक बुझ गए। फिर कालक ने पैर की ठोकर से मकान की दीवार गिरा दी। तारा के समारोह में आए मेहमान चीखने लगे, घबराकर भाग चले। बहुत से लोग मलबे के नीचे दब गए। यह देख कालक जोर से हंसा और आगे चल दिया। वह खुश था।



अंधेरा गहरा हो गया। सब तरफ कराहें गूंज रही थीं। तभी जोर से बिजली कड़क उठी। फिर शुरू हो गई तूफानी बारिश। सब तरफ पानी भरता जा रहा था। एक हंसता-खिलखिलाता समारोह जैसे मौत के सन्नाटे में बदल गया था।

परियों की एक टोली आकाश से उतरी—हंसती हुई, चारों ओर भीनी-भीनी सुगंध वाले फूल खिलाती हुई। वे आज तारा के जन्म दिन समारोह के लिए परीलोक में खिलने वाले फूलों का विशेष गुलदस्ता बनाकर लाई थीं। लेकिन तारा के घर के पास पहुंच परियां सन्न रह गईं। वहां का दृश्य दिल दहला देने वाला था। कुछ पल चुप खड़ी देखती रहीं। उन्हें सारी बात समझने में देर न लगी। एक परी ने हाथ हिलाया तो वहां का दृश्य एकदम बदल गया। सब कुछ वैसा ही हो गया, जैसा कालक के उत्पात मचाने से पहले था। रोशनी फैल गई। हंसी-खुशी, नाच-गाने की आवाजें गूंजने लगीं।

परियों ने गुलदस्ते का विशेष उपहार देने का अनोखा ढंग निकाला। एक परी हंस बन गई। हंस ने उस गुलदस्ते को तारा के पास पहुंचा दिया, फिर परियां वहां से चल दीं। वे खुश थीं। लेकिन उन्हें कालक पर क्रोध भी आ रहा था। एक परी ने कहा—"आखिर यह कालक ऐसा क्यों करता है! मुसकानों को मिटा कर यह दुःख का अंधेरा क्यों फैला देता है?"

"हमें इस दुष्ट के लिए कुछ उपाय तो करना होगा।"—दूसरी परी बोली।

"नहीं तो यह राक्षस भोले-भाले लोगों को ऐसे ही दुखी करता रहेगा।"-परियां कालक के बारे में यह सब सोच रही थीं। उन्हें क्या पता था कि कालक खुद उनके लिए भी मुसीबत बनने जा रहा है।

इससे अगली रात कालक राक्षस फिर अपनी गुफा से निकला। उसने नन्ही-मुन्नी तारा का घर सही-सलामत देखा तो हैरान रह गया। फिर क्रोध से इधर-उधर देखने लगा। आखिर उसे चुनौती किसने दी थी? कौन था वह जो उसके मिटाए हुए को फिर



से बनाने का साहस दिखा रहा था। ज्यादा देर सोचना नहीं पड़ा। तारा के पास रखे परीलोक के फूलों की सुगंध ने कालक को सब कुछ बता दिया।

"मैं इन परियों को ऐसा पाठ पढ़ाऊंगा कि उनका धरती पर आना बंद हो जाएगा।"—इस तरह बड़बड़ाता, गुर्राता कालक रात भर घूमता रहा। लगता था जैसे कहीं बादल गरज रहे हों। कालक ने उपाय सोच लिया। उसकी गुफा में बड़ी-बड़ी विषैली मकड़ियां थीं। वह मकड़ियों को पकड़ लाया। उसे पता था, रात को परियां जंगल में कहां उतरती हैं। बस, वहीं उन विशाल, विषैली मकड़ियों को छोड़ दिया। मकड़ियों ने वहां अदृश्य जाले बुन दिए, जो बहुत मजबूत और मायावी थे। इसके बाद कालक अंधेरे का हिस्सा बनकर एक तरफ छिप गया। वह परियों को बेबस देखना चाहता था।

परियां आकाश से उतरीं। दिव्य फूलों की सुगंध धीरे-धीरे सब तरफ फैलने लगी। कालक का सिर चकराने लगा, लेकिन आज वह इन फूलों की सुगंध

को बरदाश्त करने को तैयार था क्योंकि परियों को जाल में बंद जो करना था—ऐसा मजबूत जाल जो दिखाई नहीं दे रहा था।

परियां गांव की ओर बढ़ीं, तारा से मिलने के लिए, लेकिन वे कहीं न जा सकीं। कालक की मकड़ियों द्वारा बुने गए अदृश्य जाल में फंस गईं।

परियों को जाल में बेबस देखकर कालक प्रकट हो गया। जोर-जोर से हंसने लगा, पागलों की तरह नाचने लगा। पूरा जंगल कांप उठा। पहाड़ से शिलाएं लुढ़कने लगीं। जंगल से लगी बस्तियों के निवासी डर से अधमरे हो गए। किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

—"देखा, कालक का कमाल! अब देखता हूं तुम्हें कौन बचाता है। हा... हा... हा...! अब परियों के दिन गए। पड़ी रहो इस मजबूत जाल में—तड़पती रहो।"

जाल में कैद परियां बेबस थीं। आज कालक की चाल काम कर गई थी। ऐसा तो उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। 'क्या हम सदा के लिए इसी जाल में कैद हो गई हैं।'-परियां एक ही बात सोच रही थीं। उन्हें दुःख हो रहा था कि अब कालक की शरारतें बढ़ जाएंगी, उस इलाके में रहने वाले नई-नई मुसीबतों से घिर जाएंगे।



तभी वन में ढोल बजा, फिर बांसुरी बज उठी। लगा जैसे पत्ते-पत्ते से संगीत फूट रहा हो। परियों को कैद करके हंसते कालक के चारों ओर फूल खिल उठे। उनकी सुगंध से कालक को चक्कर आने लगा। वह घबराकर फूलों की सुगंध से और फूलों से दूर भागने लगा। लेकिन कहां जाता? हर तरफ तो फूल ही फूल थे, परी-लोक के दिव्य फूल।

धीरे-धीरे फूल दिव्य आभा से चमकने लगे—जैसे हर फूल के अंदर कोई दीपक जल उठा हो। फूल चमकने लगे और फिर हर फूल में एक लौ नजर आने लगी जो हर पल ऊंची होती जा रही थी। नन्ही-नन्ही असंख्य ज्वालाओं ने कालक को घेर लिया। आग का घेरा सिमटने लगा। कालक आग के घेरे में कैद हो गया था।

कालक घबराकर चीखता हुआ झील की तरफ भागा, पर उन अग्निशिखाओं ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। अब कालक उस ताप को सहन नहीं कर पा रहा था। वह चीख रहा था, इधर से उधर भाग रहा था, लेकिन बचने का कोई रास्ता नहीं बचा था। ज्वालाएं उसे झील की ओर धकेल रही थीं। आखिर कालक जोर से चीखकर झील में कूद पड़ा। तपन असह्य हो गई थी। बहुत जोर की आवाज हुई, फिर सब कुछ शांत हो गया। कालक दैत्य गहरी झील में डूबकर समाप्त हो गया।

कालक के झील में डूबते ही अदृश्य जाल छिन्न-भिन्न हो गया। परियां स्वतंत्र हो गईं। वे हैरान थीं, पर यह आश्चर्य अधिक देर तक नहीं रहा। उनके सामने परीलोक की महारानी खड़ी थीं। उन्होंने परियों को कालक के जाल में फंसते देख लिया था और ऊपर से ही अपना जादू चलाया। उसी जादू ने परास्त किया था कालक को, मारा था उसकी बुराई को। ●



सपने का सच

— डा. विजय अग्रवाल

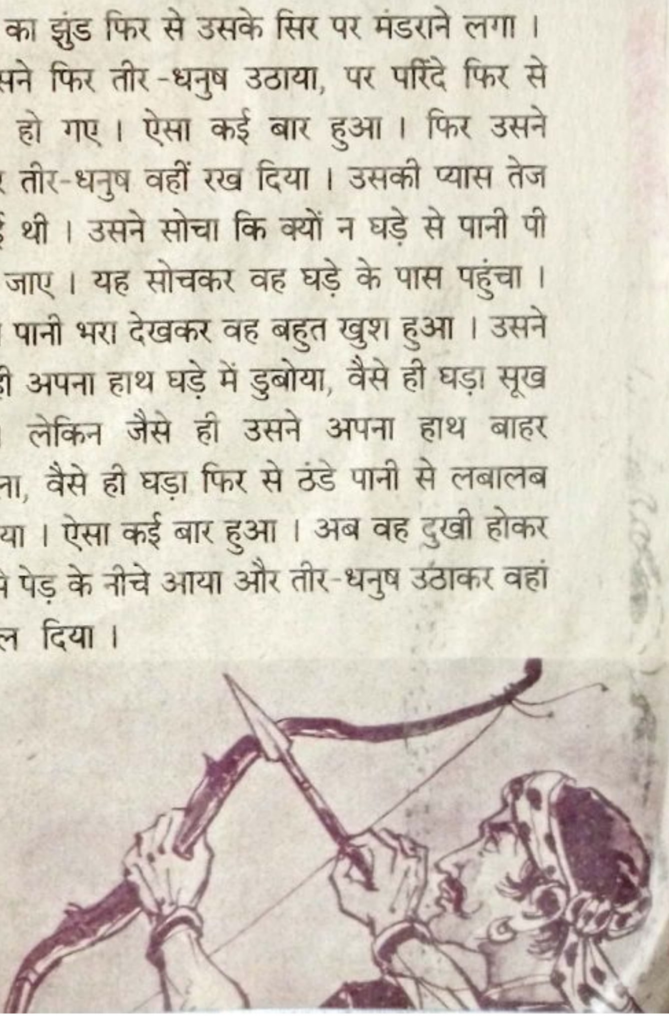
माधव नाम का नामी बहेलिया था। वह उड़ते हुए परिंदों को एक ही निशाने से मार गिराने में माहिर था। उसकी खासियत यह थी कि वह पशुओं को कभी नहीं मारता था। लोगों ने यहां तक देखा कि किसी जानवर की पीठ पर कोई छोटी-सी चिड़िया भी बैठी रहती, तो वह इस तरीके से निशाना साधकर उस चिड़िया को मार गिराता कि जानवर की पीठ पर खरोंच भी नहीं आती थी।

पास के ही जंगल में जानवर और पक्षियों के बीच माधव की खूब चर्चा रहती थी। जानवर उसे अपना दोस्त समझते थे, जबकि परिंदे उसे अपना दुश्मन। जैसे ही परिंदों को पता लगता कि वह वन की ओर आ रहा है, सब के सब कहीं न कहीं छिप जाते।

एक बार माधव के मन में यह बात आई कि वह तरह-तरह के पक्षी मारकर राजा को भेंट करेगा। यह सोचकर वह जंगल की ओर निकल पड़ा। लेकिन यह देखकर दंग रह गया कि उसे कोई पक्षी दिखाई ही नहीं दे रहा था। कई बार उसे अपने आस-पास पक्षियों की चहक सुनाई पड़ती, लेकिन जब वह नजर उठाकर देखता, तो उसे कोई पक्षी दिखाई न देता था। अंत में दोपहर हो गई। धूप तेज थी। उसे खूब प्यास लग आई। लेकिन आस-पास कहीं भी पानी का नामोनिशान नहीं दिखा। थक-हारकर वह एक पेड़ के नीचे लेट गया। जंगल में ठंडी-ठंडी हवा चली और उसे नींद आ गई।

नींद में उसे लगा, उसके सिर के ऊपर ढेर-सारे परिंदे मंडरा रहे हैं। साथ ही उसके चेहरे पर पानी के छींटे पड़ रहे हैं। वह बार-बार नींद में ही अपने चेहरे को पोंछने की कोशिश करता। लेकिन फिर से पानी के छींटे उसके चेहरे पर पड़ने लगते। इससे उसकी नींद में बाधा पड़ी। सपने में ही वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने देखा कि उसके चारों ओर ढेर-सारे परिंदे उड़ रहे हैं। पास में ही एक बहुत बड़ा घड़ा रखा है, जो पानी से भरा हुआ है। परिंदे बार-बार अपने पंखों को उस घड़े में डुबोते, और फड़फड़ाकर उड़ जाते। उसी के छींटे उसके चेहरे पर पड़ते। इतने सारे परिंदों को उड़ता देखकर वह खुश हो गया। लेकिन उसने जैसे ही परिंदों को मारने के लिए अपना निशाना साधा, तो वह यह देखकर दंग रह गया कि सारे परिंदे गायब हो गए। फिर उसने जैसे ही तीर-धनुष नीचे रखा, वैसे ही परिंदों का झुंड फिर से उसके सिर पर मंडराने लगा।

उसने फिर तीर-धनुष उठाया, पर परिंदे फिर से गायब हो गए। ऐसा कई बार हुआ। फिर उसने हारकर तीर-धनुष वहीं रख दिया। उसकी प्यास तेज हो गई थी। उसने सोचा कि क्यों न घड़े से पानी पी लिया जाए। यह सोचकर वह घड़े के पास पहुंचा। घड़े में पानी भरा देखकर वह बहुत खुश हुआ। उसने जैसे ही अपना हाथ घड़े में डुबोया, वैसे ही घड़ा सूख गया। लेकिन जैसे ही उसने अपना हाथ बाहर निकाला, वैसे ही घड़ा फिर से ठंडे पानी से लबालब भर गया। ऐसा कई बार हुआ। अब वह दुखी होकर फिर से पेड़ के नीचे आया और तीर-धनुष उठाकर वहां से चल दिया।



अभी माधव थोड़ी ही दूर गया था कि उसे झरने की आवाज सुनाई पड़ी। शीतल-स्वच्छ जल की कल्पना करके उसकी चाल में तेजी आ गई। थोड़ी ही दूर जाने पर उसने देखा कि झरना गिर रहा है। उसका पानी एक झील में इकट्ठा होता जा रहा है। उसे लगा कि अब उसकी समस्या सुलझ गई है।

यह सोचते-सोचते वह झील के नजदीक पहुंच गया। उसने कपड़े उतारे और झील में दाखिल हो गया। लेकिन यह क्या ? जैसे ही वह झील में घुसा, उसे ऐसा लगने लगा मानो वह दलदल में फंस गया हो। वह दलदल से निकलने के लिए जितनी अधिक कोशिश करता, उतना ही अधिक गहरे दलदल में फंसता जाता। धीरे-धीरे वह गर्दन तक दलदल में फंस गया। वह समझ गया कि अब बचने का कोई उपाय नहीं है। दलदल उसके मुंह तक आ गया था। इतने में ही उसने देखा कि उसके सिर पर बाज पक्षियों का झुंड मंडरा रहा है। बाज पक्षियों ने अपने मुंह में एक डंडा पकड़ रखा है। उसे लगा कि काश , वह डंडा उसकी पकड़ में आ जाता ! लेकिन यह क्या ! बाज पक्षियों का झुंड उसके हाथों के करीब आ गया।

डंडे को अपने नजदीक पाकर माधव ने पूरी ताकत से डंडे को पकड़ लिया। बाजों का झुंड अब पूरी ताकत से उस डंडे को मुंह में दबाए उड़ने लगा। देखते ही देखते माधव कीचड़ से बाहर आ गया। लेकिन जैसे ही वह जमीन पर आया, उसने देखा कि परिंदों का झुंड गायब हो गया है। उसने पास में ही रखा अपना तीर-धनुष हाथ में लिया कि शायद कोई बाज पक्षी दिखाई पड़ जाए। लेकिन किसी भी पक्षी को उड़ता हुआ न पाकर वह फिर से दुखी हो गया।

सहसा माधव ने कलकल की आवाज सुनी। उसे ऐसा लगा मानो कोई नदी बह रही है। लेकिन अब उसके शरीर में इतनी ताकत नहीं रह गई थी कि वह चलकर नदी के पास पहुंच पाता। उसका गला बुरी तरह सूखने लगा था। शरीर शिथिल पड़ चुका था। अब तो हाथों में भी इतनी ताकत नहीं रह गई थी कि



वह तीर-धनुष उठा सकता। ऐसी हालत में वह निराश होकर अपने सिर को घुटनों के बीच रखकर चुपचाप बैठ गया।

धीरे-धीरे कलकल की आवाज माधव के करीब आती जा रही है। उसने नजर उठाकर देखा तो पाया कि नदी बहती हुई उसकी ओर चली आ रही है। यह देखकर वह खुश हो गया कि शायद अब उसकी प्यास बुझ जाए। धीरे-धीरे नदी बिलकुल उसके पांव के करीब आ गई। लेकिन यह क्या ! उसने जैसे ही झुककर पानी पीना चाहा, वैसे ही नदी रेत में बदल गई। उसके चुल्लू में पानी की जगह रेत का ढेर आ गया। यह देखकर वह बुरी तरह झल्लाया और उसने अपनी मुट्ठी में भरे हुए रेत को गुस्से में आकर आकाश की ओर उछाल दिया। जैसे ही उसने रेत उछाला, वैसे ही वह पूरे आसमान में छा गया। इसके कारण तेज आंधी चलने लगी। पेड़-पौधे झूमने लगे। कहीं-कहीं डालें टूटकर गिरने लगीं। झरने और नदी के बहने की आवाज इतनी तेज हो गई, मानो तूफान आ रहा हो। चारों ओर रेत ही रेत फैल गया। माधव ने देखा कि तेज आंधी और तूफान के कारण सारे परिंदे परेशान होकर आकाश में उड़ने लगे। देखते ही देखते सारा आकाश सफेद और काले परिंदों से भर गया। यह

सब देखकर उसकी बेचैनी बढ़ गई। उसके मन में लालच आया कि इतने सारे परिंदे उड़ रहे हैं। क्यों न इनका शिकार कर लिया जाए! यह सोचकर उसने पास में रखा तीर-धनुष उठाया। निशाना साधने के लिए उसने जैसे ही अपनी आंखें खोलीं, वैसे ही उसकी आंखों में आंधी की रेत भर गई। तीर-धनुष उसके हाथों से छूट गया और वह तेजी से अपनी आंखें मलने लगा। जब वह बार-बार आंखें मलने लगा तो आंखों में तेज दर्द होने के कारण अचानक उसकी नींद खुल गई।

यह भयानक सपना देखकर वह बुरी तरह डर गया। उसकी सांसें तेज-तेज चलने लगी थीं। उसने अनुभव किया कि प्यास के मारे सचमुच उसका गला बुरी तरह सूख रहा है। समय का अनुमान लगाने के लिए उसने जैसे ही आसमान की ओर देखा, तो पाया कि ढेर सारे परिंदे पंख फैलाए हुए एक डाल पर बैठे हुए हैं और उनके पंखों की छाया उसके ऊपर पड़ रही है। अब उसे पता लगा कि वह जिस छाया में सोया हुआ था, वह पेड़ की छाया नहीं, बल्कि परिंदों के पंखों की छाया थी। इस बात से उसके मन में पीड़ा हुई। उसने सोचा —'मैंने अब तक जिन परिंदों का शिकार करके इतना नाम कमाया है, वे मुझे इतना अधिक प्यार करते हैं।' उसने अपनी बगल में रखा तीर-धनुष उठाया। यह देखते ही सारे परिंदे उड़ गए। उसने अपने तीर-धनुष के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और पास के ही गड्ढे में फेंक दिए।

यह देखकर जंगल के सारे परिंदे खुश हो गए। परिंदों का एक झुंड आया, और उसके चारों तरफ मंडरा-मंडरा कर चहकने लगे। कुछ परिंदों के पंखों से सचमुच उसके चेहरे पर पानी के छींटे पड़ रहे थे। परिंदे धीरे-धीरे उसके आगे-आगे उड़ने लगे, और वह उनके पीछे-पीछे चलने लगा। कुछ ही कदम चलने के बाद उसने देखा कि एक सुंदर-सी झील है, जिसमें परिंदे बार-बार गोता लगा रहे हैं। उसने झील से पानी पिया और फिर कभी परिंदों का शिकार न करने का फैसला करके अपने घर लौट आया। ●

अनोखा चित्रकार

—अमरनाथ शुक्ल

अवंतिका के राजा रिपुदमन बड़े ही प्रजापालक तथा वीर थे। उनके राज्य में प्रजा सुखी तथा संपन्न थी, पर उन्हें एक ही दुःख था कि वह निस्संतान थे।

कुछ दिनों बाद उनके नगर में एक संन्यासी पधारे। राजा ने संन्यासी की बड़ी सेवा की। संन्यासी ने देखा कि राजा के चेहरे पर हमेशा उदासी छाई रहती है। एक दिन संन्यासी ने राजा की उदासी का कारण पूछा, तो राजा ने बताया कि उनके निस्संतान होने के कारण राज्य का कोई उत्तराधिकारी नहीं है। उन्हें इसी का दुःख है।

संन्यासी ने कहा—"महाराज दुःखी न हों। आपकी प्रजा का पालन करने वाला एक सुयोग्य पुत्र आपके घर जन्म लेगा। मैं एक मंत्र-सिद्ध फल आपको देता हूं। आप इसे रानी को खिला दें।"

राजा ने वैसा ही किया। समय पाकर रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। नामकरण संस्कार के समय पंडितों ने विचार कर बताया—"यह राजपुत्र बहुत वीर, साहसी तथा सर्वगुण सम्पन्न होगा। इसका विवाह किसी परी देश की राजकुमारी से होने का योग है।"



और तो सब ठीक था, पर विवाह के बारे में सुनकर राजा को चिंता हुई कि वह परी देश न जाने कहां होगा और उसकी राजकुमारी कैसी होगी ?

राजकुमार धीरे-धीरे बड़ा होकर विवाह योग्य हो गया। एक दिन एक चित्रकार राजमहल में पहुंचा। उसने अपना बनाया एक चित्र राजकुमार को दिखाने की आज्ञा मांगी। राजा ने आज्ञा दे दी।

चित्रकार राजकुमार के कमरे में गया और राजकुमार से कहा—"राजकुमार, मैं एक चित्र बना कर लाया हूं। अगर आपको पसंद आ जाए तो उसकी कीमत जो भी मैं मांगूं, आपको देनी होगी।"

राजकुमार बोला—"कला अनमोल होती है। तुम चित्र दिखाओ। पसंद आने पर मुंहमांगा दाम और इनाम मिलेगा।"

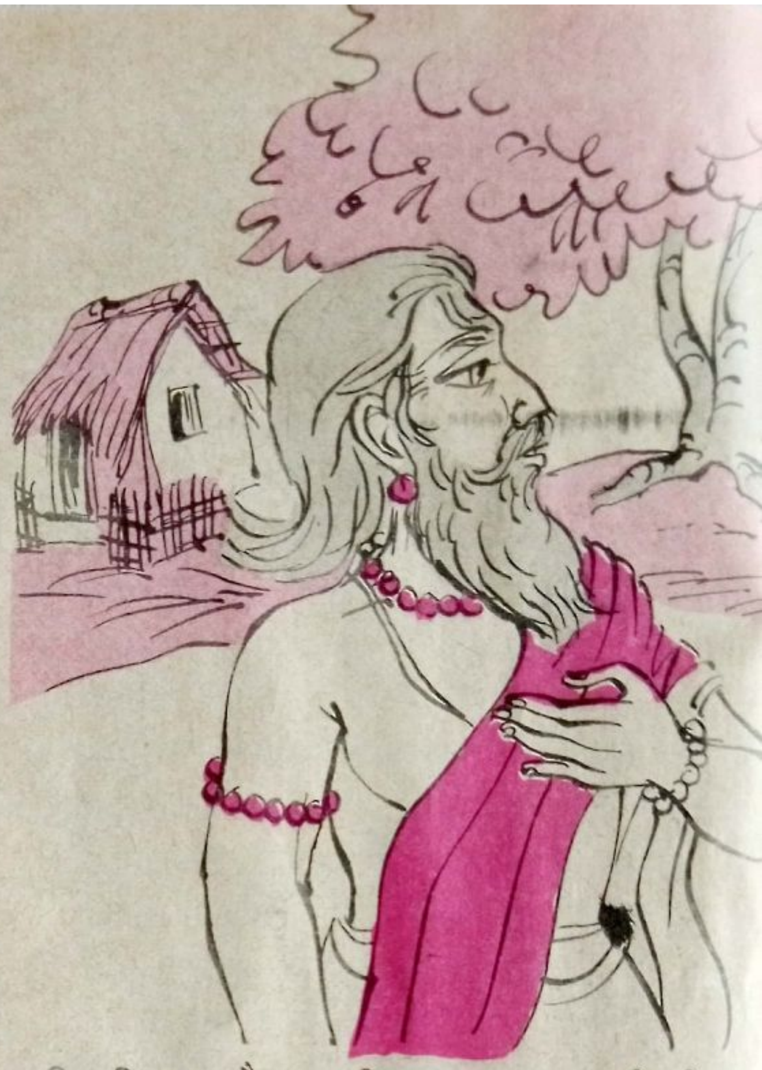
चित्रकार ने चित्र राजकुमार के सामने रखा। राजकुमार चित्र देखते ही दंग रह गया। उसने अपने को संभाला और कहा—"चित्रकार, यह चित्र तुमने अपनी कल्पना से नहीं बनाया। अवश्य ही यह किसी राजकुमारी का है। यह कौन है, कहां रहती है ? मैं इससे मिलना चाहता हूं।"

चित्रकार ने कहा—"राजकुमार, यह जलपरियों की रानी है। दूर समुद्र में पानी से घिरे एक छोटे से द्वीप परीदेश में यह रहती है। परीदेश पहुंचना बहुत कठिन है। अगर किसी तरह पहुंच भी गए, तो इस परी-राजकुमारी से मिल पाना तो असंभव ही है।"

राजकुमार ने कहा—"चित्रकार, तुम अपने इस चित्र का मुंहमांगा दाम लो और जाओ। मैं परीदेश तथा इस राजकुमारी को ढूंढ़ निकालूंगा और एक दिन इसे अपनी रानी बनाऊंगा।"

चित्रकार बोला—"राजकुमार, जब इतना ही पक्का इरादा है, तो मैं भी इस चित्र का मूल्य तब लूंगा, जब आप इस परी राजकुमारी से मिल लेंगे। थोड़ा मार्ग दर्शन मैं कर देता हूं। पश्चिम दिशा में चलते जाइए। समुद्र तट पर पहुंच कर आगे आपको परीदेश का मार्ग स्वयं खोजना होगा।"

चित्रकार चला गया। राजकुमार ने महाराजा को

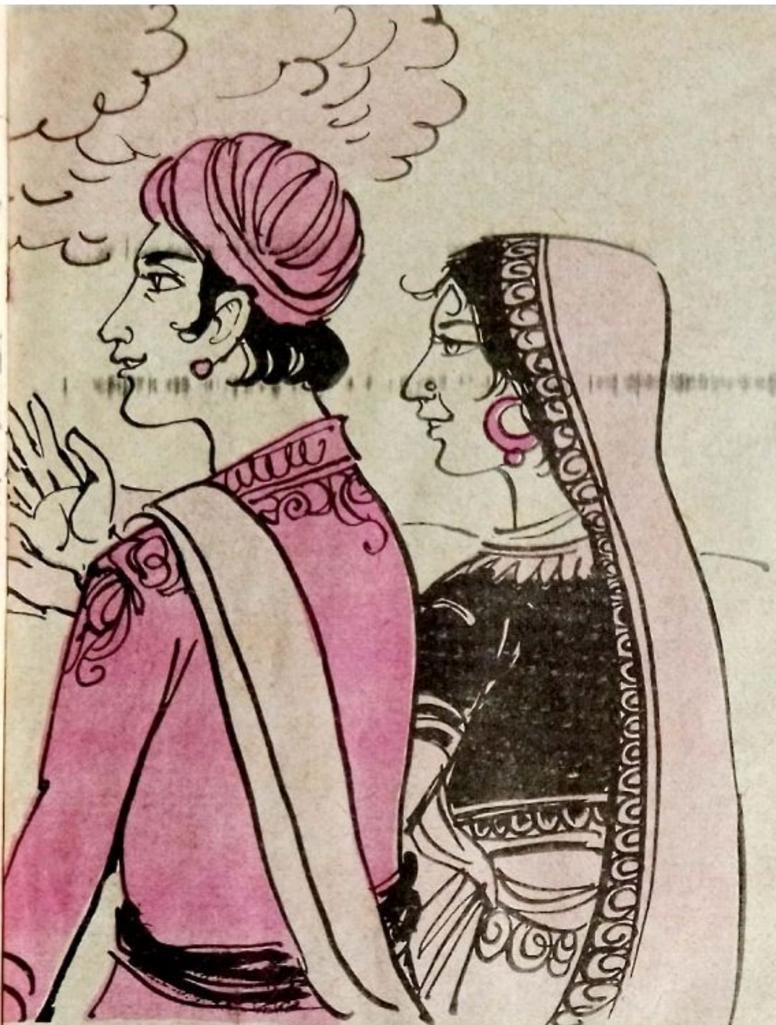


चित्र दिखाया और कहा कि वह इस राजकुमारी की खोज में परीदेश जाना चाहता है।

राजा को पंडितों की भविष्यवाणी याद आई कि राजकुमार की शादी किसी परी राजकुमारी से होगी। उन्होंने आज्ञा दे दी।

राजकुमार चल पड़ा। मैदान, नदी, पहाड़ पार करते हुए वह एक दिन समुद्रतट पर जा पहुंचा। वहां देखा कि एक महात्मा कुटिया के बाहर अकेले समाधि लगाए बैठे हैं। उनकी देखभाल के लिए कोई नहीं है। राजकुमार ने सोचा,समाधि टूटने तक महात्मा जी की देखभाल करनी चाहिए। वह रुक गया। दो दिन बाद जब महात्मा जी की समाधि टूटी, तो उन्होंने देखा कि एक राजकुमार जैसा युवक उनकी सेवा और देखभाल में लगा है। महात्मा बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने पूछा—"तुम इस निर्जन जंगल में अकेले कैसे और क्यों आए हो ?"

राजकुमार ने अपना परिचय देते हुए सारी बात बताई। महात्मा ने पूरी बात सुनकर कहा—"परीदेश तक पहुंचना बहुत कठिन है। अगर पहुंच भी गए तो



उसे ढूंढ़ रही थीं। उसने राजकुमारी की आंखों पर अपनी हथेली धर दी और कहा—"अब छुपा-छुपी का खेल खत्म। मैंने तुम्हें ढूंढ़ लिया है। मैं अवंतिका का राजकुमार तुम्हें अपनी रानी बनाऊंगा।"

राजकुमारी कुछ कहे, उससे पहले ही वह मंत्र शक्ति से राजकुमारी को लेकर आकाश मार्ग से उड़ चला। अंगूठी के प्रभाव से उसे किसी ने देखा भी नहीं।

राजकुमारी को लेकर वह समुद्र तट पर उसी महात्मा की कुटिया के पास पहुंचा। महात्मा को प्रणाम किया। महात्मा जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा—"तुम्हारा संकल्प सफल हुआ। तुम अपनी राजधानी जाओ और राजकुमारी के साथ ब्याह की तैयारी करो।"

राजकुमार ने हाथ जोड़कर कहा—"महात्मा जी, आप भी उस अवसर पर पधारें।"

महात्मा ने मुसकरा कर आने का वचन दिया। राजकुमार अवंतिका पहुंचा। राजा ने धूम-धाम से परी राजकुमारी से उसकी शादी कर दी। उत्सव मनाया जा रहा था कि महात्मा जी आ गए। वर-वधू ने महात्मा को प्रणाम किया। जब खड़े हुए, तो देखा, महात्मा की जगह वही चित्रकार खड़ा था।

राजकुमार को हैरान देखकर चित्रकार बोला—"राजकुमार, मैं देवराज इंद्र का चित्रकार हूं। एकबार इंद्र ने नाराज होकर शाप दे दिया कि तुम इंद्रलोक के चित्रकार होने योग्य नहीं हो। जाकर धरती पर चित्रकारी करो। जब मैंने शाप मुक्त होने का उपाय पूछा, तो उन्होंने बताया कि अगर परीदेश की राजकुमारी का विवाह तुम अवंतिका के राजकुमार से करा दोगे, तो शापमुक्त हो जाओगे। मैंने इस राजकुमारी का चित्र बनाया। समुद्रतट पर महात्मा के रूप में तुम्हें परीदेश पहुंचने में मदद की। आज जब तुम दोनों की शादी हो गई, तो मैं शाप मुक्त होकर इंद्रलोक जा रहा हूं। यही मेरे चित्र का मोल है।" राजकुमार हैरानी से यह सुन रहा था।

"आपको परी देश की राजकुमारी मिली, मुझे मेरा इंद्रलोक।"—कहता हुआ चित्रकार चला गया। ●

वापस आना और भी कठिन। पर तुम्हारे दृढ़ निश्चय को देखकर तथा तुमने जो मेरी सेवा की है, उसके कारण मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकता हूं। मैं तुम्हें एक सिद्ध मंत्र देता हूं। इससे तुम आकाश मार्ग से किसी भी मनचाहे स्थान पर जा सकते हो। यह मंत्र-सिद्ध अंगूठी जब तक पहने रहोगे, तुम सबकी नजर से अदृश्य रहोगे, पर तुम सबको देख सकोगे।"

राजकुमार ने महात्मा को प्रणाम किया। मंत्र पढ़ कर आकाश मार्ग से उड़ चला। अंगूठी के प्रभाव से वह सब कुछ देख सकता था, पर उसे कोई नहीं देख पाता था।

समुद्र के ऊपर उड़ते-उड़ते उसने देखा, जल से घिरा एक छोटा-सा द्वीप था। वह थोड़ा नीचे उतरा। देखा सुंदर द्वीप में सरोवर के तट पर परियों से घिरी एक राजकुमारी छुपा-छुपी का खेल खेल रही है। उसे चित्रकार के चित्र का ध्यान आया—'अरे, यह तो वही है।'

वह धीरे से अदृश्य रूप से उतरा। राजकुमारी एक पेड़ की ओट में छिपी बैठी थी। दूसरी सहेली परियां

छोटी बहू

— डा. वीरेंद्र शर्मा

एक परिवार में तीन बहुएं रहती थीं। उनमें आपस में बहुत प्यार था। वे सभी मेल-जोल से रहती थीं और सुखी थीं।

एक दिन सौभाग्य की देवी बड़ी बहू के पास आकर बोलीं— "प्यारी बेटी, मुझे किसी दूसरे स्थान पर जाना है। अतः जाने से पहले मैं चाहती हूं कि तुम्हारी सभी इच्छाएं पूरी करती जाऊं। बोलो, मैं तुम्हें क्या दूं?"

बड़ी बहू ने कहा— "ठीक है। जाने से पहले मुझे बहुत सारी सम्पत्ति दे दें।"

सौभाग्य की देवी ने बड़ी बहू को खूब सम्पत्ति दे दी। उसकी इच्छा पूरी हो गई। इसके बाद, देवी मंझली बहू के पास गई। देवी ने कहा— "अब मैं तुम्हें छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर चली जाऊंगी। चाहती हूं जाने से पहले तुम्हारी सब इच्छाएं पूरी कर दूं। बताओ तुम्हें क्या चाहिए?"

मंझली बहू ने कहा— "मुझे बहुत सारा धन दे दीजिए।"

देवी ने मंझली बहू को उसकी इच्छा के अनुसार खूब धन दे दिया। अब देवी छोटी बहू के पास गई। उससे भी उन्होंने वही बातें कहीं, जो दोनों बड़ी बहुओं से कही थीं।

छोटी बहू ने भारी मन से कहा— "बड़े ही दुःख की बात है, कि आप यहां से जा रही हैं। मुझे न तो सोना चाहिए और न ही चांदी। मुझे और भी कोई सम्पत्ति नहीं चाहिए। यदि आप मुझे कुछ देना ही चाहती हैं, तो मुझे अच्छा स्वास्थ्य दीजिए। सबके प्रति मित्रता की भावना दीजिए। ये दोनों बातें हों, तो शेष सब कुछ तो हम अपने आप प्राप्त कर लेंगे।"

सौभाग्य की देवी ने प्रसन्न होकर उत्तर दिया— "यदि तुम्हारे इतने अच्छे विचार हैं, तो अब मैं और किसी दूसरी जगह नहीं जाऊंगी। मैं हमेशा के लिए तुम्हारे साथ, तुम्हारे घर में ही रहूंगी।"

बड़ी और मंझली बहुओं की धन-सम्पत्ति धीरे-धीरे समाप्त हो गई। उन्हें बार-बार छोटी बहू से सहायता लेनी पड़ती थी। छोटी बहू उन्हें कभी किसी चीज के लिए मना नहीं करती थी।

(तुर्कमिनिस्तान की लोक कथा)



आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय : **१५ मिनट ।**







कहानी लिखो : १४०

☐ सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए । उसे १५ जुलाई '९५ तक कहानी लिखो, नंदन मासिक, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए । चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : सितम्बर '९५

चित्र-पहेली : १४०

☐ 'हमने नाटक खेला' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए, जो ६"×९" से बड़ा न हो । चित्र के पीछे अपना नाम, आयु और पता लिखिए । उसे १५ जुलाई '९५ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए । चुना गया चित्र नंदन में छपेगा । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : अक्तूबर '९५

राष्ट्रमंडल फ्री स्टाइल कुश्ती प्रतियोगिता (मेलबोर्न)

कुश्ती का करिश्मा

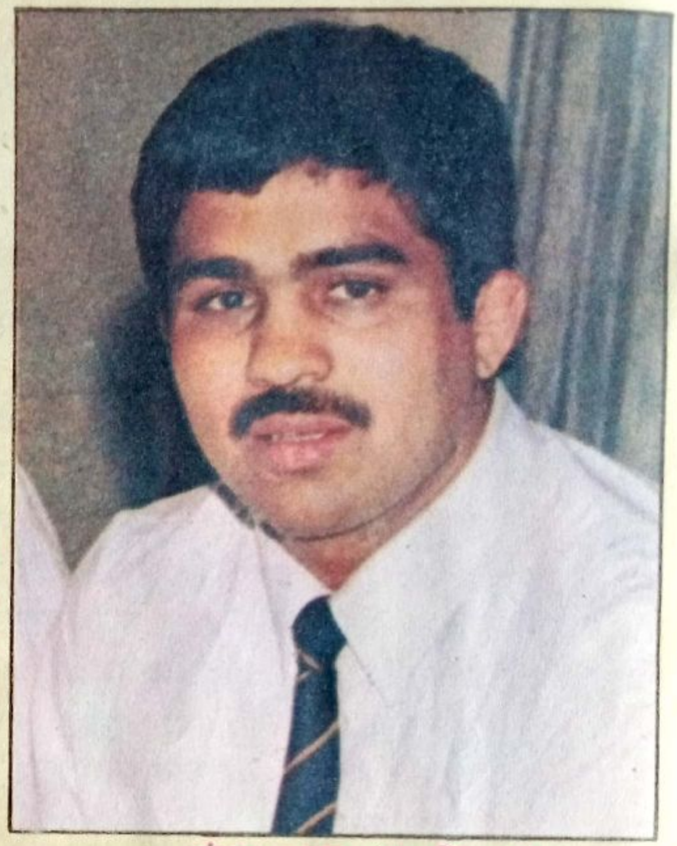
सोने के आठ पदक और...



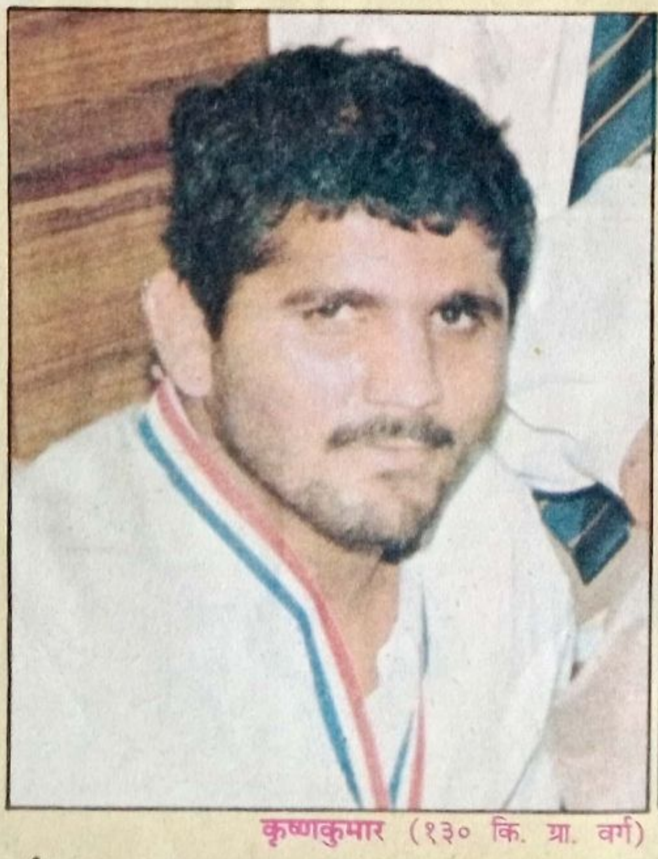
केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री माधवराव सिंधिया के साथ विजेता पहलवान



कुश्ती के द्रोणाचार्य गुरु हनुमान



संजय कुमार (९० कि. ग्रा.)

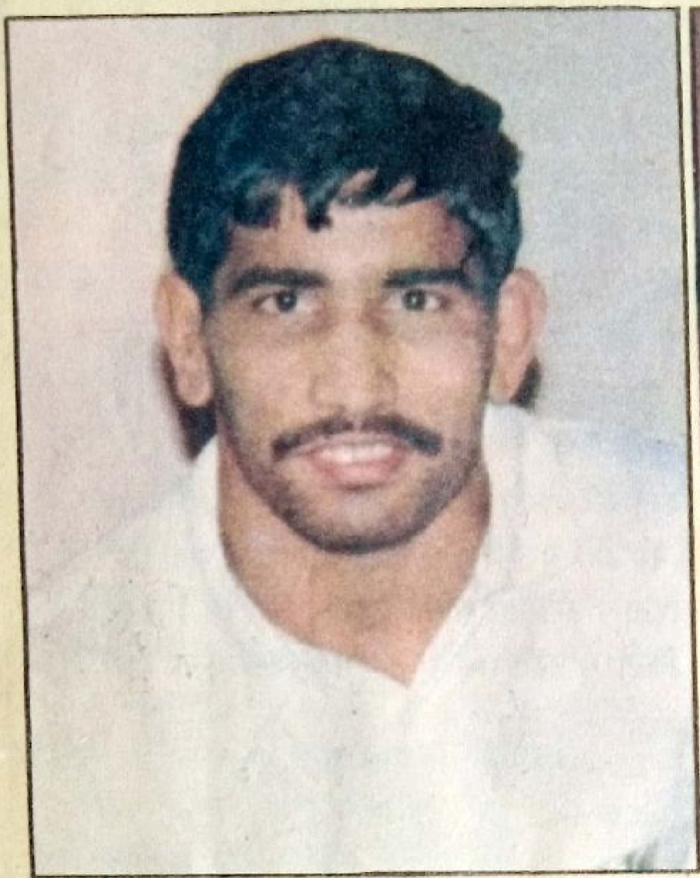


कृष्णकुमार (१३० कि. ग्रा. वर्ग)

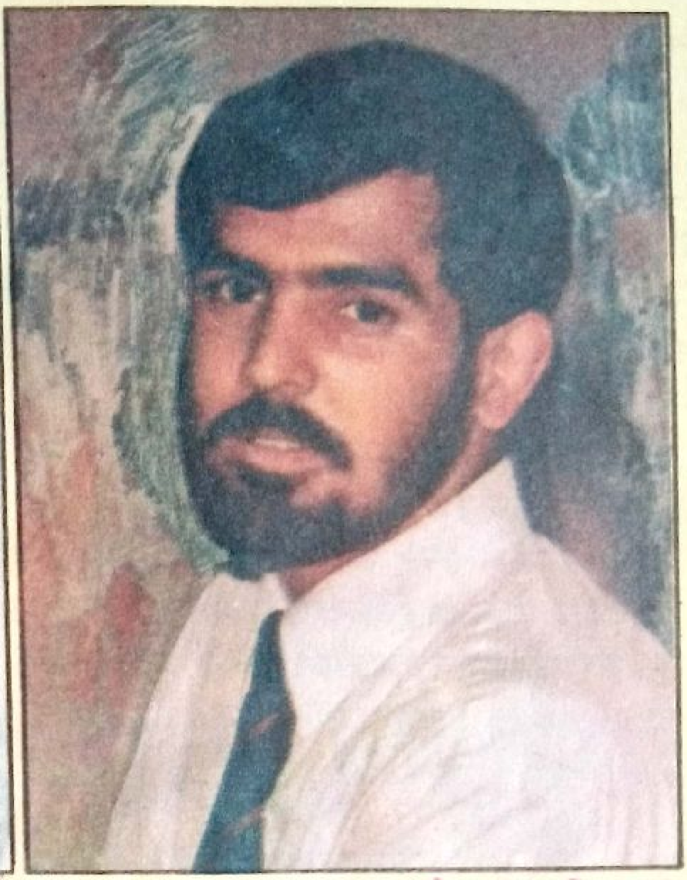


सुभाष वर्मा (१०० कि. ग्रा.)

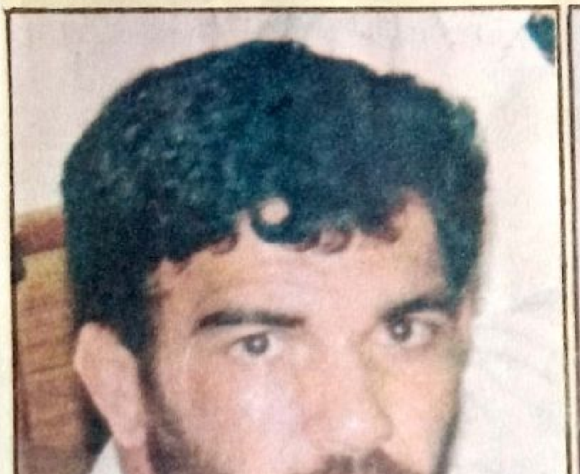
चित्र : जवाहर गोयल



कर्मवीर सिंह (६८ कि. ग्रा.)



नरेन्द्र (५२ कि. ग्रा.)



मुकेश कुमार (६२ कि. ग्रा.)



अशोक कुमार (५७ कि. ग्रा.)



जयभगवान (४८ कि. ग्रा.)

विश्व की महान कृतियां : अंग्रेजी

तीर की उड़ान

—आर. एल. स्टीवेंसन

रिचर्ड जब कमरे में आया तो घबरा उठा। बाहर अंधेरा था। किले की दीवारों पर सैनिकों की परछाइयां नजर आ रही थीं। किसी भी क्षण आक्रमण हो सकता था। तीरों की वर्षा से प्रहरी भयभीत थे।

आज सुबह जब उसे इस कमरे में रहने के लिए कहा गया, तो वह परेशान हो उठा था। अचानक ऐसा क्यों ? क्या सर डेनियल उसे खत्म कर देना चाहते हैं ? उसने आदेश लेकर आए सैनिक से इसका कारण पूछा था, परंतु उसने कुछ न बताया।

बचपन से ही वह अनाथ था। लोग कहते थे कि उसके पिता को धोखे से मार दिया गया था। मां थीं नहीं। बस, डेनियल उसका संरक्षक बन बैठा। सारी संपत्ति अपने नाम कर ली। रिचर्ड उसे निर्दोष समझता था, परंतु अब वह जान चुका था कि वास्तव में डेनियल ही अपराधी है। डेनियल उस इलाके का शासक था। वह लोगों की जमा-पूंजी छीन लेता। 'काला तीर' नामक गिरोह के विद्रोही उसके शत्रु बन गए। उनका निशाना अचूक होता। वे जंगलों में छिप कर रहते थे।

किले की दीवारें लाल पत्थरों से बनी थीं। चारों कोनों पर ऊंचे बुर्ज थे। नीचे गहरी खाई में सदा पानी भरा रहता। उसे पार करना आसान नहीं था। रिचर्ड इसी किले में रहता था। वह यहीं बढ़ा-पला था।



कुछ दिनों पहले केटले के युद्ध में डेनियल हार चुका था। किले में जब थोड़े से ही सैनिक बचे थे। इनमें भी कुछ घायल थे। रिचर्ड अब डेनियल के लिए खतरा बन चुका था क्योंकि उसने भेद जान लिया था।

कमरे की मंद रोशनी में एक अजीब रहस्य घुल गया था। बार-बार उसे जान की याद आती। लौटते समय उसने कहा था—"यह हमारी अंतिम भेंट है।"

"ऐसा क्यों ?"—रिचर्ड ने पूछा था—"हम दोनों साथ ही तो किले में लौट रहे हैं।"

वह मई की एक सुबह थी। चारों ओर उजाला फैला था। वह केटले से लौट रहा था। तभी उसने जान को जंगल में भागते हुए देखा। उसका पैर जख्मी हो चुका था। वह पानी से बुरी तरह भीगा हुआ था। डेनियल के सैनिक उसका पीछा कर रहे थे। जान ने रिचर्ड से सहायता मांगी। रिचर्ड जान को उसके नगर ऐबे तक पहुंचाने के लिए सहमत हो गया।

मार्ग में एक बड़ी नदी पड़ती थी। वह छोटे-छोटे द्वीपो के बीच से होकर बहती थी। पार करते समय नाव उलट गई। रिचर्ड तैरना नहीं जानता था। जान ने उसे बचाया। वे किनारे पर पहुंचे, तो उन्होंने किसी के गाने की आवाज सुनी। वे खंडहरों में छिप गए। सामने पेड़ों से घिरे एक मैदान में आग जल रही थी। 'काला तीर' गिरोह के विद्रोही खाना बना रहे थे और गा रहे थे। तभी एक व्यक्ति पेड़ों के झुरमुट से बाहर आया। वह उनसे बातें करने लगा। तत्काल सभी लोग जंगल में छिप गए। कुछ समय बाद उन्होंने देखा, जान का पीछा कर रहे घुड़सवार तीरों से घायल होकर जमीन पर गिरते जा रहे थे।

कमरे में अकेले बैठे रिचर्ड की आंखों के सामने ये दृश्य बार-बार घूम रहे थे। अचानक वह उठा। उसने दीवार से कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश की। फिर खिड़की से झांका—नीचे खाई में पानी भरा था। उस रास्ते से भाग निकलना असम्भव था। कमरे का दरवाजा मजबूती से बंद था।

तोपों की आवाज से जंगल गूंज उठा था। पराजित सैनिक मोर्चे से भाग रहे थे। डेनियल केटले का युद्ध



हार चुका था। अचानक उनके कानों से घंटियों की आवाज टकराई। उन्होंने देखा, एक व्यक्ति उनकी तरफ आ रहा था। उसने लबादा ओढ़ा हुआ था। केवल उसकी आंखें चमक रही थीं। वे बुरी तरह घबरा उठे। पास आने पर वह व्यक्ति डेनियल निकला। वह कोढ़ी के वेश में शत्रुओं से बच निकलने की कोशिश कर रहा था। उन्हें न चाहते हुए भी डेनियल के साथ किले में लौटना पड़ा। पर यहां आकर जान न जाने कहां खो गया था।

रिचर्ड की चिंता बढ़ती जा रही थी। उसकी आंखों से नींद उड़ चुकी थी। तभी उसे छत पर किसी के चलने की आवाज सुनाई दी। फिर किसी ने दरवाजा खटखटाया। कोई धीमे स्वर में उसे पुकार रहा था। यह जान था—उसका दोस्त। रिचर्ड ने जल्दी से दरवाजा खोल दिया।

—"फौरन दरवाजा बंद कर दो। सैनिक मेरा पीछा कर रहे हैं।"

"तुम कहां चले गए थे ?"—रिचर्ड की आंखों में विस्मय था।

जान ने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। बोला—"वे तुम्हें मारने की योजना बना रहे हैं। मैंने उनकी बातें सुन ली हैं।"

कोई सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आ रहा था। आवाज बीच-बीच में रुक जाती, फिर दोबारा आने लगती।

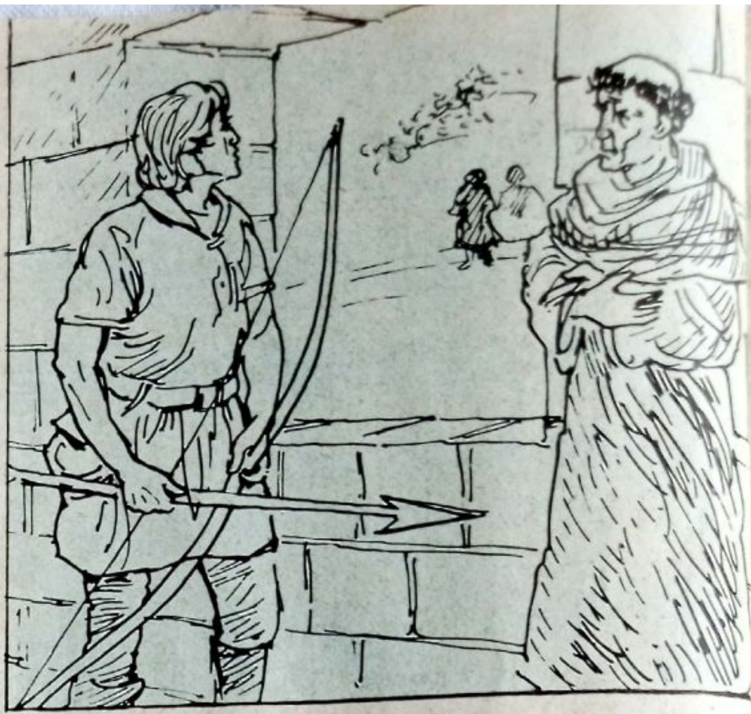
उन्होंने देखा,फर्श के कोने में एक पत्थर अपनी जगह से खिसक रहा था। रिचर्ड ने कमान पर तीर चढ़ा लिया। इसी बीच किले की दीवारों से शोर उठा। युद्ध में भटक गए सैनिक लौट रहे थे। शोर सुनकर गुप्त रास्ते से अंदर आने की कोशिश करने वाला भाग निकला। तभी डेनियल के चिल्लाने की आवाज आई। वह जुआना का नाम लेकर पुकार रहा था। आवाज सुनकर जान घबरा उठा। उसने रिचर्ड से कहा—"मुझे जाने दो वरना सैनिक ढूंढ़ते हुए यहां तक पहुंच जाएंगे। तुम्हारा जीवन भी खतरे में पड़ जाएगा।"

रिचर्ड को अब पता लग चुका था कि जान ही लड़के के वेश में जुआना थी।

"हमें फर्श में बने गुप्त मार्ग से भाग निकलना चाहिए।"—रिचर्ड का आग्रह था। उन्होंने पूरी शक्ति से पत्थर को एक तरफ हटा दिया। सीढ़ियों पर वे तेजी से उतरने लगे। ऊपर दरवाजा तोड़ने की आवाजें आ रही थीं।

अब वे एक सुरंग से होकर गुजर रहे थे। कुछ दूरी पर सुरंग दो भागों में बंट गई। वे एक ओर मुड़े। दीवार के सुराखों से रोशनी छन-छनकर अंदर आ रही थी। नीचे कहीं शोर सुनाई दिया। ये वही सैनिक थे, जो अभी-अभी किले में लौटे थे। उस तरफ से निकलना खतरनाक हो सकता था। दोनों वापस मुड़ गए और दूसरे मार्ग से होकर भागे। यह रास्ता बहुत तंग था और थोड़ी दूर जाकर बंद हो गया। यहां छत में एक पत्थर कुछ अलग दिखाई दिया। शायद वह कोई रास्ता हो,यह सोचकर उन्होंने पत्थर को हटाने की कोशिश की परंतु विफल रहे। अब वे पूरी तरह से घिर गए थे। जुआना ने बताया कि वह अत्यंत धनवान है और बिलकुल अकेली है।

बातें करते हुए उन्होंने देखा—अंधेरे में एक परछाईं उनकी ओर बढ़ रही है। वह व्यक्ति रिचर्ड को बचपन से जानता था। उसने बताया—"दीवार में लगी लोहे की छड़ को खींचने से रास्ते का पत्थर स्वयं हट जाएगा।" यह कहकर वह लौट गया। रिचर्ड ने



वैसा ही किया। पत्थर हल्की आवाज करता हुआ अपने स्थान से हट गया। रास्ता मिल गया। वे भाग चले। सामने एक कमरा था। वहां एक मजबूत रस्सा पड़ा था। उन्होंने उसका एक सिरा खिड़की से बांध दिया और दूसरा नीचे पानी में फेंका। पानी में रस्सा गिरने की आवाज सैनिकों ने सुन ली। वे उन्हें पकड़ने के लिए भागे।

"तुम जल्दी से रस्से के सहारे नीचे उतर जाओ।"—रिचर्ड ने जुआना से कहा।

—"यह असम्भव है। मुझ में अब शक्ति नहीं।" वह लगभग बेहोश हो चुकी थी।

किसी भी क्षण सैनिक पहुंच सकते थे। रिचर्ड ने एक सैनिक को वहां आते देखा। हताश हो, वह अकेला ही खिड़की की ओर भागा। रस्सा पकड़कर नीचे उतरने लगा। उसके हाथ छिल गए थे। अचानक रस्सा उसके हाथ से छूट गया और वह पानी में जा गिरा। खाई के किनारे उगे पेड़ की टहनी हाथ में आ गई। उसे पकड़ कर रिचर्ड बाहरनिकलनेमें सफल हो गया।

वह घायल हो चुका था। लड़खड़ाता हुआ किसी तरह जंगल में पहुंचा। वह शत्रु सैनिकों के हाथों से बच निकला था, परंतु उसने जुआना को खो दिया था। जंगल में पेड़ की टेक लगाकर सो गया। उसे कुछ होश न रहा।

सुबह जब उसकी नींद खुली तो अंधेरे की हल्की

परत फैली थी। तेज हवा बह रही थी। डेनियल के शत्रु विद्रोहियों ने उसे पहचान लिया। वे उसे अपने साथ ले आए।

किले के पास एक दूसरा नगर था—शोर्बी। जुआना को वहां कैद कर दिया गया था। डेनियल का पीछा करते हुए रिचर्ड वहां तक पहुंच गया। जुआना जिस मकान में कैद थी, वह तीन ओर से सैनिकों द्वारा घिरा हुआ था। पीछे समुद्र था। केवल वही एक रास्ता बचा था वहां तक पहुंचने के लिए।

रिचर्ड साथियों को लेकर बंदरगाह में पहुंचा। समुद्र में एक छोटा जहाज लंगर डाले खड़ा था। नावों की सहायता से वे जहाज तक पहुंच गए। उन्होंने पाल खोल दिए। जहाज लहरों के थपेड़े खाता बढ़ चला। बंदरगाह की रोशनियां पीछे छूटती जा रही थीं।

डेनियल के सैनिकों ने उन्हें जहाज से उतरते हुए देख लिया। तीरों की एक बौछार उनकी ओर आई। रिचर्ड के कई साथी घायल हो गए। अचानक हुए हमले से वे इधर-उधर बिखर गए। उन्हें असफल लौटना पड़ा। इस बात से सभी बेहद दुखी थे।

रिचर्ड अब काफी थक चुका था। उसने जंगल में अपने छिपने के स्थान पर जाने का निश्चय किया। दूसरे दिन जब वह जागा, तो बर्फीली हवाएं चल रही थीं। वह पहाड़ी से उतर रहा था तो उसने बिगुल की आवाज सुनी। उसने देखा, पेड़ों के पास एक युवक सात-आठ सैनिकों से घिरा अकेला लड़ रहा था। वह वीरतापूर्वक उनका सामना कर रहा था। रिचर्ड उसकी सहायता के लिए भागा। उसने सैनिकों पर पीछे से वार किया। अचानक हमले से सैनिक घबरा उठे।



आर. एल. स्टीवेंसन (१८५०-१८९४) का जन्म स्काटलैंड में हुआ था। उनकी रचनाएं पूरी दुनिया में सराही गई। 'किडनैप्ड,' 'दि रोंग बाक्स', 'ट्रेजर आइलैंड', 'द ब्लैक ऐरो' आदि प्रसिद्ध कृतियां। यहां हम 'द ब्लैक ऐरो' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं। —सं.

घूमकर वे रिचर्ड पर टूट पड़े। मौका देखकर उस युवक ने बिगुल बजा दिया। जंगल में छिपे उसके सैनिकों ने आवाज सुन ली। वे चारों ओर से दौड़ते हुए आ गए।

"इन्हें फौरन पकड़ लो।"—युवक ने आदेश दिया। लड़ रहे सभी सैनिक बंदी बना लिए गए। वे डेनियल के सैनिक थे। उनसे लड़ रहा युवक लार्ड ग्लूसेस्टर था—डेनियल का शत्रु। उसने सहायता के लिए रिचर्ड को धन्यवाद दिया। उसे अपना सेनानायक बना लिया। अब तक उसकी सारी सेना वहां पहुंच चुकी थी। उन्होंने शोर्बी पर दो ओर से आक्रमण कर दिया। रिचर्ड की वीरता देखकर लार्ड दंग रह गया।

डेनियल की सेना इस युद्ध के लिए तैयार नहीं थी। वह बुरी तरह पराजित हुई। डेनियल भाग निकला। जुआना अब आजाद हो चुकी थी।

रिचर्ड की मुसीबतों का अंत हो चुका था। वह अपने गांव की ओर लौट रहा था। हल्की धुंध में उसने किसी को पेड़ों के पीछे छिपते देखा। "कौन है?"—उसने ललकारा।

कांपती-सी एक आकृति बाहर आ गई। वह डेनियल था। उसने वेश बदला हुआ था। वह गिड़गिड़ाया—"रिचर्ड, मुझे क्षमा कर दो। मैं जख्मी हूं, और चारों ओर से घिर गया हूं।" यह कहकर वह मुड़ा और पेड़ों के बीच से होकर जाने लगा। तभी पास की झाड़ी से एक तीर उड़ान भरता हुआ निकला और डेनियल मुंह के बल जमीन पर जा गिरा। रिचर्ड भागकर उसके पास पहुंचा। गहरी पीड़ा के भाव डेनियल के चेहरे पर झलक रहे थे। वह अब जीवित नहीं था।

रिचर्ड कुछ समय वहां रुकने के बाद फिर चल पड़ा। तब तक सूर्योदय हो चुका था।

(प्रस्तुति : अमरजीत सिंह)

सूना सरोवर

—डा. सुनीता शास्त्री

रंग-बिरंगे फूलों से सजी घाटी के मध्य भाग में परी ताल था, जो पुष्पमंजरी और जड़ी-बूटियों की सुगंध से महका रहता था। चांदनी रात में घाटी की परियां जल की रानी परी से मिलने आती थीं। चांदनी में ताल का जल झिलमिला उठता था। रात को ताल के आसपास परियां नाचती-गातीं। सुबह होते-होते चली जातीं।

उन्हीं दिनों घाटी में लगे गांव में भूकम्प के आने से तबाही मच गई थी। चारों ओर उदासी छा गई थी। बहुत-से लोग भूख से पीड़ित और बेघर हो गए थे। इसी गांव के लकड़हारे के लड़के जगत का मन घर पर नहीं लगता था। वह दिन भर लकड़ी काटता और शाम को उदास मन से परी ताल पर जा बैठता। साथ में अपनी बंसी भी ले जाता। जब समय मिलता, बंसी बजाता। जब अंधेरा छाने लगता तो लौट आता। लगातार अभ्यास से बंसी की स्वर लहरी मधुर होने लगी। परी ताल की रानी परी उसकी बंसी बड़ी तन्मयता से सुनती थी।

एक दिन गरीबी से तंग आकर जगत बंसी बजाने के बजाए रोने लगा। उसका रोना सुन दयालु रानी परी वेश बदलकर बुढ़िया के रूप में जगत के पास आई। बोली—"बेटे,तुझे क्या कष्ट है ?" तब जगत ने सारी बात बता दी कि वह बहुत गरीब है,इसी कारण दुखी है। रानी परी ने उसे सुगंधित सुनहरे फूलों से भरी डलिया दी और कहा कि इन फूलों के हार बनाकर बेच, गरीबी दूर हो जाएगी। रोजाना शाम को आकर फूल ले जाया कर। अब वह प्रतिदिन डलिया में फूल चुनकर ले जाता और सुबह उठकर माला बनाकर मंदिर के द्वार पर जा बैठता। दिन चढ़ते सभी मालाएं बिक जातीं। फिर दिन में लकड़ी काटता और शाम को परी ताल पर आ बैठता। रानी परी और घाटी की परियों को उसका बांसुरी का संगीत सुनने की आदत-सी पड गई थी।



बरसात में भीगने की वजह से एक दिन उसकी तबीयत खराब हो गई, जिससे वह ताल पर न आ सका। जगत के न आने से रानी परी चिंतित हो उठी। उसने सोचा—'अवश्य ही, जगत किसी विपत्ति में है। इसी कारण नहीं आया।' रात गए वह बुढ़िया का वेश बनाकर जगत के घर पहुंची। उसने देखा कि जगत बीमार है। वह चुपके-से उसकी चारपाई के पास गई और जगत को एक फूल सुंघाया। फूल सूंघते ही जगत की आंखें खुल गईं। वह अपने को ठीक महसूस करने लगा।

जगत रानी परी को देखते ही पहचान गया। लेकिन परी ने जगत से चुप रहने का इशारा किया। फिर अगले दिन ताल पर आने को कहा। जगत ने सिर हिलाकर आने का वायदा किया।

शरद पूर्णिमा की रात को परी ताल पर परियां उत्सव मनाती थीं। इस बार रानी परी ने जगत को उत्सव में बंसी बजाने को कहा। रानी परी का जगत को इस तरह बुलाना दूसरी परियों को अच्छा नहीं लगा। लेकिन भला रानी परी की बात कौन टाल सकता था?

उत्सव शुरू होने से पहले रानी परी ने जगत से कहा—"आज तुम आंख बंद कर बंसी बजाओगे।" जगत रानी परी का बहुत कहना मानता था। वह पूरी रात बंसी बजाता रहा। परियां रात भर उसकी बंसी की तान पर नाचती रहीं। जगत की ईमानदारी और मेहनत देखकर, दूसरी परियां भी खुश हो गईं। सुबह होने से पूर्व जाते समय सब ने जगत को एक-एक उपहार दिया और चली गईं। अंत में रानी परी ने जगत को भी घर जाने की अनुमति दे दी।

सुबह होने पर जब जगत ने इतने सारे कीमती उपहार देखे तो वह खुशी से फूला न समाया। सारे गांव में चर्चा फैल गई कि जगत को परियों ने उपहार दिए हैं। जगत ने कुछ उपहारों के बदले एक जमींदार से पैसा लेकर छोटा-सा व्यापार शुरू किया। लकड़ी काटना छोड़ दिया। बहुत अधिक काम होते हुए भी उसने फूलों के हार बनाना और बंसी बजाना नहीं छोड़ा।



जगत के कीमती उपहार देख, जमींदार के लड़के को भी लालच आ गया कि वह भी परी ताल पर जाकर बंसी बजाकर परियों से उपहार प्राप्त करेगा। अगली पूर्णमासी को जगत के पहुंचने से पहले ही जमींदार का लड़का वहां पहुंच बंसी बजाने लगा। इतने में एक सुंदर परी दूर से आती दिखाई दी तो वह बंसी बजाना भूल, उसे टकटकी बांधकर देखने लगा। बंसी की आवाज बंद होने से परी भी जाने लगी। जैसे ही परी दूर जाने लगी, वह उसकी ओर दौड़ पड़ा। उस परी ने तुरंत रानी परी से शिकायत की कि कोई दुष्ट पुरुष ताल पर आ बैठता है। बस फिर क्या था, रानी परी जल से बाहर आई। जमींदार का लड़का समझा कि अब रानी परी उसे उपहार देगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। रानी परी बहुत गुस्से में थी। उसने जमींदार के लड़के को उठाकर परी ताल के बर्फीले जल में फेंक दिया। वह डुबकियां खाने लगा। ठंड के मारे कांपने लगा। परी ने उसे ताल से बाहर फेंक दिया। फिर थोड़ी देर बाद जब जगत आया और इस सारी घटना का पता चला, तो वह बहुत दुःखी हुआ। जगत ने देखा कि आज सुनहरे फूलों में वह मोहक सुगंध नहीं थी, जो परी रानी के दिए फूलों में पहले आती थी। और यह सब एक लालची लड़के के कारण हुआ था। उसके बाद से परियों ने वहां आना छोड़ दिया। वे दूसरे सरोवर पर जाने लगीं। जगत भी अब वहीं जाने लगा। वहां जाकर वह बांसुरी बजाता था। ●

गांव हमारा

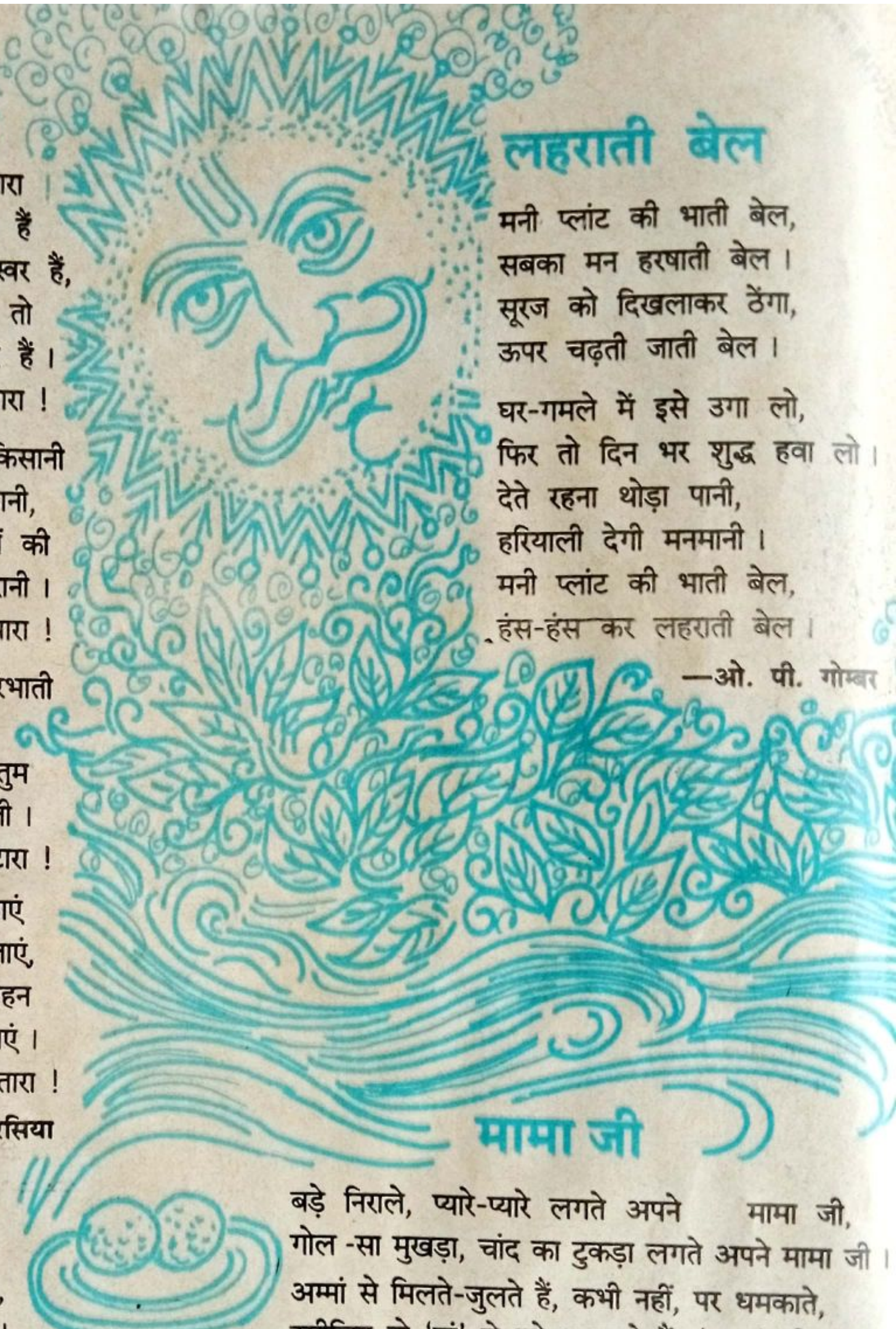
कितना प्यारा गांव हमारा !
आंगन वाले कच्चे घर हैं
कोयल के नित गूंजे स्वर हैं,
पास-पड़ोस पहाड़ों पर तो
झरने झरते झर-झर-झर हैं।
सबने इसको खूब संवारा !

युगों-युगों से खेल , किसानी
जीवन की ये राम-कहानी,
उजला मन, मैले हाथों की
यहां कहावत बहुत पुरानी।
श्रम-गंगा की बहती धारा !

सुबह, शाम है गाय रंभाती
दूर-दूर पगडंडी जाती,
दो मुझको आशीर्वाद तुम
कहता है नाना से नाती।
लोकगीत का यहां पिटारा !

पुस्तक जैसी खुली हवाएं
तरह-तरह के पेड़, लताएं,
नहीं यहां मोटर या वाहन
धुआं उड़ाएं, शोर मचाएं।
भारत की आंखों का तारा !

—राजा चौरसिया



लहराती बेल

मनी प्लांट की भाती बेल,
सबका मन हरषाती बेल।
सूरज को दिखलाकर ठेंगा,
ऊपर चढ़ती जाती बेल।

घर-गमले में इसे उगा लो,
फिर तो दिन भर शुद्ध हवा लो।
देते रहना थोड़ा पानी,
हरियाली देगी मनमानी।
मनी प्लांट की भाती बेल,
हंस-हंस कर लहराती बेल।

—ओ. पी. गोम्बर

एक नहीं, दो

दादी-दादी, हुआ सवेरा,
जल्दी दे दे लड्डू मेरा।
दादा अखबारों में खोए,
मम्मी-पापा अब तक सोए।
चुप्पई-चाप निकल बिस्तर से,
आई हूं मैं इधर-उधर से !
देर करेगी तो रो दूंगी,
एक नहीं, फिर दो-दो लूंगी।

—विष्णु खन्ना

मामा जी

बड़े निराले, प्यारे-प्यारे लगते अपने मामा जी,
गोल -सा मुखड़ा, चांद का टुकड़ा लगते अपने मामा जी।
अम्मां से मिलते-जुलते हैं, कभी नहीं, पर धमकाते,
इसीलिए तो 'मां' से दूने कहलाते हैं, 'मामा' जी।
जब हम बच्चे छत पर चढ़कर गुड्डी खूब उड़ाते हैं,
पेंच लड़ाना, दांव चलाना सिखलाते हैं मामा जी।
टी.वी. में जब गाने आते, हम सब नाचा करते हैं,
बैठ किनारे मूंछों में मुसकाया करते मामा जी।
कंधे पर बैठाकर हमको ऊंचे फल तुड़वाते हैं,
नाना घर में सबसे अच्छे लगते अपने मामा जी।

—नीलिमा सिन्हा



पाताल से

—उदयनारायण तिवारी

पुराने समय की बात है। एक गरीब किसान था। लाख जतन करने पर भी गरीबी उसका पीछा नहीं छोड़ती थी। किसान ने सोचा—'उम्र बीतती जा रही है। शरीर में दम रहते अगर कुछ न किया, तो बुढ़ापे में क्या होगा ?'

अपनी किस्मत आजमाने किसान घर से निकल पड़ा। एकाध बीघा खेत गांव के दुकानदार के पास गिरवी रखकर पत्नी और बच्चों के लिए अनाज घर में रखवा दिया,ताकि पीछे से परिवार को परेशानी न हो।

चलते-चलते उसके पांव थक गए। तभी उसे एक शहर दिखाई दिया। गली के पार एक नया मकान था। पूछने पर पता चला कि वह नया मकान शहर के सबसे धनी व्यापारी का है। लेकिन लाख चाहने पर भी वह उसमें रह नहीं सकता क्योंकि मकान में भूतों का वास है।

किसान सीधे मकान मालिक के पास पहुंचा और बोला—"मैं राहगीर हूं। आपके नए मकान में रात बिताना चाहता हूं।"

व्यापारी हंसा और बोला—"तुम पागल तो नहीं हो ! मेरे नए मकान में भूतों ने डेरा जमा लिया है। लाख जतन करने पर भी वे वहां से नहीं निकलते। तुम्हारी तरह कई लोगों ने कोशिश की थी, पर सुबह वे गायब मिले। उनका कुछ पता न चला।"

किसान ने कहा—"मुझे भी कोशिश कर लेने दीजिए। शायद मैं कामयाब हो जाऊं।"

व्यापारी ने किसान की बात मान ली। कहा—"अगर तुम मेरा मकान भूतों से खाली करा दोगे तो तुम्हें ढेर सारा इनाम दूंगा।"

व्यापारी ने किसान को एक लालटेन थमा दी। घड़ा भर पानी दे दिया। दोनों चीजें लेकर किसान हवेली की तरफ चल दिया। वहां एक कमरे में लालटेन टांग दी, पानी का घड़ा रख दिया और आराम से बैठ गया। आधी रात को कमरे के दरवाजे अपने आप खुलने-बंद होने लगे। सांय-सांय करके हवा चलने लगी। पूरा मकान जैसे भूचाल में कांपने लगा। बहुत शोर हो रहा था। पर किसान आराम से बैठा रहा।

एकाएक बहुत सारे विचित्र जीव उस कमरे में घुस आए। किसी की आंखें पीठ की ओर थीं, तो किसी का सिर उल्टा था। किसी के पांव पीछे की ओर मुड़े हुए थे। किसी के मुंह ही नहीं था और किसी के कई मुंह थे। एक के तीन सिर थे, एक के ऊपर दूसरा, लेकिन उसकी आंखें पीछे की ओर थीं और नाखून पेड़ की टहनियों से भी लम्बे थे। वह उन विचित्र जीवों का सरदार था। आवाज आई—"हम इसकी हड्डी-पसली चबा डालेंगे।"

"बहुत बढ़-चढ़कर बातें मत करो।"—किसान ने कहा। "मैं तुम जैसे बहुत से बदमाशों से निपट चुका हूं। सोच-समझकर खाना मुझे। कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हारे गले में कांटे की तरह अटक जाऊं। हां, यह तो कहो, तुम कौन हो, और यहां क्यों आए हो ?"

—"हम पाताललोक से आए हैं और यहां रहना चाहते हैं।"

"तुम पाताल लोक के जीव हो सो वहीं रहो, यहां क्यों आए हो ? क्या हम धरती वासी तुम्हारे लोक में जाते हैं ?"—किसान कड़ककर बोला ।

"नहीं तो..."—पाताल लोक से आया एक जीव बोला ।

" तो फिर तुम क्या करने आए हो यहां ? आज सही-सही उत्तर न दिया तो फिर देख लेना।"-किसान ने कहा ।

"इससे पहले जो भी इस मकान में रहने आया हमने उसे पाताल पहुंचा दिया । तुम्हारा भी यही हाल होगा ।"—आवाज सुनाई दी ।

"मैं तो खुद ही पाताल जाकर देखना चाहता हूं ।"—किसान ने कहा—"अब हम धरतीवासी वहां नगर बसाएंगे । लेकिन इससे पहले पाताल से यहां आने वालों को कैद करना जरूरी है, ताकि वे लौटकर न जा सकें । मैंने तुम्हारे तीन साथियों को पहले ही पकड़ लिया है ।" कहते हुए किसान ने अपनी पोटली की ओर इशारा किया और डंडा उठाकर उस पर मारने लगा । साथ ही मुंह से अजीब तरह की आवाजें निकालने लगा ।

पाताल लोक से आए विचित्र जीव एक तरफ चुपचाप खड़े हो गए । उनकी निगाहें किसान की लाठी पर टिकी थीं ।

किसान ने खूंटी से लालटेन उतार ली । बोला—"यह जादुई आग है । तुम्हें पल भर में भस्म कर सकता हूं । चलो, पहले तुम्हारे साथियों को खत्म कर देता हूं ।" उसने लालटेन झुकाकर थोड़ा तेल पोटली पर डाला और उसमें आग लगा दी । पोटली से लपटें उठने लगीं ।

अब तो पाताल लोक से आए जीवों का बुरा हाल हो गया । वे कांपने लगे । किसान ने इसे अच्छा मौका समझा, लाठी उठाकर घुमाने लगा। बीच-बीच में फर्श पर मारता तो जोर की आवाज होती ।

"हम जा रहे हैं । हमें यहां नहीं रहना । हमारे साथियों को छोड़ दो ।"—पाताल के विचित्र जीवों ने कहा और कमरे से बाहर भाग गए ।

"फिर कभी इस तरफ आए तो भस्म कर डालूंगा ।"—कहकर किसान ने जलती हुई पोटली लाठी में अटकाकर बाहर फेंक दी । चिंगारियां उड़ने लगीं ।

भागते कदमों की आहट हुई । डरी हुई आवाजें सुनाई दीं—"भागो-भागो । जान बचाओ ।"

किसान जोर-जोर से हंसने लगा—"भाग गए सारे भूत-प्रेत !"

उसके बाद कुछ परेशानी न हुई, वह लाठी संभाले सतर्क बैठा रहा पर कोई न आया । दिन निकला तो वह हंसता हुआ व्यापारी के पास जा पहुंचा । किसान को सकुशल देख उसकी आंखें फटी रह गई -"तो तुम जिंदा हो ? भूत-प्रेत..."

किसान ने हंसकर कहा—"वहां भूत-प्रेत नहीं, पाताल लोक के जीव आते थे । कल रात को मैंने सबको भगा दिया ।" फिर उसने पूरी घटना कह सुनाई । अंत में कहा—"अब आप आराम से अपनी नई हवेली में रह सकते हैं ।"

व्यापारी किसान के साथ अपने नए मकान में गया । उसने किसान को दो रात और नहीं जाने दिया । दोनों रातें आराम से बीत गईं । पाताल लोक के विचित्र जीवों ने फिर उधर आने की हिम्मत नहीं की ।

व्यापारी ने भेंट स्वरूप एक बड़ी रकम किसान को दी और कहा—"भैया, तुमने मुझे एक बहुत बड़ी मुसीबत से उबारा है । मैं तुम्हारा उपकार जीवन भर नहीं भूलूंगा । जब भी किसी चीज की जरूरत हो, बिना झिझक मेरे पास चले आना । आज से तुम दुनिया में मेरे सबसे बड़े मित्र हुए ।"

किसान मजे से गांव लौट आया । गिरवी रखी जमीन छुड़ा ली । उपहार में मिली रकम से थोड़ी-सी जमीन और बैलों की जोड़ी खरीद कर आराम से रहने लगा । मेहनती आदमी था । सारे संकट दूर हो गए । धीरे-धीरे गांव में सब जान गए कि किसान ने पाताल से आए विचित्र जीवों को किस साहस और चतुराई से भगाया था । सब उसकी अक्ल का लोहा मानने लगे । ●

गुफा में

—कुसुमाकर पांडेय

दीनू एक गरीब लड़का था । उसके परिवार में उसकी मां और एक बहन थी । बहन अक्सर बीमार रहती थी । उसके पिता का जब देहांत हुआ था, तब दीनू मात्र दो वर्ष का था । उसकी मां किसी प्रकार से मेहनत करके अपना और बच्चों का पालन-पोषण करती थी । जब दीनू बारह वर्ष का हुआ, तब काम की तलाश में अपने गांव से काफी दूर जाकर बढ़ई का काम करने लगा ।

एक बार की बात है, दीनू अपने कुछ मित्रों के साथ गांव की ओर लौट रहा था । उसके पास उसकी मां के कुछ कपड़े, बहन के लिए कुछ दवाइयां और खिलौने थे । जब वे लोग रास्ते से गुजर रहे थे, अचानक बड़े जोरों की बारिश आ गई । सभी बारिश से बचने के लिए उपयुक्त स्थान की तलाश में लग गए । तभी उन्हें एक गुफा नजर आई । वे सभी उस गुफा में चले गए । काफी देर बाद जब बारिश थम गई, तो वे आगे चल पड़े ।

कुछ दूर चलने के बाद दीनू ने देखा कि वह अपनी पोटली उस गुफा में ही भूल आया है, जिसमें मां के कपड़े, बहन की दवाइयां और खिलौने थे । उसने वहां से वापस जाने की ठान ली । उसके सभी मित्रों ने समझाया—"हम लोग काफी दूर निकल आए हैं, इसलिए उस पोटली का मोह छोड़ दो । हम सब लोग मिलकर दोबारा सब सामान खरीद लेंगे ।" लाख समझाने पर भी दीनू नहीं माना और उसने वापस जाने की ठान ली । उसके सभी मित्र उसे छोड़कर आगे चले गए और वह वापस उस गुफा की ओर लौट पड़ा । जब वह गुफा में पहुंचा, तो उसने देखा कि अंदर चारों ओर रोशनी फैली हुई है । वहां छोटे-छोटे आदमी टहल रहे हैं । दीनू उनको देखकर घबरा गया, क्योंकि जब वह सुबह यहां आया था तो कोई नहीं था । उसको उन बौनों ने बुलाया और पूछा—"तुम यहां क्यों आए हो ?"

उसने बताया कि उसकी एक पोटली छूट गई थी जिसमें कुछ कपड़े, दवाइयां और खिलौने थे । वह उसी को लेने आया है । बौने उससे काफी प्रभावित हुए । उन्होंने उसकी मां के लिए नए कपड़े और बहन के लिए बोलने वाला एक खिलौना दिया । दीनू से कहा—"फिर जब कभी भी जरूरत हो तो जरूर आना ।" दीनू वह सामान लेकर घर पहुंचा, तो उसकी मां और बहन सामान देखकर काफी खुश हुई ।

उस वर्ष गांव में बारिश नहीं हुई । बारिश न होने की वजह से गांव में भयंकर सूखा पड़ गया । गांव के लोग जमींदार के पास गए और अनाज मांगने लगे । दीनू भी गांव वालों के साथ था । जमींदार ने अनाज देने से साफ इंकार कर दिया । जितने लोग उसके पास अनाज मांगने गए, उसने उन सभी को गांव से निकाल दिया । दीनू भी अपनी मां और बहन के साथ गांव वालों के साथ ही निकल पड़ा । संयोग से रास्ते में फिर वह गुफा मिली, जिसमें बौने रहते थे । दीनू उस गुफा में चला गया और उसने बौनों को अपनी सारी व्यथा सुनाई । उसकी बातें सुनकर बौनों को गुस्सा आ गया ।



उन्होंने दीनू को वहीं रुकने को कहा । स्वयं उसके गांव चले गए । वहां से वह जमींदार को उठाकर उसी गुफा में ले आए और एक गरम कुएं में डाल दिया । जमींदार चीखने-चिल्लाने लगा । बौने ने दीनू से कहा—"तुम वापस गांव चले जाओ । अब यह तुम्हें कुछ नहीं कहेगा ।"

दीनू ने कहा—"इसे छोड़ दो । बस, तुम इतना बता दो कि क्या तुम बारिश करवा सकते हो ?" बौनों ने कहा—"हम बारिश तो नहीं करवा सकते किंतु पानी का प्रबंध अवश्य करवा सकते हैं ।" यह कहकर उन्होंने दीनू के कहने पर जमींदार को छोड़ दिया । जमींदार ने कहा—"अब मैं यह गलती कभी नहीं करूंगा ।" जमींदार के इस आश्वासन के बाद बौनों ने उसे कुएं से बाहर निकाला । दीनू ने उन बौनों का शुक्रिया अदा किया और सब खुशी-खुशी गांव की ओर चल पड़े । धीरे-धीरे बौनों की मदद से संकट टल गया ।

जमींदार का रुख गांव वालों के लिए बदल चुका था । वह गांव के प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करने लगा । दीनू अक्सर उस गुफा में आता और उन बौनों से मिलकर जाता था । एक बार बौनों ने दीनू से कहा था कि यदि तुम्हें कोई जरूरत हो तो तुम अवश्य आना । दीनू बोला—"तुम लोग मेरी प्रत्येक जरूरत को पूरा कर सकते हो, परंतु मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है, इसलिए अब मैं तुम लोगों से कभी कुछ नहीं मांगूंगा ।"

दीनू की यह बात सुनकर बौने बहुत प्रभावित हुए और उसे मिलने के लिए फिर आने को कहा । दीनू उनको वचन देकर लौट पड़ा । वह उन बौनों से मिलने उस गुफा में जाता रहा । गांव का कोई भी व्यक्ति यह नहीं जानता था कि दीनू उस गुफा में क्या करने जाता है । यह बात सिर्फ जमींदार को ही मालूम थी, परंतु वह किसी से कुछ कह नहीं सकता था क्योंकि उसने चुप रहने की कसम खा ली थी । इस प्रकार दीनू गांव में अपनी मां और बहन के साथ सुखपूर्वक दिन व्यतीत करने लगा । ●



आते-जाते

—डा. उषा सिंहल

चीन की राजधानी पेइचिंग में पश्चिमी पहाड़ी पर वांग नाम का एक व्यक्ति रहता था । वह परिश्रमी होने के साथ-साथ ईमानदार भी था । इसीलिए लोग उसे ईमानदार वांग के नाम से पुकारते थे ।

वांग एक जमींदार के यहां काम करता था । जमींदार की हवेली और वांग के घर में काफी दूरी थी । वांग प्रतिदिन सुबह उठता, तैयार होता और जमींदार के यहां काम करने के लिए पैदल चल पड़ता । ऐसा करते हुए उसे चालीस साल से भी ज्यादा हो गए थे । इन चालीस सालों में वांग ने एक दिन की भी छुट्टी न ली, न कभी कामचोरी ही की । जमींदार सबके सामने वांग के इन गुणों की तारीफ करता था ।

वांग संतोषी व्यक्ति था । जो मिल जाता, उसी में सुख मानता । अपनी साठवीं सालगिरह निकट आने पर वह सोचने लगा—'काम करते-करते इतनी आयु बीत गई । मेरे पास कभी इतना पैसा न हुआ कि लोगों की भलाई के लिए कोई अच्छा काम कर सकूं । मेरा बच्चा भी नहीं है जिससे यह उम्मीद कर सकूं कि मेरे

मरने के बाद वह इस कमी को पूरा करेगा।' यह सोचते-सोचते कई दिन बीत गए। एक दिन उसके मस्तिष्क में विचार आया-'इस पहाड़ी पर कोई छायादार पेड़ नहीं है। अगर मैं एक पेड़ लगा दूं, तो थके-मांदे लोग कुछ देर उसकी छाया में बैठकर अपनी थकान मिटा सकेंगे।' यह विचार आते ही उसने अपने जन्म दिन पर वहां पेड़ लगाने का फैसला कर लिया।

आखिर वांग का जन्मदिन आ पहुंचा। वह हर रोज की तरह उस दिन भी मुंह अंधेरे उठ कर तैयार हुआ। पत्नी ने उसे उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घायु होने की शुभकामनाएं दीं। वांग ने शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद देते हुए कहा—"मैं बहुत दिनों से एक बात सोच रहा हूं, मुझे कोई ऐसा काम जरूर करना चाहिए जिससे सब लोगों की भलाई हो। लेकिन अपनी गरीबी के कारण मैं आज तक कोई ऐसा काम न कर सका।" फिर उसने पेड़ वाली बात बता दी।

पत्नी ने वांग के इस अच्छे विचार की प्रशंसा करते हुए कहा—"आपने बिल्कुल ठीक सोचा है। हमारे जैसे गरीब लोग दूसरों को इससे अच्छा उपहार नहीं दे सकते।"

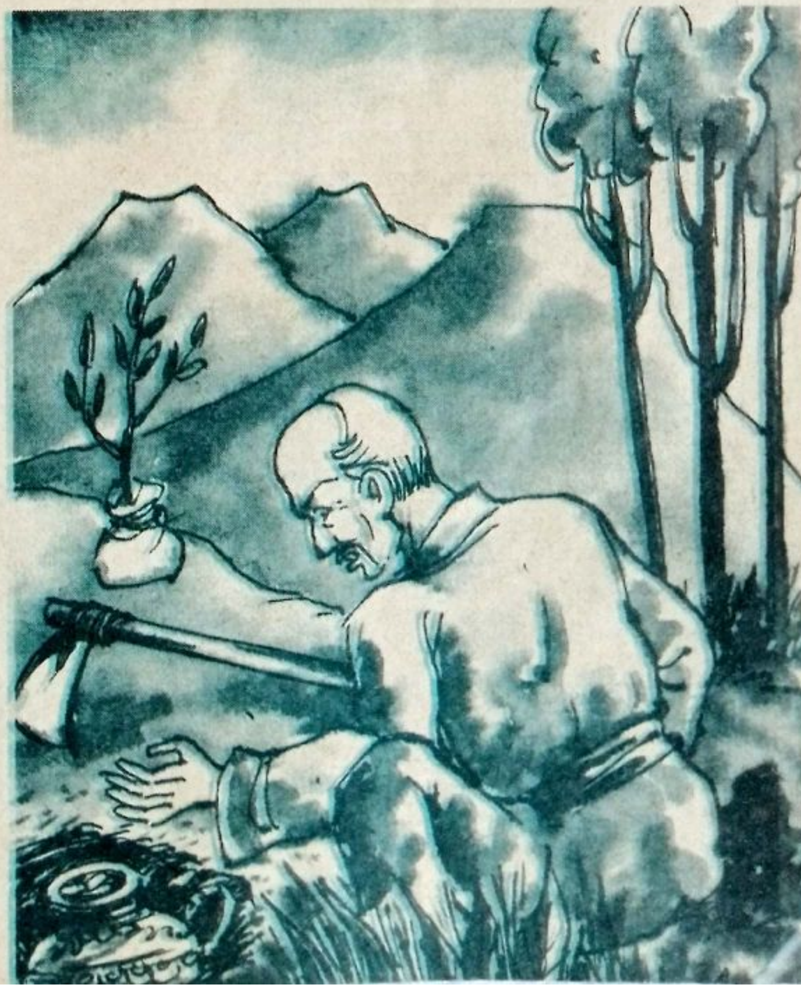
पत्नी से अपने विचारों का प्रशंसा सुन कर वांग को बड़ी खुशी हुई। उसने कंधे पर फावड़ा रख, हाथ में पहले से तैयार करके रखा हुआ पौधा लिया और उसे रोपने चल दिया। वह उस स्थान पर पहुंचा, जहां वह हर रोज थोड़ी देर के लिए सुस्ताया करता था। फिर पौधे को एक ओर रखकर जमीन खोदने लगा।

थोड़ी देर बाद ठक की आवाज हुई। वांग ने झांककर देखा। वहां एक छोटी-सी शिला थी। उसके नीचे चिकनी मिट्टी का बना एक सुंदर कलश रखा था। वांग ने झुककर कलश पर रखी शिला को हटाया, फिर कलश को बाहर निकाला। कलश काफी भारी था। उसे उठाने में वांग को पसीना आ गया।

उसने एक-दो मिनट के लिए सुस्ताना ठीक समझा। फिर कलश के भीतर झांककर देखा। झांकते ही वह अचरज से भर उठा। कलश सोने-चांदी और हीरे-मोती की चमक से जगमगा रहा था। वांग ने कलश का सारा खजाना निकाल कर जमीन पर रखा। कुछ देर तक उसे देखता रहा। फिर सोचा— 'यह खजाना मेरे किस काम का? कहीं यह मेरे लिए मुसीबत ही खड़ी न कर दे।' यह सोचकर उसने सारा खजाना कलश में भर दिया। फिर कलश को उसके पुराने स्थान पर रखा और मुंह पर शिला टिका दी। इसके बाद गड्ढे को मिट्टी से भर दिया। पौधे को उसने थोड़ा हटकर रोप दिया।

घर लौट कर वांग ने पत्नी को पूरी बात बताई। पत्नी ने कहा—"आपने बिल्कुल ठीक किया। इस आयु में ऐसी चीजें हमारे किस काम की? फिर वे चीजें हमारी तो थी नहीं। किसी दूसरे की धरोहर को हम क्यों लें? मुझे पक्का विश्वास है कि अगर आप वह कलश घर ले आते, तो हमारे ऊपर कोई न कोई मुसीबत जरूर आती।" वांग पत्नी की बात सुनकर बहत खुश हुआ। उसे लगा कि उसने जो कुछ किया वह एकदम सही था।

वांग अपने काम पर आते-जाते समय पौधे के पास से गुजरता। थोड़ी देर के लिए वहां रुकता। पौधे के



पास उग आई घास-फूस को साफ करता। पौधे को पानी देता। इसके बाद अपने काम पर चला जाता। धीरे-धीरे पौधा बड़ा होता गया। एक दिन ऐसा भी आया जब वह हराभरा पेड़ बन गया। वांग को यह देखकर बड़ी खुशी हुई।

एक दिन की बात है, दोपहर का समय था। जमींदार यह देखने के लिए खेत में पहुंचा कि सारे मजदूर काम पर लगे हुए हैं अथवा आराम कर रहे हैं। उसने एक टोप पहना हुआ था। टोप पर एक बड़ा-सा मोती चमक रहा था। एक मजदूर ने जमींदार का अभिवादन करते हुए कहा—"मालिक! आपके टोप पर लगा मोती बेमिसाल है। शायद ही किसी ने आज तक इतना बड़ा और इतना चमकदार मोती देखा हो।" बाकी मजदूरों ने भी उसकी बात की पुष्टि की। जमींदार यह सुनकर खुश हुआ। उसने मजदूरों को काम के संबंध में कुछ समझाया, फिर अपने घर की ओर चल दिया।

जमींदार के पीठ मोड़ते ही वांग ने मजदूरों से कहा—"मैंने उससे भी ज्यादा बड़े और चमकदार मोती देखे हैं।" वांग की यह बात जमींदार ने सुन ली। वह तुरंत मुड़ा और वांग के पास आकर बोला—"तुमने इससे भी बड़े और चमकदार मोती कहां देखे हैं?" वांग को सारी बात बतानी पड़ी।



जमींदार ने कहा—"वह कलश मेरे पुरखों का है। उस पर केवल मेरा हक है। फिर उसने वांग को वहां का रास्ता दिखाने का आदेश देते हुए मजदूरों से कहा—"तुम सब भी फावड़े लेकर मेरे साथ चलो।"

जमींदार, वांग और मजदूर उस स्थान पर पहुंच गए, जहां कलश गड़ा हुआ था। जमींदार ने मजदूरों से कहा—"इस जगह को सावधानी से खोदो। कलश पर किसी प्रकार की चोट नहीं आनी चाहिए। उसे एकदम सुरक्षित, बिना मुंह खोले बाहर निकालना।" थोड़ी देर तक खुदाई करने के बाद कलश दिखाई दे गया। दो-तीन मजदूरों ने मिलकर उसे बाहर निकला।

जमींदार ने कलश में झांककर देखा, लेकिन उसे कुछ भी दिखलाई न दिया। जमींदार ने सोचा कि शायद हीरे-जवाहरात नीचे होने की वजह से दिखलाई नहीं दे रहे हैं। निकालने के लिए उसने अपना हाथ कलश के भीतर डाला, तो उसे मुलायम और बलदार वस्तु का एहसास हुआ। जमींदार ने झट अपना हाथ बाहर निकाला, किंतु जब तक ढेर सारे बिच्छू और कनखजूरे उसके शरीर पर चढ़ गए थे। कई जहरीले सांप भी एक साथ बाहर निकल आए। उन्होंने जमींदार को डस लिया। जमींदार की तुरंत मृत्यु हो गई। सांप, बिच्छू और कनखजूरे इधर-उधर तितर-बितर हो गए। जल्दी ही यह खबर सब तरफ फैल गई।

संबंधियों द्वारा जमींदार का शव ले जाने के बाद वांग और अन्य मजदूरों ने कलश की पड़ताल की। कलश बिल्कुल खाली था। वांग ने उसे फिर से पुराने स्थान पर रखा और उसका मुंह ढक दिया। गड्ढे को मिट्टी से भरकर उस स्थान को समतल कर दिया। यह सब करने के बाद वांग और उसके साथियों ने थोड़ी देर तक हरे-भरे पेड़ के नीचे विश्राम किया। फिर वे अपने-अपने घर चले गए।

उस दिन के बाद से वह पहाड़ी कलश वाली पहाड़ी के नाम से प्रसिद्ध हो गई। ●



जलपरी ने कहा

—सत्यभूषण वर्मा

समुद्र के तट पर एक गरीब मछुआरा रहता था । एक दिन वह मछली पकड़ रहा था, तो जाल में एक जलपरी आ फंसी । उसका धड़ और सिर एक स्त्री का था और बाकी शरीर मछली का । मछुआरा चकित होकर उसकी ओर देखने लगा । उसने कहानियों में जलपरी के बारे में सुना था पर पहली बार वह सचमुच की जलपरी देख रहा था ! वह जलपरी को जाल से बाहर निकालता, इससे पहले परी मनुष्य की भाषा में बोली—"अगर तुम मुझे समुद्र में वापस छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें एक अनोखी भेंट दूंगी ।"

मछुआरे ने जलपरी को जाल से निकाल कर समुद्र में छोड़ दिया । पहले ही समुद्र में गोता लगाया और गहरे पानी में खो गई । थोड़ी देर बाद वह फिर बाहर आई । उसके हाथ में एक अनगढ़ पत्थर था । उसने पत्थर मछुआरे को देते हुए कहा—"यह बहुमूल्य मणि है । इसे धीरे-धीरे तराशकर बहुत छोटा कर दोगे तो यह पत्थर पारदर्शी हो जाएगा । इसके भीतर तुम्हें दो नन्ही-नन्ही मछलियां खेलती हुई दिखाई देंगी । यह संसार की एक अनोखी मणि होगी । इसे तुम मनचाहे मूल्य पर बेच सकोगे ।"

मछुआरा वह पत्थर लेकर घर चला आया । उसने पत्नी को सारा किस्सा सुनाना चाहा । पत्नी देर से मछुआरे की प्रतीक्षा में थी । सारे दिन के बाद पति को खाली हाथ घर लौटा देखकर उसका गुस्सा भड़क उठा । उसने पूरी बात सुने बिना ही पत्थर छीन कर दूर फेंक दिया । मछुआरे ने बाद में पत्थर खोजने का बहुत प्रयत्न किया पर वह न मिला ।



दिन, महीने और वर्ष बीत चले । बात पुरानी पड़ गई । धीरे-धीरे कई पीढ़ियां बीत गईं । इस बीच मछुआरे की संतानें समुद्र के तट वाला गांव छोड़कर दूर नगर में जा बसीं । उन्होंने मछली पकड़ने का काम भी छोड़ दिया । अब वे लोग नगर के धनी व्यापारियों में गिने जाने लगे । लेकिन उस पत्थर की चर्चा अब भी उनके घर में हुआ करती थी । बाप-दादा के जमाने से चली आती दूसरी बातों की तरह उस पत्थर की चर्चा भी उस वंश में चलती रही ।

एक बार इसी परिवार का एक युवक व्यापार के सिलसिले में उसी गांव में गया, जहां उसके पूर्वज रहा करते थे । वहां वह अपने व्यापारी मित्र के घर में ठहरा । मित्र से बातें करते-करते अचानक उसकी दृष्टि मकान की चारदीवारी पर पड़ी जिसमें एक बहुत ही चमकीले रंग का मछली के आकार का पत्थर लगा हुआ था । उसे पिछली बातें ध्यान आ गईं । सोचने

लगा—'कहीं यह वही पत्थर तो नहीं है जिसकी चर्चा हमारे परिवार में कई पीढ़ियों से चली आ रही है। हो सकता है समय बीतने के साथ रगड़ खाते-खाते इस पत्थर में चमक आ गई हो। इसे तराशने पर शायद वही मणि प्राप्त हो जाए जिसके बारे में जलपरी ने हमारे पूर्वज को बताया था।'

युवक ने अपने मित्र से कहा— "क्या तुम मुझे अपनी दीवार में लगा वह पत्थर निकलवा कर दे सकते हो ?" उस पत्थर की ओर युवक की ललचाई हुई दृष्टि को भांपकर व्यापारी को संदेह हुआ कि हो न हो, इस पत्थर में जरूर कोई विशेष बात है। अपने संदेह की पुष्टि के लिए उसने युवक से कहा—"इस पत्थर को निकालने के लिए दीवार गिरानी पड़ेगी। थोड़े दिनों में मैं मकान की मरम्मत करवाने वाला हूं। तब यह पत्थर तुम्हारे लिए निकालकर अलग रखवा लूंगा। अगली बार आकर ले जाना।"

युवक इस अवसर को खोना नहीं चाहता था।उसने कहा—"दीवार गिराने की ही तो बात है। तुम कारीगर बुला लो। दीवार गिराने और उसे फिर से बनवाने का सारा खर्च दे दूंगा। इसके अतिरिक्त इस पत्थर के लिए भी मैं तुम्हें कुछ रकम अलग से दूंगा। यह पत्थर मैं अपने साथ अवश्य ले जाना चाहता हूं।"

अब तो उसके व्यापारी मित्र को विश्वास हो गया कि दीवार में लगा मछली के आकार का पत्थर अवश्य ही बहुमूल्य है। उसने कहा—"मित्र, तुम्हारे लिए यह पत्थर क्या सचमुच इतनी बड़ी चीज है ? मैं अवश्य ही इसे निकलवाकर रख लूंगा। तुम जब चाहो आकर ले जाना। पर अभी दीवार गिरवाकर पत्थर निकालना संभव नहीं।"

युवक निराश होकर लौट गया। उसके जाते ही व्यापारी ने दीवार गिरवाकर वह पत्थर निकलवा लिया। उसे एक जौहरी को दिखाया। जौहरी ने जांच करके कहा—"यह साधारण पत्थरों से अलग और विलक्षण है, पर यह हीरा नहीं हो सकता।" फिर भी व्यापारी की जिद पर जौहरी ने उसे तराशना शुरू किया। काफी तराशने के बाद भी उस पत्थर में कोई विशेष बात पैदा न हुई। जौहरी ने पत्थर व्यापारी को लौटा दिया।

घर लौटकर व्यापारी को बहुत पछतावा हुआ। सोचने लगा—'यह पत्थर युवक मित्र को दे दिया होता तो कुछ रकम ही मिल जाती। दीवार की मरम्मत का खर्च भी अब मुझे ही उठाना होगा।' निराशा और क्रोध में उसने हथौड़ा उठाकर पत्थर पर दे मारा। चोट पड़ते ही पत्थर के दो टुकड़े हो गए। पानी के कुछ छींटे उड़े। दो छोटी-छोटी मछलियां जमीन पर गिर कर छटपटाईं और मर गईं। जलपरी का दिया हुआ अमूल्य उपहार सदा के लिए नष्ट हो गया। जलपरी को मनुष्यों की इस नादानी पर बहुत दुःख हुआ। तब से आज तक वह जलपरी फिर कभी किसी मनुष्य को दिखाई नहीं दी। •





नागमणि

—गोपाल कश्यप

कंचन शांत स्वभाव की लड़की थी। उसकी मां की मृत्यु सर्प के डंसने से हुई थी। पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। सौतेली मां झगड़ालू एवं कर्कश स्वभाव की थी, इसलिए वह दिन भर कंचन से घर एवं बाहर का काम करवाती। कंचन को भरपेट भोजन भी नहीं देती थी। इस कारण कंचन हमेशा उदास रहा करती थी।

एक दिन कंचन अपने बाड़े से उपले के लिए गोबर इकट्ठा कर रही थी। तभी उसकी नजर एक सुंदर एवं चमकती हुई नागमणि पर पड़ गई। उसने उसे उठाकर अपनी फ्राक से साफ किया। उसे कोई चमकता हुआ सुंदर शीशा समझकर खेलने के लिए अपने पास रख लिया। जब घर पर सौतेली मां ने उसके पास चमकती हुई नागमणि को देखा, तो उसने भी शीशा समझकर उसे डांटना शुरू कर दिया— "जब देखो तब घर में कोई न कोई कूड़ा-करकट उठा लाती है। अपनी खैर चाहती है तो अभी इस शीशे को वहीं रख आ, जहां से उठाकर लाई है।"

यह सुनकर कंचन सकते में आ गई। सोचने लगी—'इस वक्त शाम का धुंधलका छा रहा है। थोड़ी देर में अंधेरा हो जाएगा। जिस बाड़े से यह नागमणि उठाकर लाई हूं, वह बाड़ा यहां से एक मील की दूरी पर है। वहां कैसे अकेली जाऊंगी? कैसे लौटकर आऊंगी? रास्ते में जंगली जानवरों का भी भय है।' वह गिड़गिड़ाकर बोली—"नहीं मां, मुझे आज मत भेजो। मैं कल सुबह होते ही चली जाऊंगी और इस शीशे को वहीं रख आऊंगी, जहां से उठाकर लाई थी। तुम तो देख रही हो कि कैसा अंधेरा छाता जा रहा है।"

"मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहती। तुम्हें अभी और इसी वक्त जाना होगा।"—सौतेली मां ने अपना हाथ नचाते हुए कहा।

"ठीक है मां, जब तुम्हारी यही इच्छा है, तो मैं अभी जा रही हूं।"-अपने आंसुओं को पोंछते हुए कंचन ने कहा।

उस चमकती हुई नागमणि को हाथ में लिए कंचन अपने बाड़े की ओर चली जा रही थी। रास्ता बिल्कुल सुनसान था, कहीं कोई दिखलाई नहीं दे रहा था।

अकेली होने के कारण कंचन भय से थर-थर कांप रही थी। वह बार-बार यही सोच रही थी—'काश ! आज मेरी अपनी मां जिंदा होती तो कितना अच्छा होता। कम से कम मुझे इस तरह अकेला तो न भेजती ? काश ! मेरे पास भी घोड़ा-गाड़ी होती तो मैं उस पर सवार होकर जल्द से जल्द अपने बाड़े में पहुंच जाती।'— अचानक नागमणि को अपने माथे से लगाते हुए उसने इच्छा प्रकट की।

अरे ! यह क्या ! तुरंत उसके सामने एक खूबसूरत-सी घोड़ा-गाड़ी खड़ी थी। कंचन को जैसे विश्वास ही नहीं हुआ। वह आश्चर्य से आंखें फाड़े कभी घोड़ा-गाड़ी को घूरती, तो कभी उस चमत्कारी नागमणि को। उसकी सत्यता की जांच करने के लिए उसने नागमणि को फिर माथे से लगा लिया और इच्छा प्रकट की—'काश ! मेरे बदन पर कीमती कपड़े होते। तब तो घोड़ा-गाड़ी पर चढ़ने का कुछ और ही आनंद आता।'

ऐसा सोचते ही कंचन के शरीर पर कीमती कपड़े भी आ गए। 'इसका मतलब है कि यह चमकने वाला शीशा कोई ऐसा-वैसा शीशा नहीं है, बल्कि यह तो कोई चमत्कारी शीशा मालूम पड़ता है।'—यह सोचकर कंचन खुशी से झूम उठी। वह घोड़ा-गाड़ी पर जाकर बैठ गई। बैठते ही घोड़ा-गाड़ी अपने गंतव्य स्थान की ओर चल पड़ी। थोड़ी देर बाद घोड़ा-गाड़ी बाड़े में जाकर खड़ी हो गई।



बाड़े की हालत को देखते हुए कंचन ने मणि को माथे से लगाकर यह इच्छा प्रकट की—'काश ! इस बाड़े की जगह एक विशाल हवेली होती तो कितना अच्छा होता ! उसमें नौकर-चाकर होते जो मेरी आज्ञा का पालन करते तो और भी अच्छा लगता।'

अरे ! यह क्या ! इच्छा प्रकट करते ही बाड़ा तो हवेली के रूप में बदल गया। चारों ओर चहल-पहल हो गई। नौकर-चाकर भाग-दौड़ करने लगे। तभी एक नौकर ने हाथ जोड़कर कंचन से कहा—"मालकिन, क्या हुक्म है ?"

"हुक्म ?" चौंककर कंचन ने उसकी ओर देखा और बोली—"अभी थोड़ा ठहर जाओ।"

सिर झुका कर वह नौकर चला गया। यह देख कंचन की खुशी का ठिकाना न रहा।

अगले दिन जब सुबह तक कंचन लौटकर नहीं आई, तो उसके पिता अपनी पत्नी पर बरस पड़े। उसे बुरा-भला कहने लगे, लेकिन कंचन की सौतेली मां पर इसका जरा भी असर नहीं पड़ा। वह यह सोचकर खुश थी कि मुसीबत टली। उसे पूरा विश्वास था कि कंचन को जंगली जानवरों ने अपना ग्रास अवश्य बना लिया होगा। फिर भी दिखावे के लिए वह पति के साथ बाड़े की ओर चल पड़ी। वहां पहुंचने पर अपने बाड़े की जगह एक विशाल हवेली को देखकर दोनों भौचक्के से रह गए। अरे ! यह क्या ? बाड़ा कहां है ? यह हवेली किसकी है ?

तभी कंचन की निगाह अपने मां-पिता पर पड़ गई। वह दौड़ती हुई उनके पास आई। बोली— "मां, यदि तुमने उस चमकते शीशे को यहां रखने के लिए नहीं भेजा होता, तो यह हवेली भी न होती और न ही ये नौकर-चाकर होते। दरअसल वह चमकता शीशा नहीं था बल्कि इच्छाधारी नाग की मणि थी। मुझे भी बाद में उसका पता चला है।"

कंचन के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर सौतेली मां का सिर शर्म से झुक गया। उसने दौड़कर कंचन को अपनी छाती से लगा लिया। कंचन के पिता छलछलाई आंखों से यह देख रहे थे। ●

बौने का उपहार



एक गांव में एक चक्कीवाला था। वह कंजूस और कपटी। सर्दियों की एक शाम उसके पास एक बौना आया।
हम भूखों मर रहे हैं। एक थैला आटा...
भिखारियों के लिए कुछ नहीं... भाग जाओ।
बौना वापस चल दिया। रास्ते में उसे एक लड़का आटे का थैला लाते दिखा। वह चक्कीवाले का लड़का पीटर था।
यह लीजिए। लेकिन पिताजी को मत बताना...
मैं तुम्हारा एहसान नहीं भूलूंगा...
बौना थैला लेकर चला गया। कई महीने बीत गए। एक दिन, पीटर झील से मछलियां पकड़ रहा था। उसने तार पर खिंचाव महसूस किया। तभी एक बौना पानी से निकला।
यह तो वही बौना है!
अरे, यह तो पीटर है! कहो दोस्त?
बौने ने कूदकर घास में छलांग लगाई और अपना शरीर धूप में सुखाने लगा।
आज हमारे देश में समारोह है। तुम भी चलो।
क्या सच!


पीटर को साथ लेकर बौने ने एक पेड़ के खोखले तने में प्रवेश किया ।
यह हमारी अपनी दुनिया है ।
सचमुच बहुत सुंदर...
बौने ने वहां पहुंचकर मेज को थपथपाया ।
मित्रो, यह पीटर है जिसने पिछली सर्दियों में हमें भोजन के लिए आटा दिया था ।
पीटर का स्वागत है ।
विचित्र दृश्य था । बौनों ने उसके सामने भोजन और फलों के ढेर लगा दिए ।
खाओ मित्र !
वाह, बहुत स्वादिष्ट भोजन...
थोड़ी देर में वहां बौनों के खेल शुरू हो गए ।


पीटर को खेलों में बहुत आनंद आ रहा था । वह एक कोने में खड़ा था ।
आओ, तुम भी खेलो ।
नहीं, मैं तुमसे बहुत बड़ा और ताकतवर हूं ।
सुनकर बौना हंस पड़ा और...
सब यह देखो, कौन ताकतवर है ?
खेल-कूदकर सब निढाल होकर लेट गए । उसे घर की याद आई ।
अब चलना चाहिए ।
पीटर पेड़ के खोखले तने से बाहर निकला । झील के किनारे आ पहुंचा । तभी आवाज आई—
रुको, पीटर ! तुम अपना उपहार लिए बिना नहीं जा सकते ।
कैसा उपहार ?


बौने ने जेब से एक सीटी निकाली और उसे पीटर को देते हुए कहा—
इसे बजाकर तुम मुझे कभी भी मदद के लिए बुला सकते हो ।
तभी एक परी हाथ में एक थैला लेकर वहां आ पहुंची । बौने ने वह थैला भी पीटर को दे दिया ।
और यह तुम्हारे पिता के लिए...
??
दिन छिपे पीटर घर पहुंचा । उसने थैला पिता को दिया ।
यह एक बौने ने दिया है...
तुमने चोरी से उसे आटा दिया था...
पीटर के पिता ने थैला खोला । उसमें चमकदार मोती थे । एक पत्र लिखा था—'हम बौने बुराई के बदले भलाई करते हैं ।' उसे अपने व्यवहार पर लज्जा महसूस हुई ।
मैंने बहुत बड़ी भूल की थी । अब हम किसी जरूरतमंद को निराश नहीं करेंगे ।
यह तो बहुत अच्छी बात है ।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

—बच्चों का अखबार—

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ६५ रुपए
दो वर्ष : १२५ रुपए

वर्ष : ३१ अंक : ९ जुलाई '९५, नई दिल्ली; आषाढ़-श्रावण, शक सं. १९१७

मुंह में बिसकुट हाथ में किताबें

नई दिल्ली। अहा ! मीठे-नमकीन कुरकुरे बिसकुट। मीठी डबल रोटी ! अंकुरित दालें और अनाज। सोयाबीन की बड़ियां—वे भी बिलकुल मुफ्त, स्कूल में। घर से खाने का डिब्बा लाने की जरूरत ही नहीं।

है न मजेदार बात। दिल्ली के सरकारी स्कूलों में बच्चों को स्वादिष्ट चीजें खाने को मिला करेंगी। ये चीजें बच्चों को स्वस्थ भी रखेंगी। इस योजना की शुरुआत दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना ने की।

इस प्रकार के भोजन का लाभ सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले लाखों बच्चों को मिलेगा। वे बच्चे जो गरीबी के कारण बीच में पढ़ाई छोड़ देते हैं, उन्हें भी इसका लाभ मिलेगा तो वे पढ़ते रहेंगे।

सबसे बड़ी बात तो यह होगी कि बच्चे खराब चीजें खाने से बचेंगे। बीमार भी नहीं पड़ेंगे। स्कूलों में मिलने वाली खाने की चीजों की जांच, समय-समय पर डाक्टरों का एक दल करेगा। इन स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे पढ़ेंगे भी तथा अच्छी-अच्छी खाने की चीजें भी खाएंगे। मीठे-मीठे बिसकुट खाते हुए किसी भी पाठ को याद करना, नन्हे-मुन्नों के लिए बहुत आसान होगा।



मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना

बाल लेखिका स्नेह अग्रवाल का निधन

नई दिल्ली। बच्चों की प्रमुख लेखिका स्नेह अग्रवाल नहीं रहीं। 'नंदन' में उनकी अनेक कहानियां छपती रही हैं। उनकी ३२ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

उन्हें बाल साहित्य का राष्ट्रीय पुरस्कार, हिन्दी अकादमी सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान तथा राजस्थान सरकार के पुरस्कार मिले। नीली रोशनी का महल, ऐसे थे चाचा नेहरू, शरारत करने की छूट और अमर फल की तलाश उनकी लोकप्रिय पुस्तकें हैं।

पहुंची कविता

लंदन। उसने युद्ध के मैदान में अपनी पत्नी के लिए एक कविता लिखी। लेकिन यह कविता पत्नी तक इक्यावन वर्ष बाद पहुंची। जेम्स नामक यह सिपाही युद्ध के मैदान में मारा गया। उसकी निजी चीजें बर्लिन के अभिलेखागार में भेज दी गईं। वहां से ये चीजें रूस के अभिलेखागार में भेजी गईं। इन चीजों में यह कविता थी। जेम्स की पत्नी अब बहुत बूढ़ी हो चुकी हैं।

बिना ड्राइवर चला

राजकोट। यहां एक इंजन बिना ड्राइवर के पैंसठ कि. मी. चला गया। अधिकारियों ने उसे उस तरफ मोड़ दिया जहां पटरी खत्म हो जाती थी, फिर उसे पटरी से उतार दिया गया। इस तरह एक दुर्घटना होने से बच गई।

लोहे की कड़ाही

लंदन। भारत में लोहे की कड़ाही में बना खाना बहुत अच्छा होता है। इससे शरीर में लोहे की कमी नहीं होती। खाना पकाने की यह परम्परा बनी रहनी चाहिए। यह बात ब्रिटेन के पकवान विशेषज्ञों ने कही है।

गरीब और लाखों

गाजियाबाद। रतन सक्सेना की मृत्यु के बाद मोहल्ले वालों ने उसका अंतिम संस्कार किया। वह बहुत गरीब था। लेकिन जब उसके सामान की तलाशी ली गई तो तकिए के अंदर से दो लाख रुपए बैंक में जमा करने की रसीद निकली। वह अक्सर गिटार बजाता था और सड़क पर आवारा पशुओं के साथ सो जाता था।

खूब घूमते हैं

बान। हर वर्ष पचहत्तर करोड़ लोग घूमने के लिए निकलते हैं। वैसे पर्यटन उद्योग में दुनिया भर में बीस करोड़ लोग लगे हैं। जर्मनी में पर्यटन उद्योग सबसे आगे है। यहां के लोग सबसे अधिक घूमते फिरते हैं।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

—बच्चों का अखबार—

नंदन बाल समाचार

क्रोध से सब कार्य वैसे नहीं बनते जैसे शांति से।

— श्रीमद्भागवत

सौ वर्ष जिएं

शरीर में कोई बीमारी हो तो उसका तुरंत इलाज कराना चाहिए। लेकिन अक्सर ऐसा होता नहीं। होता यह है कि बीमारी को छिपाते हैं। लड़कियां या महिलाएं तो ऐसा बहुत बार करती हैं। परिणाम होता है कि बीमारी बढ़ जाती है। कई बार लेने के देने पड़ जाते हैं।

बीमारी शुरू हो तब उस पर काबू पाना आसान होता है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए स्वस्थ शरीर जरूरी है। हमारे यहां प्रार्थना की जाती है कि सौ वर्ष तक जिएं, स्वस्थ रहते हुए सुख से जिएं। शरीर के सब अंग ठीक-ठाक काम करते रहें। ऐसा तभी हो सकता है जब हम बीमारियों से बचें। बीमार हो जाएं तो तुरंत सही इलाज कराएं।

इनसे मिलिए



नई दिल्ली। "भारत के लोगों ने मुझे इतना प्यार दिया है कि मैं कभी उन्हें भुला नहीं सकूंगा। मैं यहां जिस गांव में भी गया लोगों ने मेरा खूब स्वागत किया। मुझे खुशी है कि भारत जैसे महान देश से मैंने अपनी यात्रा शुरू की।" यह कहना है जर्मनी के बर्ट साइमन का। साइमन दुनिया भर के बच्चों की समस्याओं की तरफ लोगों का ध्यान खींचने के लिए १२ देशों की पद-यात्रा पर निकले हैं। वह २५,००० किलोमीटर की दूरी तय करेंगे।

अपनी यात्रा में साइमन ढेर सारे चित्र खींच रहे हैं। इन चित्रों को जगह-जगह दिखाया जाएगा और इससे मिलने वाले पैसों को 'पीस विलेज इंटरनेशनल' को दे दिया जाएगा। यह संस्था युद्ध पीड़ित बच्चों की मदद करती है।

भारत में रहकर साइमन हिंदी समझने और बोलने लगे हैं।

दांत रहेंगे

वाशिंगटन। अमरीका में अब लोगों के दांत कम खराब होते हैं टूटते भी नहीं हैं। डाक्टरों का कहना है कि जल्दी ही ऐसे दिन आने वाले हैं जब आदमी के दांत टूटा ही नहीं करेंगे। अमरीका में दांतों की रक्षा करने वाले रसायन टूथपेस्ट और मंजनों में मिला दिए जाते हैं। कुछ कंपनियां इन रसायनों को पानी में भी मिला देती हैं।

हमारी धरोहर

बम्बई। यहां की छह सौ इमारतों को धरोहर माना गया है। इन इमारतों के आसपास होने वाले नए निर्माण के लिए पहले निगमायुक्त से इजाजत लेनी होगी। इमारतों के आसपास विज्ञापनों के बोर्ड भी नहीं लगाए जा सकेंगे।

प्रकाश स्तम्भ की खोज

काहिरा। फ्रांस और मिस्र के गोताखोर प्राचीन प्रकाश स्तम्भ की खोज कर रहे हैं। कहा जाता है कि यह प्रकाश स्तम्भ १२० मीटर ऊंचा था और एक भूकम्प से सैकड़ों साल पहले समुद्र में डूब गया था।

लड़कियों का पहला स्कूल

दिल्ली। यहां लड़कियों का सबसे पहला स्कूल २१ मई, १९०४ को खुला था। इसका नाम था—इंद्रप्रस्थ। इसमें सिर्फ सात लड़कियां पढ़ती थीं। लड़कियों की संख्या बढ़ाने के लिए लोग जा-जाकर घर के लोगों को समझाते। यही नहीं उन्हें स्कूल में लाने-ले जाने के लिए विशेष बुग्गियों की व्यवस्था की गई थी। इंद्रप्रस्थ में ही सबसे पहले १९२३ में लड़कियों के लिए विज्ञान विषयों की कक्षाएं लगी थीं।

छोटा भारत

सिंगापुर। यहां की एक पूरी सड़क को सरकार ने सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया है। सरकार का मानना है कि यहां प्राचीन भारतीय संस्कृति जीवित है। इस इलाके में ३०५ दुकानें हैं। यहां भारतीय साड़ियों, जेवरों के अलावा पूजा में काम आने वाले फूल भी मिलते हैं। अधिकांश दुकानदार दक्षिण भारतीय हैं यहां हर प्रकार का भारतीय भोजन भी उपलब्ध है

अनोखी टाई

पेरिस। फ्रांस के लिली शहर में छात्रों ने अनोखी टाई बनाई। इसकी लम्बाई १९५ मीटर थी। इस टाई के प्रदर्शन से छात्र सामाजिक विकास के कामों के लिए चंदा इकट्ठा करेंगे। बाद में यह टाई समाजसेवी संस्था 'व्हाइट क्रास' को दे दी जाएगी।

ऐसे रुके अपराध

वाशिंगटन। अमरीका में 'द ब्रीफ' नाम से एक अखबार निकाला गया है। इस अखबार में अपराधों के बारे में जानकारी दी जाती है। अपराध कहां हुआ, कैसे हुआ, आदि बातें विस्तार से बताई जाती हैं। इस अखबार की जानकारी से लोग अपराधों के प्रति सचेत हो गए हैं। वे खुद पुलिस को सूचना देते हैं।

गंजू लामा और सड़क

गंगटोक। गंजू लामा ने १९४४ में बर्मा की ओर से लड़ते हुए जापान के दो टैंक नष्ट कर दिए थे। गंजू लामा की उम्र तिहत्तर वर्ष है। सिक्किम सरकार ने उनके नाम पर सड़क का नाम रखा है। उनको एक कार भेंट की गई।

कन्हैया का बालपन

नई दिल्ली। राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा का कहना है कि बच्चे कन्हैया का बालपन पढ़ें न कि जैक एंड जिल। वह कवि नजीर अकबराबादी के बारे में बोल रहे थे। 'कन्हैया का बालपन' कवि नजीर की बहुत मशहूर कविता है।

गोकुलम्

नई दिल्ली। यहां के मयूर विहार फेज-१ इलाके में गुरुवयूरप्पन मंदिर स्थित है। इसमें अब गोकुलम् भी बनाया गया है। गोकुलम् में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा धार्मिक विषयों पर भी चर्चा हुआ करेगी। इसका उद्‌घाटन मुख्य चुनाव अधिकारी श्री टी.एन. शेषन ने किया।

रंग-बिरंगी रूई

खंडवा। बर्फ जैसे सफेद रूई के गोले लेकिन अब रंग-बिरंगे फूलों जैसी रूई भी उगेगी। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, खंडवा के कपास वैज्ञानिक डा. के.सी. मंडलोई के अनुसार अब खेतों में खाकी, पीली, लाल, भूरी और नीली कपास उगेगी।

नया पौधा

वाशिंगटन। समुद्र में अक्सर मूंगों की चट्टानों पर गोल आकृतियां दिखाई देती है। गोताखोर इन्हें मोती समझ लेते हैं। लेकिन ये मोती नहीं एक प्रकार के पौधे हैं। इनका नाम जरूर 'समुद्री मोती' होता है।

वजन कम करें

सिंगापुर। सिंगापुर में बच्चों के वजन घटाने पर काफी ध्यान दिया जाता है। इसके लिए स्कूलों में संतुलित खान-पान और व्यायाम पर जोर दिया जाता है। लेकिन देखा गया कि छुट्टियों के दौरान अक्सर बच्चों का वजन बढ़ जाता है। घर पर रहकर बच्चों का वजन न बढ़े, इसके लिए माता-पिता को भी प्रशिक्षित किया जा रहा है।

सांसद वापस

कनाडा। ब्रिटिश कोलम्बिया,कनाडा का एक प्रांत है। यहां के मतदाताओं को अधिकार मिल गया है कि यदि उनके चुने हुए सांसद ठीक से काम न करें, तो वे उन्हें वापस बुला लें। यही नहीं यदि दस प्रतिशत मतदाता किसी खास कानून को बनवाने की मांग करते हैं, तो सरकार को वह कानून बनाना होगा।

छोटी उम्र बड़ी याद

नई दिल्ली। विभु सेठ की उम्र सिर्फ ढाई साल है। मगर ग्लोब या नक्शे को देखकर वह सत्तर देशों के सही नाम बता सकता है। हालांकि अभी उसे लिखना-पढ़ना भी नहीं आता। यदि कोई किसी देश का नाम गलत बताए, तो विभु उसकी गलती भी सुधार देता है।

बच्चे और पर्यावरण

पेरिस। यहां बच्चों का पर्यावरण शिखर सम्मेलन हुआ। इसमें आठ से लेकर बारह वर्ष तक के आठ सौ बच्चों ने भाग लिया। ये बच्चे छब्बीस देशों से आए थे। सम्मेलन में विशेष रूप से गंदी नदियों की सफाई के बारे में विचार किया गया। बच्चों का कहना था कि बड़े और समझदार लोग पर्यावरण को क्यों बिगाड़ते हैं, यह बात उनकी समझ में नहीं आती। कई बच्चों ने लुप्त हो रहे जीवों के बारे में भी चिंता प्रकट की।

नन्हे समाचार

☐ बिना आक्सीजन, अकेली ही एवरेस्ट शिखर पर पहुंचकर एलिसन हरग्रीव्स ने एक विश्व रिकार्ड बनाया है। स्काटलैंड की रहने वाली एलिसन विश्व की ऐसी प्रथम महिला हैं।

☐ अलास्का में नया कानून बना है जिसके अधीन नागरिक अब हाथी पाल सकते हैं। पहले इसकी अनुमति नहीं थी। यह कानून बना एक अनाथ हाथी माक्सी के कारण।

☐ चिली में एक ट्रक में लाखों मधुमक्खियां पेटियों में बंद सफर कर रही थीं। ट्रक उलट गया, मधुमक्खियां सब तरफ फैल गईं और छा गई सनसनी। लोग भागने लगे। पुलिस ने जगह-जगह लाउडस्पीकरों पर चेतावनी दी—घरों में रहो, गाड़ियों के शीशे बंद रखो।

☐ टोक्यो में अनोखी प्रदर्शनी हुई। पुराने वायुयानों और जलयानों के खिलौना माडल बिक्री के लिए रखे गए। हजारों शौकीनों ने वे माडल खरीदे।

☐ वैज्ञानिकों ने दक्षिणी ध्रुव पर हिम की मोटी परत के नीचे गरम पानी की विशाल झील का पता लगाया है। वैज्ञानिक हैरान हैं कि हिम से दबी होने पर भी उसका पानी जमता नहीं है।

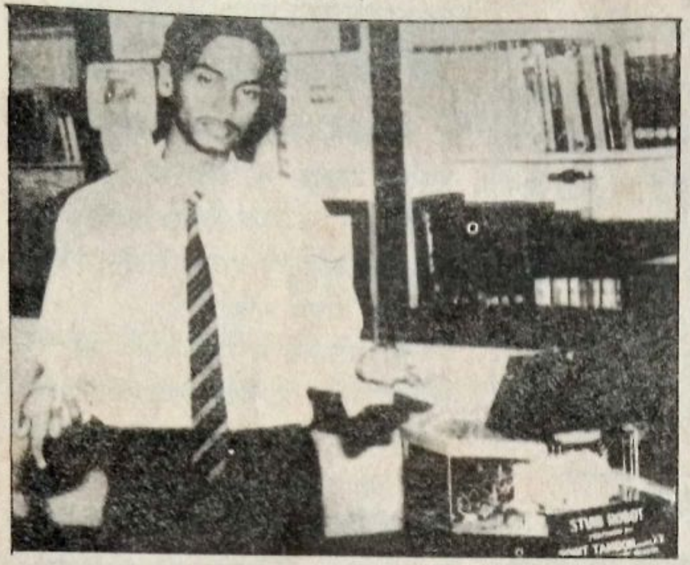
☐ वाराणसी की कृष्णा खन्ना ने एक कम्बल तैयार किया है, जो १५० फीट लम्बा और ९ फीट चौड़ा है। कहते हैं दुनिया में किसी एक व्यक्ति ने इतना लम्बा कम्बल कभी नहीं बनाया।

☐ ताइवान में जुड़वां लोगों की एक पार्टी हुई। उसमें एक हजार से अधिक जुड़वां व्यक्ति शामिल हुए। सबसे बूढ़ी बहनें थीं १०२ वर्ष की।

☐ दिल्ली चिड़ियाघर में दो कंगारू हालैंड से आए हैं और बदले में वहां दो सारस भेजे गए हैं।

☐ भारत कजाखस्तान में कारखाने स्थापित करेगा।

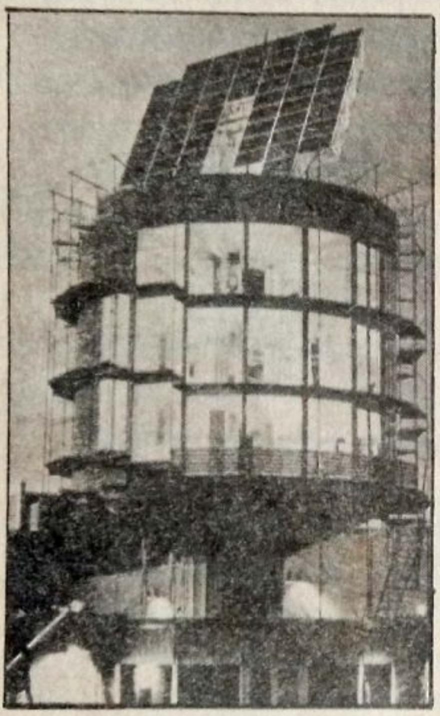
सचित्र समाचार



← लखनऊ के रोहित टंडन को अमरीका की रोबोट प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक मिला। वह सिटी मांटेसरी स्कूल में बारहवीं कक्षा में पढ़ता है।



→ पश्चिम बंगाल के चौबीस परगना जिले में कार्तिकचंद्र हालदार के खेत में साढ़े चार फीट की लौकी लगी थी। लौकी का वजन बीस किलोग्राम।



← जर्मनी का सौर ऊर्जा से चलने वाला सबसे बड़ा बिजलीघर। जिधर सूरज दिखता है, छत पर लगे यंत्र अपने आप ही उधर घूम जाते हैं।



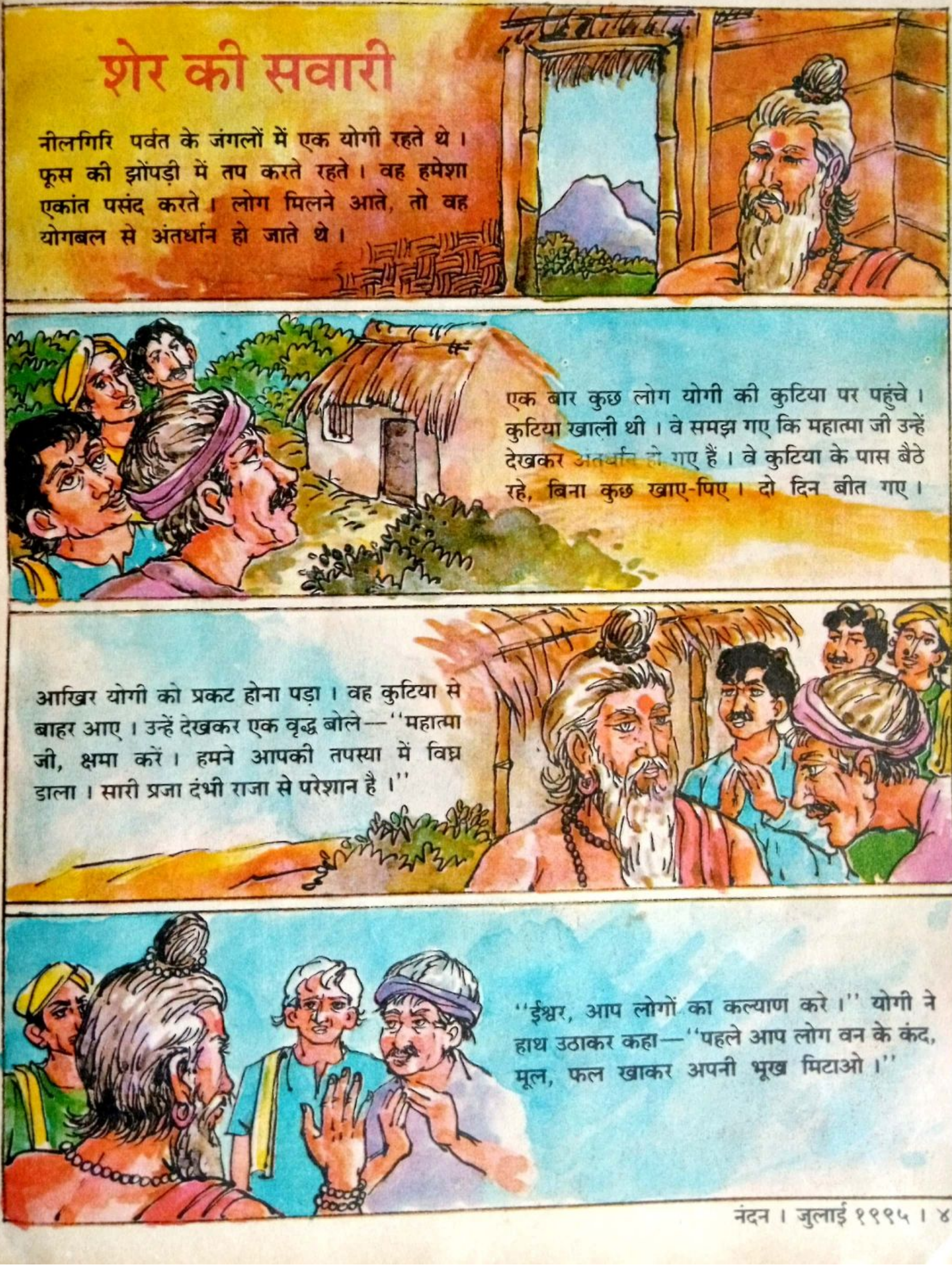
→ चार साल की जीजी स्ट्रालेन के नृत्य को देख ब्रिटेन के राजकुमार चार्ल्स भी मुग्ध हो गए।

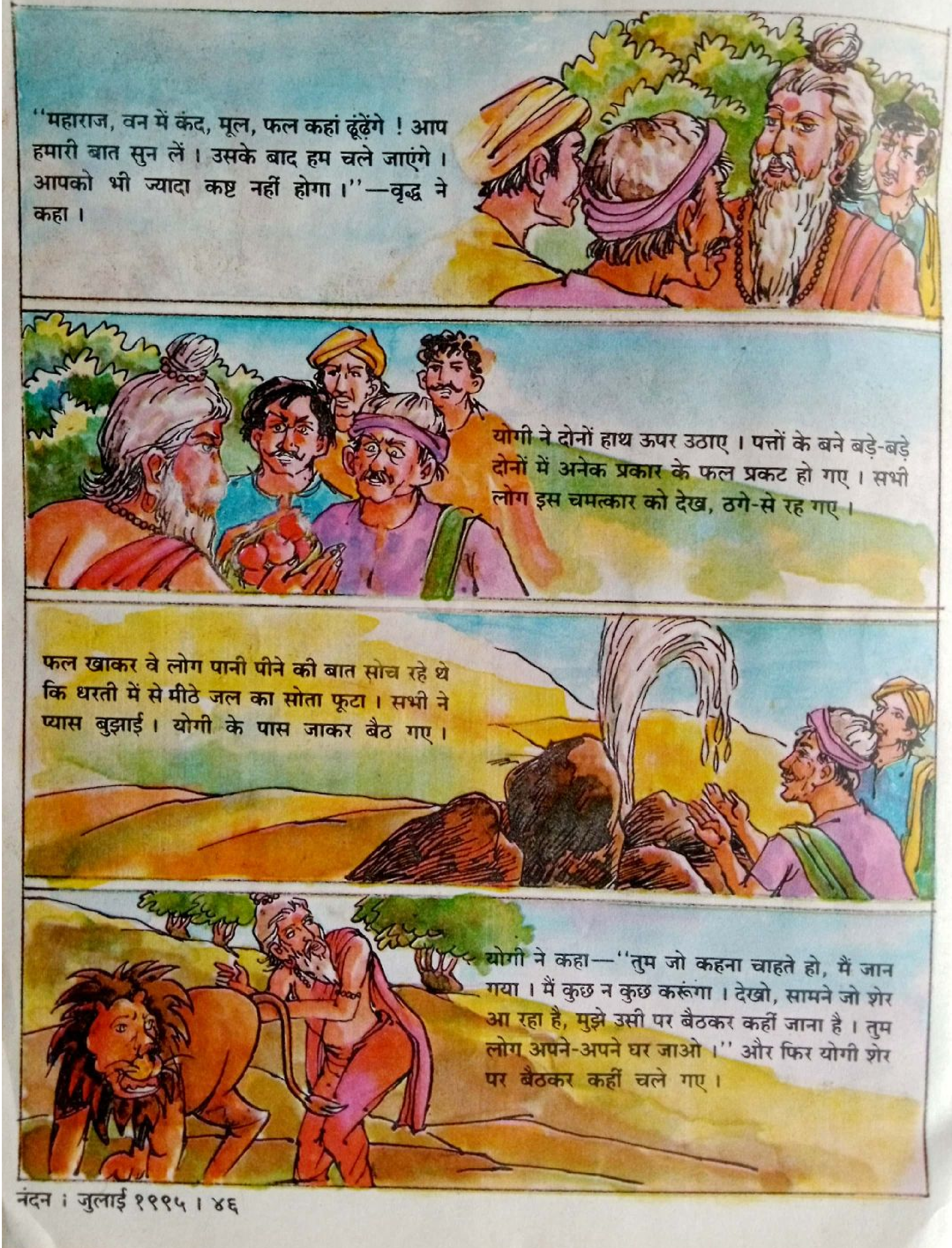


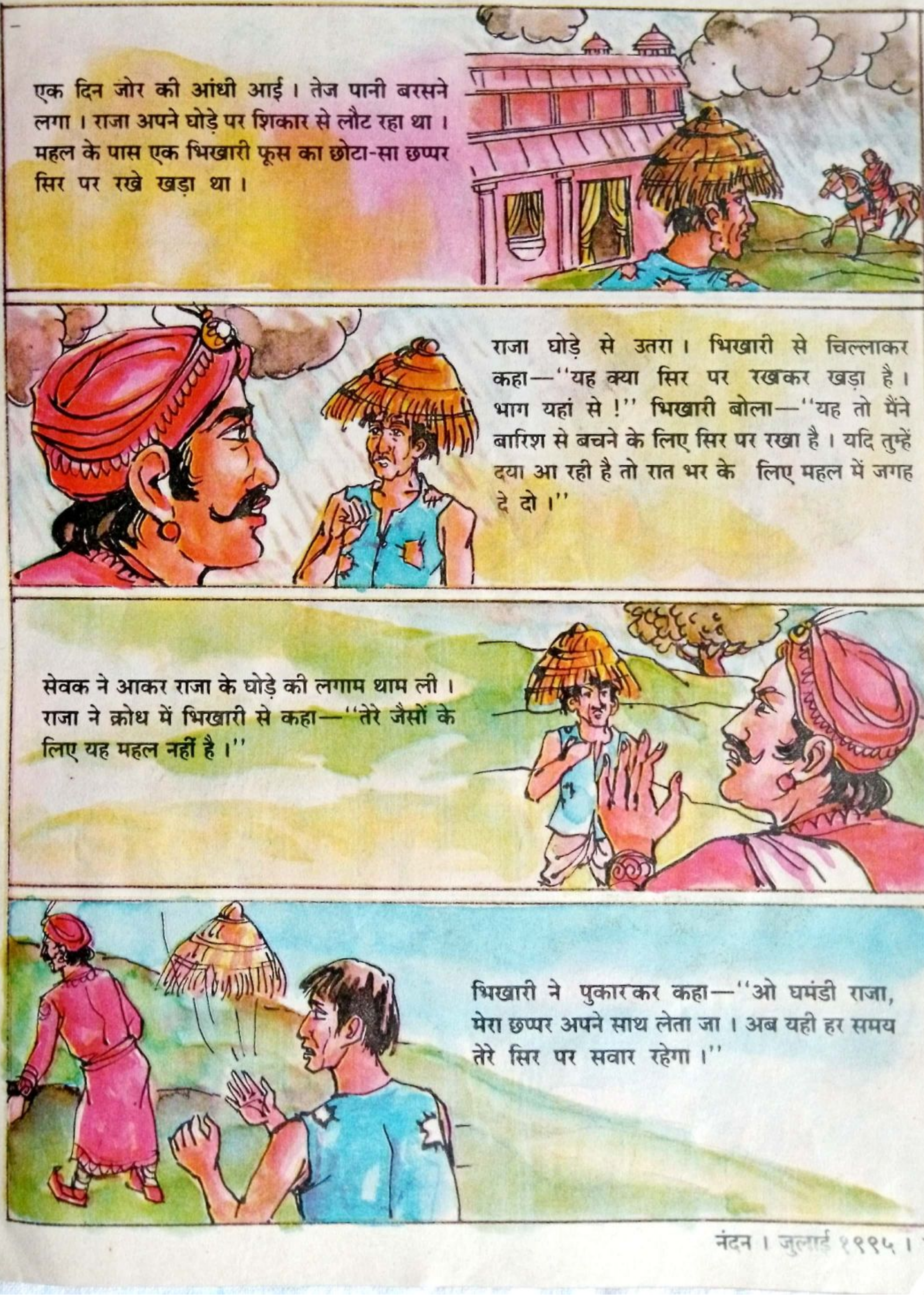
↑ बूंद-बूंद टपके : मेरी प्यास बुझे।



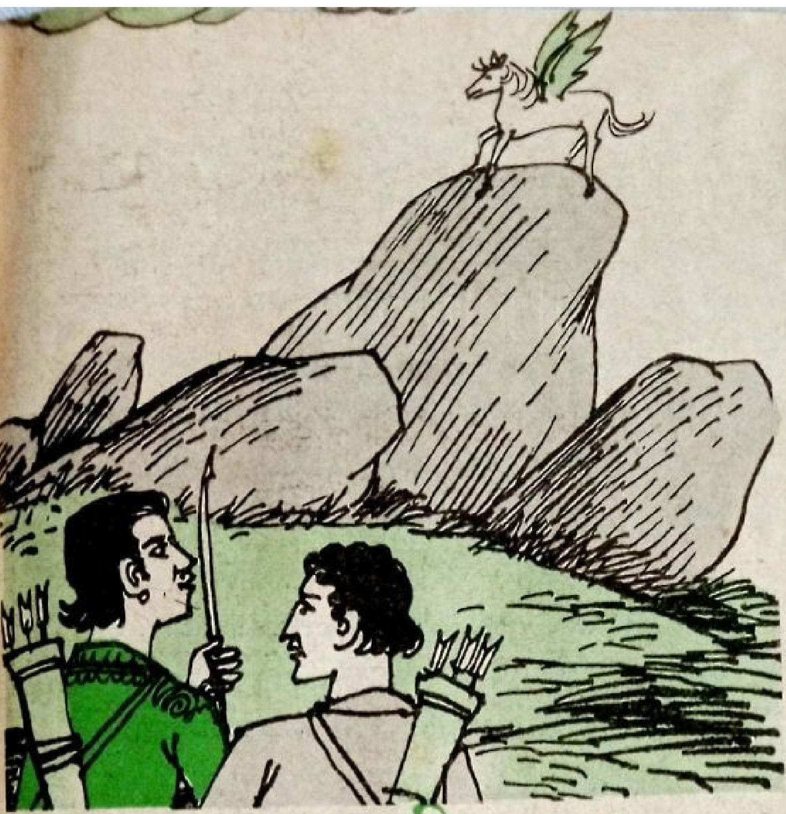
↑ दुनिया के दाढ़ी रखने वालों की प्रतियोगिता : जर्मनी के ग्वेनटर नेप को प्रथम पुरस्कार मिला।


शेर की सवारी
नीलगिरि पर्वत के जंगलों में एक योगी रहते थे। फूस की झोंपड़ी में तप करते रहते। वह हमेशा एकांत पसंद करते। लोग मिलने आते, तो वह योगबल से अंतर्धान हो जाते थे।
एक बार कुछ लोग योगी की कुटिया पर पहुंचे। कुटिया खाली थी। वे समझ गए कि महात्मा जी उन्हें देखकर अंतर्धान हो गए हैं। वे कुटिया के पास बैठे रहे, बिना कुछ खाए-पिए। दो दिन बीत गए।
आखिर योगी को प्रकट होना पड़ा। वह कुटिया से बाहर आए। उन्हें देखकर एक वृद्ध बोले—''महात्मा जी, क्षमा करें। हमने आपकी तपस्या में विघ्न डाला। सारी प्रजा दंभी राजा से परेशान है।''
''ईश्वर, आप लोगों का कल्याण करे।'' योगी ने हाथ उठाकर कहा—''पहले आप लोग वन के कंद, मूल, फल खाकर अपनी भूख मिटाओ।''


''महाराज, वन में कंद, मूल, फल कहां ढूंढ़ेंगे ! आप हमारी बात सुन लें । उसके बाद हम चले जाएंगे । आपको भी ज्यादा कष्ट नहीं होगा ।''—वृद्ध ने कहा ।
योगी ने दोनों हाथ ऊपर उठाए । पत्तों के बने बड़े-बड़े दोनों में अनेक प्रकार के फल प्रकट हो गए । सभी लोग इस चमत्कार को देख, ठगे-से रह गए ।
फल खाकर वे लोग पानी पीने की बात सोच रहे थे कि धरती में से मीठे जल का सोता फूटा । सभी ने प्यास बुझाई । योगी के पास जाकर बैठ गए ।
योगी ने कहा—''तुम जो कहना चाहते हो, मैं जान गया । मैं कुछ न कुछ करूंगा । देखो, सामने जो शेर आ रहा है, मुझे उसी पर बैठकर कहीं जाना है । तुम लोग अपने-अपने घर जाओ ।'' और फिर योगी शेर पर बैठकर कहीं चले गए ।


एक दिन जोर की आंधी आई । तेज पानी बरसने लगा । राजा अपने घोड़े पर शिकार से लौट रहा था । महल के पास एक भिखारी फूस का छोटा-सा छप्पर सिर पर रखे खड़ा था ।
राजा घोड़े से उतरा । भिखारी से चिल्लाकर कहा—''यह क्या सिर पर रखकर खड़ा है । भाग यहां से !'' भिखारी बोला—''यह तो मैंने बारिश से बचने के लिए सिर पर रखा है । यदि तुम्हें दया आ रही है तो रात भर के लिए महल में जगह दे दो ।''
सेवक ने आकर राजा के घोड़े की लगाम थाम ली । राजा ने क्रोध में भिखारी से कहा—''तेरे जैसों के लिए यह महल नहीं है ।''
भिखारी ने पुकारकर कहा—''ओ घमंडी राजा, मेरा छप्पर अपने साथ लेता जा । अब यही हर समय तेरे सिर पर सवार रहेगा ।''


भिखारी के सिर से उड़कर वह छप्पर राजा के सिर के ऊपर स्थिर हो गया। भिखारी भी लोप हो गया। राजा परेशान। सेवकों ने बहुत कोशिश की, मगर उनके हाथ बढ़ाने पर छप्पर और ऊपर उठ जाता।
राजा दरबार में जाकर बैठा। छप्पर उसके राजमुकुट के ऊपर तन गया। देखकर दरबारी हंसने लगे। राजा ने म्यान से तलवार निकालकर वार किया। छप्पर ऊपर उछल गया। वार से मुकुट नीचे आ गिरा।
राजा बहुत परेशान। एकाएक नीलगिरि वाले योगी वहां प्रकट हुए। राजा चकित। तपस्वी ने मुसकराकर कहा—''अरे, वाह! भिखारी के छप्पर ने सारा घमंड तोड़ दिया। इसी बलबूते पर दंभ में डूबे अपने को महान समझ रहे थे। इतने बड़े राजा होकर तिनकों का छप्पर सिर से नहीं गिरा सके। लाओ, मेरा छप्पर मुझे दे दो।''
क्षण भर में तपस्वी और छप्पर गायब हो गए। राजा का घमंड चूरचूर हो गया। बस, उसी दिन से राजा का मन बदल गया। वह प्रजा के साथ न्याय करने लगा।



खाली हाथ

—संदीप सौरभ

एक था अभयसेन। विनय नगर के राजा चंद्रसेन का पुत्र। मंत्री के बेटे निर्मल से उसकी गहरी दोस्ती थी। अभय को शिकार का बहुत शौक था।

एक दिन वे दोनों शिकार करने गए। घने जंगल में घूमते-घूमते उन्हें दोपहर हो गई पर कोई शिकार उनके हाथ नहीं लगा। वे बुरी तरह थक चुके थे। दोनों का प्यास से बुरा हाल था।

"क्या यहां कहीं पानी मिलेगा ?"—अभय ने पूछा।

"कुमार, आप यहीं ठहरें। मैं देखता हूं, पानी कहां मिल सकता है।"—निर्मल ने कहा और पानी की खोज में चल दिया।

थोड़ा आगे जाने पर निर्मल ने देखा कि सामने कुछ ही ऊंचाई पर पक्षी मंडरा रहे हैं। उसने अनुमान लगाया कि पानी आस-पास ही होना चाहिए। वह उसी दिशा में बढ़ गया।

कुछ दूर चलने के बाद उसे एक विशाल सरोवर दिखाई दिया। पानी देखकर वह अपनी प्यास भूल गया। उसे राजकुमार अभय का खयाल आया और वह बिना पानी पिए ही उसे बुलाने के लिए वापस चल दिया।

कुछ ही देर में निर्मल और अभय सरोवर के पास जा पहुंचे। दोनों ने भरपेट पानी पिया। तभी निर्मल की नजर जल की सतह पर पड़ी। उसे एक उड़ते हुए घोड़े की परछाईं दिखाई दे रही थी।

"राजकुमार, देखो उड़ने वाला घोड़ा !"—निर्मल चिल्लाया।

अभय ने उसकी ओर देखा। वह जल की ओर संकेत कर रहा था। अभय ने देखा, वहां कुछ भी नहीं था।

"यह क्या निर्मल, तुम तो मुझसे ही मजाक करने लगे ?"—अभय ने कहा।

"मैं सच कहता हूं कि मैंने अभी यहां पर उड़ने वाले घोड़े की परछाईं देखी थी।"—निर्मल बोला।

"तब तो जरूर तुमने सपना देखा होगा।"—अभय हंसा। निर्मल बहुत खिसियाया। इससे पहले कि वह कुछ कहता, तभी उन्हें किसी घोड़े के हिनहिनाने की आवाज सुनाई दी। दोनों ने उस ओर देखा जिधर से आवाज आई थी। सामने एक चट्टान पर एक बहुत सुंदर सफेद रंग का घोड़ा खड़ा था जिसके हरे पंख थे।

"देखा कुमार, मैंने कहा था न कि यहां एक उड़ने वाला घोड़ा मौजूद है।"—निर्मल उत्साहित होकर बोला।

"वह तो ठीक है, पर यह है कौन और कहां से आया है ? हमारी धरती पर तो इस तरह के प्राणी नहीं होते।"—अभय ने पूछा।

"यह तो यह घोड़ा ही बता सकता है।"—निर्मल ने उत्तर दिया।

"चलो, फिर इसी से पूछते हैं।"—अभय ने राय दी।

वे दोनों घोड़े की ओर बढ़े। किंतु जैसे ही घोड़े ने उन्हें अपनी ओर आते देखा, वह तुरंत आकाश में उड़ गया।

"अब क्या करें, वह तो गया।"—निर्मल ने राजकुमार की ओर देखा।

"किंतु हम उसका रहस्य जाने बिना नहीं जाएंगे ।"—अभय दृढ़ता से बोला ।

निर्मल ने उसे बहुत समझाया कि वह जिद न करे । पर राजकुमार अपनी बात पर अड़ा रहा ।

"पर कुमार, हम उसे ढूंढ़ेंगे कहां ?"—निर्मल ने हारकर पूछा ।

"हम उसकी यहीं प्रतीक्षा करेंगे । मुझे उम्मीद है कि वह यहां लौटकर जरूर आएगा ।"—अभय ने कहा ।

"यह भी तो हो सकता है कि वह हमें देखकर नीचे ही न उतरे ?"—निर्मल ने शंका प्रकट की ।

"यह तुम ठीक कहते हो, हम ऐसा करते हैं कि आस-पास ही कहीं छिप जाते हैं ।"—राजकुमार ने सुझाव दिया । फिर निर्मल से पूछा—"निर्मल, तुम्हारे सामान में रस्सी तो होगी ?"

"हां है तो, लेकिन आपको उसकी क्या आवश्यकता पड़ गई ?"—निर्मल ने हैरान होकर पूछा ।

"तुम रस्सी मुझे दो और चुपचाप देखते जाओ कि मैं क्या करता हूं ।"—अभय मुसकराया ।

निर्मल से रस्सी लेकर अभय ने उसे अपने साथ आने के लिए कहा । दोनों चट्टान के पास एक झाड़ी में छिप गए । वहां बैठे-बैठे बहुत रात हो गई । अब निर्मल से न रहा गया । उसने अभय को वापस चलने का सुझाव दिया । तभी उन्हें पंखों की फड़फड़ाहट की आवाज सुनाई दी ।

अभय चौकन्ना हो गया । उसने निर्मल को चुप रहने का संकेत किया और खुद उस रस्सी का एक फंदा तैयार करने लगा । इसके बाद उसने झाड़ी से बाहर झांका । उड़ने वाला घोड़ा उसी चट्टान पर खड़ा हुआ था ।

अभय ने निशाना बांध कर रस्सी उसकी ओर फेंकी तो फंदा घोड़े के गले में जा गिरा । अगले ही पल घोड़ा उनकी कैद में था । और वे दोनों झाड़ी से बाहर आ गए ।

"आप लोग कौन हैं, और मुझे क्यों पकड़ा है ?"—घोड़ा मनुष्यों की तरह बोला ।

"यही प्रश्न तो हम तुमसे करना चाहते हैं कि तुम कौन हो, कहां से आए हो ? तुम धरती के रहने वाले तो नहीं लगते ।"—राजकुमार ने पूछा । घोड़े ने कहा—" आप पहले मुझे फंदे से बाहर करो । तभी मैं आपके प्रश्नों का उत्तर दे पाऊंगा ।"

"नहीं, पहले तुम्हें हमारे प्रश्नों का उत्तर देना होगा ।"—राजकुमार बोला ।

—"हठ मत कीजिए कुमार ! आप मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध रोककर नहीं रख सकते । आप मुझे मुक्त कर दीजिए । मैं आपके प्रश्नों का उत्तर दे दूंगा ।"

अभय ने निर्मल की ओर देखा । निर्मल ने भी उस घोड़े की बात मान लेने की सलाह दी । अभय ने घोड़े के गले से फंदा निकाल दिया ।

घोड़े ने कहा—"मैं वीरकेतु हूं और परीलोक से आया हूं । परीलोक की रानी को इस सरोवर में खिलने वाले कमल के फूल की गंध बहुत प्रिय थी । उसने मुझे यह काम सौंपा हुआ था कि मैं प्रतिदिन धरती से कमल का फूल ले जाकर उसको दूं । आज भी मैं इसीलिए यहां आया था । पर जब मैंने आप दोनों को वहां देखा तो फूल तोड़ने के लिए जल में नहीं उतरा ।



क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि पृथ्वीवासी मेरे या परीलोक के बारे में कुछ जान सकें।''

''फिर तुमने हमें अपने बारे में सब कुछ क्यों बताया ?'' —अभय ने प्रश्न किया।

''क्योंकि मैंने आपको वचन दिया था। अब आपको भी एक वचन मुझे देना होगा। आप किसी को मेरे बारे में नहीं बताएंगे। वरना आप फिर कभी मुझे नहीं देख पाएंगे।''—यह बात राजकुमार अभय और निर्मल ने मान ली।

''क्या तुम हमें परीलोक की सैर करा सकते हो ?''-एकाएक अभय ने पूछा।

''क्षमा करें राजकुमार! यह संभव नहीं होगा।''—घोड़े ने खेद प्रकट किया।

''क्या हम इसका कारण जान सकते हैं ?''-अभय ने पूछा।

घोड़े ने बताया—''परीरानी का मानना है कि मानव की वास्तविक जगह धरती है। परीलोक में आने का उसे कोई अधिकार नहीं है। यदि कोई मनुष्य किसी तरह परीलोक में पहुंच भी जाए तो इसका मूल्य उसे अपने प्राणों से चुकाना होता है।''



''तुम्हारी रानी को मनुष्यों से इतनी घृणा क्यों है ?''—निर्मल ने प्रश्न किया।

''क्योंकि उन्हें डर है कि यदि मनुष्य परीलोक तक पहुंच गया तो झूठ, बेईमानी, लालच, हिंसा जैसी सारी बुराइयां परीलोक में भी फैल जाएंगी और वहां की सारी खुशहाली नष्ट हो जाएगी।''—घोड़े ने उत्तर दिया।

उसकी बात सुनकर दोनों मित्र सोच में डूब गए।

''अच्छा, अब मुझे अनुमति दीजिए वरना मुझे परीलोक लौटने में देर हो जाएगी।''-घोड़े ने कहा और सरोवर से कमल लेकर वह आकाश में उड़ गया।

वे राजमहल वापस लौटे। वहां सब लोग चिंता में डूबे थे। राजा चंद्रसेन ने अभय से पूछा—''इतनी देर कहां लग गई ?''

अभय ने टालने की बहुत कोशिश की पर राजा ने यही सवाल बार-बार पूछा। हारकर अभय को पूरी बात बतानी पड़ी।

—''ऐसा चमत्कारी घोड़ा हमारे पास होना चाहिए। मैं कल ही तुम्हारे साथ अपनी सेना भेजता हूं। जैसे भी हो, उसे पकड़कर लाओ।''

अभय ने राजा को बहुत समझाया कि ऐसा करना विश्वासघात होगा पर वह टस से मस न हुआ।

अगले दिन शाम को अभय सेना के साथ सरोवर के पास जा पहुंचा। उन्हें प्रतीक्षा करते-करते काफी देर हो गई पर घोड़े का दूर-दूर तक कोई पता नहीं था।

निराश होकर वे लौटने लगे, तभी अभय को पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी।

''मैं यहीं हूं, तुम्हारे सामने।''—उसे घोड़े की आवाज सुनाई दी। वह कह रहा था—''पर मैंने तुमसे कहा था कि अगर तुमने किसी को मेरे बारे में बताया तो तुम मुझे कभी नहीं देख पाओगे। मेरे खयाल से अब तुम्हें यह बात अच्छी तरह समझ आ गई होगी कि हमारी रानी मनुष्यों से क्यों घृणा करती हैं। अब जाओ, भविष्य में हम कभी नहीं मिलेंगे।''

राजकुमार के पास कोई उत्तर न था। भारी मन के साथ वह खाली हाथ ही महल लौट गया। ●

बादल आया धरती पर

—अमर गोस्वामी

टुनटुन को उस दिन दोपहर में नींद नहीं आई तो वह उठकर छत पर चला गया। दोपहर को इस तरह छत पर धूप में खेलने से टुनटुन की मां उस पर बिगड़ती थी, मगर वह बेहद जिद्दी लड़का था। अपनी मां की बात नहीं मानता था। वह अपनी पढ़ाई पर भी ध्यान नहीं देता था, इसलिए उस दिन उसके पिता ने भी उसे डांटा था। गरमी की दोपहरी में घर के लोग सो गए, तो वह दबे कदमों से रोज की तरह छत पर चला गया

छत पर टुनटुन बेमतलब चहलकदमी कर रहा था। उसने देखा, एक गौरैया दाने की तलाश में छत पर फुदक रही है। इतने में जाने कहां से एक बिल्ली आकर उसकी ओर झपटी। वह गौरैया बिल्ली के पंजों में आने ही वाली थी कि टुनटुन ने बिल्ली के पीछे दौड़कर उसे भगा दिया। बिल्ली मुंडेर पर चढ़कर नीचे कूद गई। गौरैया भी आसमान में उड़ गई। टुनटुन ने गौरैया की जाने वाली दिशा में देखा, तो उसे बादल का छोटा-सा टुकड़ा आसमान में तैरता नजर आया। सफेद रंग का वह बादल का टुकड़ा देखते-देखते अपना रंग बदलने लगा। टुनटुन को बड़ी हैरानी हुई। वह बादल इंद्रधनुष के सात रंगों में रंगा हुआ नजर आने लगा।

टुनटुन ने उस बादल की ओर देखकर अपना हाथ हिलाया। उसके हाथ हिलाते ही वह बादल उड़ता हुआ नीचे आने लगा। बादल का टुकड़ा टुनटुन के एकदम करीब आ गया। टुनटुन ने घबराकर अपनी आंखें बंद कर लीं। सतरंगे बादल ने कहा—"टुनटुन आंखें खोलो। मैं तुम्हारा दोस्त हूं।"

टुनटुन ने बादल के मुंह से अपना नाम सुनकर आंखें खोल दीं। बादल को बोलते देखकर उसे बड़ी हैरानी हुई। उसकी ठंडी छांव उसे बहुत अच्छी लगी।



वह उस सतरंगे बोलते बादल को चकित होकर देखता ही रह गया।

सतरंगे बादल ने कहा—"टुनटुन, तुम मुझसे बात नहीं करोगे?"

टुनटुन बोला—"तुम बात कर सकते हो? मैं तो सिर्फ यही जानता था कि बादल बस गरजते हैं या बरसते हैं।"

सतरंगे बादल ने कहा—"टुनटुन, बादल भी बात करना चाहते हैं, मगर हम बादलों से कोई बात नहीं करता। तुम मुझे दोस्त बना लो। हम दोनों खूब बातें करेंगे।"

टुनटुन ने कहा—"ठीक है, आज से तुम मेरे दोस्त हो गए। मगर आज मेरा मन बातें करने का नहीं है। इसलिए कि आज मैं बेहद उदास हूं। जब देखो घर में मुझे डांट सुनने को मिलती है। छुट्टियों में घर बैठा-बैठा ऊब गया हूं। कहीं दूर घूमने को मेरा मन करता है।"

सतरंगे बादल ने कहा—"मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें ऐसी जगह ले चलूंगा जहां तुम्हारा मन बहल जाएगा। वहां सभी तुमसे प्यार करेंगे, कोई डांटेगा नहीं।"

टुनटुन ने कहा—"कहां ले जाओगे मुझे?"

—"बस अपनी आंखें बंद कर लो। फिर खुद ही देख लेना।"

टुनटुन ने आंखें बंद कर लीं। दूसरे ही क्षण उसे

लगा, जैसे वह बेहद हल्का होकर उड़ रहा है, किसी चिड़िया की तरह। थोड़ी देर बाद उसने पूछा—"बादल दोस्त, अब मैं आंखें खोल दूं ?"

सतरंगे बादल ने कहा—"हां ?"

टुनटुन ने आंखें खोलकर देखा, उसके चारों तरफ एक अलग ही दुनिया थी। चारों तरफ हरियाली। तरह-तरह के फलों से लदे हुए सुंदर-सुंदर पेड़-पौधे। उन पर चिड़ियां चहक रही थीं। चारों तरफ चांदनी का उजाला छाया हुआ था। आसपास जगमगाते हुए सितारे नजर आ रहे थे, जिन्हें हाथ बढ़ाते ही छुआ जा सकता था। टुनटुन ने एक बहुत सुंदर, सबसे ज्यादा जगमगाते हुए सितारे को छू लिया। वह बेहद ठंडा और बेहद कोमल था। उसे छूते ही टुनटुन का मन बेहद हल्का हो गया। वह जैसे अपने मन को देख रहा था। टुनटुन के साथ जैसे वह भी खुशी से नाच रहा था। उसके मन ने कहा—"टुनटुन, तुम कितने अच्छे हो! मुझे इतना हल्का कर दिया।"

टुनटुन ने कहा—"अरे, तुम भी बोल सकते हो ?"

मन ने कहा—"मैं तो बोलता ही हूं, पर तुम्हीं मेरी बातें नहीं सुनते थे। तुम अपने गुस्से, झगड़े और अपनी मनमानी के आगे मेरी चलने ही नहीं देते थे। मगर अब तुम बदल गए हो।"

टुनटुन ने जिस सितारे को छुआ था, वह एक सुंदर परी में बदल गया। परी हंसकर बोली—"टुनटुन, तुम तो खुद से ही बातें किए जा रहे हो। मुझसे बातें नहीं करोगे ?"

टुनटुन ने चकित होकर पूछा—"तुम कौन हो ?"

वह बोली—"मैं परियों की राजकुमारी हूं। तुम परीलोक में आ गए हो। मैं तुम्हारा स्वागत करती हूं। आओ, तुम्हें यहां की सैर कराऊं।"

टुनटुन ने पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है ?"

परी बोली—"मेरा कोई नाम नहीं है।"

टुनटुन के मुंह से निकला—"नाम नहीं तो पहचान कैसे बनेगी ?"

परी हंसने लगी। बोली—"नाम और पहचान के चक्कर में ही सारा झगड़ा होता है।"

टुनटुन के मन ने कहा—"वाकई, मैं यहां आकर हल्का तो हो ही गया हूं। मुझे लग रहा है कि मैं इतना बड़ा हो गया हूं कि यहां के सभी रहनेवाले मुझमें समा गए हैं। साथ ही मैं इतना छोटा हो गया हूं कि सभी के दिलों में समा गया हूं।"

परी खिलखिलाकर हंसने लगी। टुनटुन को अपने मन की बातें अनोखी और बेहद अच्छी लगीं।

परी ने एक सतरंगी चिड़िया को बुलाकर उससे कहा—"तुम टुनटुन को परी लोक के बाग की सैर करा दो। पेट भरकर फल खिलाओ। सैर कराने के बाद फिर मेरे पास पहुंचा देना।"

सतरंगी चिड़िया टुनटुन को परीलोक की सैर कराने लगी। टुनटुन ने देखा, विशाल बाग में चारों तरफ फलों के ही पेड़ थे। मगर वे सभी छोटे-छोटे पेड़ थे। पेड़ तरह-तरह के फलों से लदे थे। वे पेड़ भी सतरंगे थे। उन पर लगे आम, सेब, अनार, अंगूर आदि फल तथा बादाम, अखरोट, काजू आदि मेवे भी सतरंगे नजर आ रहे थे। सतरंगी चिड़िया के साथ बाग की सैर करते-करते टुनटुन थक गया। तब उस चिड़िया ने टुनटुन को घास पर एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिए बिठा दिया। अपनी चोंच से तोड़-तोड़कर उसके सामने फलों और मेवों के ढेर लगा दिए।

टुनटुन ने खुश होकर एक सेब उठाकर चखा। उसका स्वाद उसे टाफियों जैसा लगा। उसने एक अंगूर मुंह में डाला। वह बिल्कुल मीठी गोली जैसा लगा। आम को चूसते वक्त उसे लगा जैसे वह आइसक्रीम खा रहा था। मेवों के स्वाद उसे बिसकुटों जैसे लगे। उसने एक संतरा चखा जो उसे ठंडी कॉफी की तरह लगा। उसे बड़ा मजा आया। ऐसे स्वाद की उसने कभी कल्पना नहीं की थी।

सामने चलती-फिरती नन्ही-नन्ही चीजों को देखकर टुनटुन ने पूछा—" ये सब क्या हैं ?"

सतरंगी चिड़िया बोली—"ये परीलोक के जानवर हैं।"

टुनटुन ने देखा–वे सभी खिलौनों की तरह छोटे-छोटे थे और उन सभी का रंग भी सतरंगा था। उसके मन ने कहा—"टुनटुन, चलो इनके साथ खेलें।"

जहां वे सभी जानवर आपस में मिल-जुलकर खेल रहे थे, वहां वह चिड़िया टुनटुन को ले गई। वे सभी जानवर देखने में सुंदर थे, उनकी आवाज भी बड़ी सुरीली थी। उसने कुत्ते को भौंकते हुए सुना, तो लगा जलतरंग बज रहा हो। शेर ने जब दहाड़ा तो लगा, तबला बज रहा था।

टुनटुन ने पूछा—"ये सभी जानवर आपस में खेल रहे हैं, क्या वे कभी एक-दूसरे से झगड़ा नहीं करते ?"

सतरंगी चिड़िया ने कहा—"कभी नहीं।"

सतरंगी चिड़िया के साथ टुनटुन को देखकर वहां खेल रहे सारे जानवर उनके आसपास इकट्ठे हो गए। उन जानवरों में शेर, चीता, हाथी, अजगर, गैंडा, जिराफ, खरगोश, मेमने सभी शामिल थे। टुनटुन ने देखा कि शेर और खरगोश सभी के कद एक ही जैसे थे। सभी इतने सुंदर इंद्रधनुषी रंगों के थे कि टुनटुन उन्हें प्यार किए बिना रह नहीं पाया। शेर उसकी गोद में आकर कुत्ते की तरह दुम हिलाने लगा और मेमने की तरह उछलने लगा। जिराफ अपनी लम्बी गर्दन से टुनटुन के कान को गुदगुदाने लगा। टुनटुन ने हंसते हुए कहा, "ठहर,इतना मत गुदगुदा।" नन्हा खरगोश टुनटुन की गोद में आने के लिए मचल रहा था। हाथी ने अपनी सूंड़ से उठाकर उसे टुनटुन के कंधे पर बिठा दिया। खरगोश ने टुनटुन के कान में सीटी बजा दी।

टुनटुन ने कहा—"अच्छा, अच्छा, अपनी शरारतें छोड़ो। बताओ, तुम सबको कोई गाना आता है ?"

यह सुनते ही सभी ने मिलकर इतना मधुर गीत सुनाया, जिसे सुनकर टुनटुन की तबीयत खुश हो गई।

कुछ देर बाद सतरंगी चिड़िया ने कहा—टुनटुन, अब चलें। परियों की राजकुमारी हमारी प्रतीक्षा कर रही होंगी।"

टुनटुन सतरंगे बादल और अपने मन के साथ परी राजकुमारी के पास जाने के लिए चल पड़ा।

परी राजकुमारी उसे देखते ही बोली—"आओ, तुम्हें यहां के एक समारोह में ले चलें।" फिर उसने बताया—"परीलोक में हर साल अपने-अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ आचरण करने वालों को पुरस्कृत किया जाता है। इसका चुनाव सतरंगा बादल खुद करता है। इस बार उसीने तुम्हें मुख्य अतिथि चुना है। असल में यह भी परी देश का राजकुमार है, जो इस तरह वेश बदलकर धरती पर जाता है।"

टुनटुन ने सतरंगे बादल की ओर देखा। वह अब अपना रूप बदलकर राजकुमार बन गया था। उसने मुसकराते हुए टुनटुन के सिर पर हाथ फेरा।

परियों की राजकुमारी टुनटुन को समारोह स्थल पर ले आई। वहां पर परीलोक की परियों और वहां के बाकी रहने वालों की भीड़ इकट्ठी थी। इस बार पुरस्कार परीलोक के जानवरों को दिया जाना था, इसलिए वहां पर सभी जानवर भी अपनी-अपनी जगह पर खामोश होकर बैठे हुए थे।

टुनटुन ने पुरस्कार देना शुरू किया। सबसे पहले उसने वर्ष के सबसे ज्यादा सुरीले गायक के रूप में कौए को पुरस्कार दिया। बाघ को उसने सबसे ज्यादा सहनशील होने का पुरस्कार दिया।

अब मुख्य अतिथि के तौर पर टुनटुन से भी कुछ कहने के लिए कहा गया। टुनटुन को बड़ी देर तक समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे। काफी देर तक चुप रहने के बाद उसने इतना ही कहा—"मैं भी आप सबकी तरह भला बनना चाहता हूं। अब मैं भी किसी का मन नहीं दुखाऊंगा।"

इसके बाद बादल उसे धरती पर उसी जगह छोड़ गया। टुनटुन खड़ा-खड़ा हैरानी से देखता रह गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह परीलोक की सैर करके लौट आया है। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- **पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं ।**
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी ।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा ।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा ।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी । इसका निर्णय सम्पादक करेंगे । उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा । किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है ।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता ।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी । भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ ।**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी ।

संकेत

बाएं से दाएं

१. अचानक बौने राजकुमार को— में छिपा हिरन नजर आ गया । (घाटी/घास)

२. जी हां जहांपनाह, मैं— को विशालकाय हाथी में बदल सकता हूं । (सूई/सूप)

४. क्या कहा,— ने इतना सूत कात डाला ! (बूढ़े/बूआ)

८. अरे, दादा जी की— उड़कर यहां आई कैसे ? (छत/छड़ी)

९. तो क्या उसे जमीन— गई ? (खा/पी)

११. इन छुट्टियों में क्यों न सब मिलकर घूमें, जी भर— ! (गाएं/ खाएं)

१२. कभी फुर्सत में सुनो इसका भी संगीत !

ऊपर से नीचे

३. चलो-चलो, सब्ज परी— गई है, उसको समझाएं ! (रूठ/बैठ)

५. मगर मंत्री जी, हमारी— तो अभी छोटी सी है । (सेना/मीना)

६. आखिर उसी— ने उसके प्राण ले लिए आचार्य ! (बाण/बाज)

७. सुना है, राजकुमारी को— पसंद हैं । (लाल/फूल)

१०. भारत का एक पड़ोसी देश ।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३१९

नाम ____________________

उम्र __________ पता ____________________

____

____

१ घा			२ सू			३
	४ बू					ठ
५			६ बा		७	
ना					ल	
	८ छ			९		१०
११	एं	अंतिम तिथि: १५.७.९५				टा
	१२	न		रा		

नं. ज्ञा. प. ३१९

सोने का रथ

—शांता ग्रोवर

चार भाई थे। उनमें तीन विवाहित और एक कुंआरा। कुंआरे का नाम था सुगंध। बड़ा अच्छा स्वभाव पाया था उसने। उसकी तीनों भाभियां इसी होड़ में रहती थीं कि सुगंध उनके बताए रिश्ते में शादी कर ले।

एक दिन बड़ी भाभी ने सुगंध को एक लड़की की तस्वीर दिखाई। सुगंध ने तस्वीर देख कर भी शादी की न कर दी। भाभी को उस पर बहुत गुस्सा आया। वह बोली—"सुगंध, तुम्हें कोई भी लड़की पसंद नहीं आती। क्या तुम्हारे लिए कोई परी आसमान से उतरेगी जिससे तुम शादी करोगे।"

सुगंध चिढ़कर बोला—"हां, मैं तो किसी परी से ही शादी करूंगा।"

दूसरी भाभियां सुगंध की बात सुनकर हंसने लगीं। वे हंसकर बोलीं—"क्या तुम्हें घर बैठे ही परी मिल जाएगी?"

सुगंध को बहुत गुस्सा आया। वह बोला—"मैं अभी इस घर से जा रहा हूं और परी से शादी करके ही घर लौटूंगा।"

सुगंध ने सुन रखा था कि परियां रात में किसी सुनसान जगह पर आती हैं। वह घर से निकला और एक जंगल में जा पहुंचा। रात होने का इंतजार करने लगा। रात हुई और बीत गई। परियां नहीं आईं।

सुगंध भूखा-प्यासा एक पेड़ के नीचे बैठा रहा। नींद और थकान से उसका बुरा हाल था। उसकी आशा निराशा में बदल गई थी। लेकिन सुगंध का निश्चय अटल था।

पूर्णिमा की रात थी। चांदनी चारों ओर बिखरी थी। सुगंध उदास बैठा था। उसे झपकी आ गई। सहसा कुछ परियां आसमान से उतरीं। वे जंगल में घूमने लगीं। तभी एक नीलपरी की नजर सुगंध पर पड़ी। वह दूसरी परियों से बोली—"देखो, जंगल में इंसान! चलो, यहां से निकल जाते हैं।"

सफेद परी बोली—"सखी, उसकी तरफ जरा ध्यान से देखो। वह बहुत उदास लग रहा है। हमें उसकी उदासी दूर करनी चाहिए।"

"न बाबा न, हमें किसी मुसीबत में नहीं पड़ना। हम तो वापस जा रही हैं, तुम्हीं उसकी उदासी दूर करो।"—यह कहकर दूसरी सभी परियां लौट गईं। केवल सफेद परी वहां रह गई।

वह धीरे-धीरे चलती हुई सुगंध के पास जा पहुंची। उसने बांसुरी बजाना शुरू किया। बांसुरी की आवाज सुनकर सुगंध ने आंखें खोलीं।

परी पूछने लगी—"क्या नाम है तुम्हारा? इस जंगल में उदास बैठे क्या कर रहे हो?"

सुगंध ने अपना नाम बताकर परी से पूछा—"क्या तुम सचमुच में परी हो?"

—"हां, मैं परी ही हूं और मेरा नाम सफेद परी है। लेकिन तुमने बताया नहीं कि तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"मैं परी से शादी करने यहां आया हूं।"—सुगंध





बोला।

"परी से शादी ! क्यों ?"—परी ने पूछा।

"परियां बहुत सुंदर और दयालु होती हैं।"—सुंगध बोला।

"इस धरती पर परियों से भी सुंदर लड़कियां हैं। तुम ऐसी लड़की की तलाश कर उससे शादी कर लो।"—परी सुगंध को समझाते हुए बोली।

"मैंने तो अपना घर यह कहकर छोड़ा था कि मैं तो परी से ही शादी करूंगा। इसलिए आप मुझसे शादी कर लीजिए।"—सुगंध बोला।

"हम परियां किसी मनुष्य से शादी नहीं कर सकतीं। हमारा और तुम्हारा रहन-सहन अलग तरह का होता है। हम इस लोक में नहीं रह सकतीं इसलिए तुम यह जिद छोड़ दो।"—परी बोली।

"लेकिन घरवालों से किए वायदे का क्या होगा ?"— सुगंध बोला।

—"तुम किसी सुंदर लड़की को देखकर उससे शादी कर लो। घरवाले उसकी सुंदरता देखकर अपने आप कह उठेंगे कि वाह ! क्या परी से शादी की है।"

"मुझे ऐसी लड़की मिलेगी कहां ?"—परेशान सुगंध ने कहा।

"इस काम में मैं तुम्हारी मदद करूंगी।"—परी बोली। वह सुगंध को लेकर उड़ चली एक गांव की ओर। गांव में पहुंचते ही सुगंध की नजर एक लड़की पर पड़ी। वह कुएं से पानी खींच रही थी। सुगंध उसकी सुंदरता देखकर मोहित हो गया। परी उससे पूछने लगी—"सुगंध, अब बताओ, यह लड़की अधिक सुंदर है या मैं।"

"यह मैं कैसे बता सकता हूं ?"—सुगंध झिझकता हुआ बोला।

"नहीं, सच-सच बताओ। मुझे बुरा नहीं लगेगा।"—परी ने कहा।

"वह आप जैसी ही सुंदर है।"—सुगंध ने कहा।

"तो फिर तुम उससे शादी करोगे ?"—परी ने पूछा।

सुगंध ने हां में गर्दन हिलाई। बोला—"लेकिन इसके मां-बाप क्या मुझ अनजान के साथ इसकी शादी करने के लिए तैयार होंगे ?"

"इस बात की तुम चिंता मत करो।"—यह कहकर परी ने उसी गांव की एक बुढ़िया का वेश बनाया। फिर वह सुगंध के साथ उसी लड़की के घर पहुंच गई। वहां एक अधेड़ व्यक्ति बैठा मिट्टी के बरतन बना रहा था। परी सुगंध से बोली—"इस लड़की का पिता कुम्हार है। तुम्हें गरीब घर में रिश्ता करने में कोई एतराज तो नहीं ?"

"नहीं, मुझे कोई आपत्ति नहीं।"—सुगंध ने उत्तर दिया।

अधेड़ आदमी बरतन बना रहा था। उसकी लड़की उनमें रंग भर रही थी। परी अधेड़ व्यक्ति से बोली—"राम-राम भइया।"

"अरे मौसी, आज सुबह-सुबह तुम हमारे यहां कैसे ?"—कुम्हार बोला।

"मैं तुम्हारी बिटिया के लिए एक बहुत अच्छा रिश्ता लाई हूं। यह मेरी बहन का लड़का सुगंध है। इसका रूप तो तुम देख ही रहे हो। यह वीर और दयालु है। तुम्हारी बेटी के लिए योग्य वर है।"—बुढ़िया बोली।

कुम्हार ने सुगंध की तरफ जांचने वाली नजरों से

देखा। बोला—"मौसी, मुझे लड़का तो पसंद है लेकिन मेरी एक शर्त है।"

कौन-सी शर्त !"—बुढ़िया ने पूछा।

"मौसी में चाहता हूं कि यह मुझे घड़े बनाकर दिखाए।"—कुम्हार बोला।

"हमें तुम्हारी शर्त मंजूर है।"—यह कहकर बुढ़िया ने सुगंध को कुम्हार के चाक पर घड़े बनाने के लिए कहा।

सुगंध ने घड़ा बनाना शुरू किया। उसे घड़ा बनाना नहीं आता था। उसके हाथ से मिट्टी कोई आकार लेने से पहले ही नीचे गिर जाती थी। वह बुढ़िया की ओर देखने लगा। बुढ़िया ने चुपके से उसे एक छड़ी दी। सुगंध छड़ी से चाक घुमाने लगा। घड़े इतने सुंदर बनने लगे कि कुम्हार हैरान रह गया। अधेड़ व्यक्ति बोला—"मौसी, मुझे यह रिश्ता मंजूर है।"

बुढ़िया ने तुरंत सारा इंतजाम कर सुगंध की उस लड़की से शादी करा दी। सुगंध दुलहन लेकर घर की ओर चल पड़ा। रात होने वाली थी। बुढ़िया अपने असली रूप में आ गई।

सुगंध बोला—"आपने मेरी बहुत मदद की है। मैं आपका शुक्रिया कैसे अदा करूं ?"

"तुम हमेशा दूसरों की मदद करना। इसी तरह मेरा शुक्रिया अदा होगा। मैं तुम्हें सोने का रथ उपहार के रूप में देती हूं।"—ऐसा कहकर परी ने हवा में हाथ घुमाया। कुछ ही देर में वहां घोड़ों समेत एक रथ आ खड़ा हुआ।

परी बोली—"तुम इसमें बैठकर कुछ देर बाद अपने घर पहुंच जाओगे।"

सुगंध पत्नी के साथ रथ में बैठ कर घर पहुंचा। सुगंध की भाभियां सोने के रथ में उसे और उसकी दुलहन को देखकर हैरान रह गईं। बोलीं—"सुगंध, क्या सचमुच तुम परी से शादी करके आए हो ?"

"नहीं भाभी, परी से तो नहीं लेकिन परी जैसी लड़की से शादी करके आया हूं।"—सुगंध हंसते हुए बोला।

लो खजाना

—नागेश पांडेय 'संजय'

दक्षिण में एक स्थान है—मांडलेश्वर। बहुत दिन पहले वहां एक बहेलिया रहता था। उसका नाम था सुमुख। वह रोज सुबह जाल लेकर जंगल निकल जाता और अजीबो गरीब पक्षी पकड़ता। उन्हें बड़े सेठों को ऊंचे दामों पर बेचता। यही उसकी जीविका थी।

बहेलिया होकर भी वह बड़ा दयालु था। कभी भी पक्षियों को मारता नहीं था जिनके हाथ बेचता, उन्हें भी न मारने की शर्त पर। एक दिन जब वह जाल बिछाकर आम के एक पुराने पेड़ के नीचे बैठा था, उसे एक भयंकर फुंकार सुनाई दी। उसके रोंगटे खड़े हो गए। यह एक नाग था। वह फन फैलाए उसके ठीक सामने खड़ा था। सुमुख की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। अगले ही पल उसकी मौत निश्चित थी। वह कुछ सोच पाता, इससे पहले एक बाज उधर से गुजरा और झपट्टा मार कर नाग को अपनी चोंच में दबा कर उड़ चला।



सुमुख ने चैन की सांस ली। नजर उठाकर देखा, बाज उड़ा चला जा रहा था। चोंच में दबा नाग दर्द से तड़प रहा था। सुमुख पसीज गया। उसने देर न की, तुरंत कमान पर तीर चढ़ाकर छोड़ा। तीर निशाने पर लगा। बाज और नाग नीचे आ गिरे। नाग एकदम शांत-सा पड़ा रहा। फिर गायब हो गया। बाज मर गया था।

सुमुख का मन भारी-सा हो गया। उसने बिछे हुए जाल को समेटा और वापस अपने घर चल दिया। अभी वह कुछ ही दूर चला होगा कि उसे लगा, जैसे कोई चीज उसके पैरों से लिपट गई हो। यह नाग था। सुमुख के पसीने छूट गए। कांपते हुए उसके मुख से निकला—''नागदेव, क्यों मेरे प्राण चाहते हो?''

''प्राण नहीं, तुम्हारी दया की भीख!'' —नाग को मनुष्य की आवाज में बोलता देख, सुमुख घबरा गया। फिर भी उसने साहस बटोर कर पूछा—''दया की भीख!''

''हां, मैं तुम्हारे दयालु स्वभाव को देख चकित हूं। जिस पेड़ के नीचे तुम बैठे थे, वहीं मेरा निवास है। मैं वहां वर्षों से एक खजाने की रक्षा कर रहा हूं। चाहता हूं, वह धरोहर तुम स्वीकार कर लो। सारा जीवन आराम से रहोगे। तुम ईमानदार व्यक्ति हो। मैं इसीलिए यह सब कह रहा हूं।'' नाग की बात सुन, सुमुख कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा। फिर बोला—''नहीं नागदेव, मुझे इतना बड़ा उपहार न दो। भगवान ने मुझे जो दिया है, मैं उसी में खुश हूं। मैं सारे जीवन यूं ही मेहनत करके जीवनयापन करते रहना चाहता हूं।''

नाग ने कहा—''जैसी तुम्हारी मर्जी, लेकिन वादा करो, जब भी तुम्हें कोई परेशानी हो, मुझे याद जरूर कर लेना। शायद मैं तुम्हारे काम आ जाऊं।'' यह कहकर नाग तेजी से रेंगता हुआ चला गया। सुमुख उसे एकटक देखता रहा।

बहुत दिन बीत गए। सुमुख ने अब पक्षियों को पकड़ने-बेचने का काम छोड़ दिया था। किसी सेठ ने उससे एक अनोखी चिड़िया बड़े ही ऊंचे दामों पर खरीद ली थी। सुमुख ने उन पैसों से जमीन खरीदकर खेती करना शुरू कर दिया। उसका जीवन आराम से कट रहा था।

एक बार मांडलेश्वर में सूखा पड़ गया। सुख-चैन से रहने वाली जनता त्राहि-त्राहि करने लगी। धीरे-धीरे राजकोष भी खाली हो गया। लोग भूखों मरने लगे। सुमुख के घर की भी बुरी दशा थी। बच्चे भूख से तड़प रहे थे। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? उसी रात सपने में उसने नाग को देखा। वह खजाने के पास फन फैलाए बैठा था। लग रहा था, जैसे वह उसे बुला रहा हो। सुमुख की आंखें खुल गईं। रात का गहरा सन्नाटा था, मगर उसने देर न की। वह चुपके से घर से निकलकर जंगल की ओर बढ़ लिया। पेड़ के पास पहुंचकर उसने आवाज लगाई—''नागदेव, मैं आ गया हूं। मुझ पर कृपा करो।'' थोड़ी ही देर में वहां रोशनी फैल गई। नाग बिल से बाहर आ गया। बोला—''तुमने यहां आकर बहुत अच्छा किया। यह खजाना ले जाओ, तुम्हारे परिवार के कष्ट दूर हो जाएंगे।''

''परिवार के ही नहीं, सारे राज्य के। मैं सुबह राजा से अनुरोध कर, सैनिकों को लाकर सारे राज्य के लिए यह खजाना ले जाऊंगा।''—सुमुख ने कहा। ऐसी बातें सुनकर नाग विह्वल हो उठा। सुमुख वापस चल दिया। सुबह सारी बात जानकर राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई। सुमुख के दयालु और परोपकारी स्वभाव से वह बहुत प्रभावित हुआ।

सारा खजाना राजमहल में लाया गया। मांडलेश्वर की जनता में खुशी की लहर दौड़ गई। राजा ने नाग से मिले खजाने को उनमें बांट दिया।

कुछ दिनों के बाद ईश्वर की ऐसी कृपा हुई कि मांडलेश्वर में खूब वर्षा हुई। सब पहले जैसे सुखी हो गए। सबके होंठों पर सुमुख का नाम था। राजा ने बहुत चाहा कि सुमुख उसके दरबार में कोई पद स्वीकार करले पर सुमुख मना करता रहा। उसे राजा से कुछ लेने की आवश्यकता कभी न हुई। ●

बस्ती के पार

—राजशेखर

उदयवीर बहादुर राजा थे। उनकी रानी का नाम सुनयना था। एक बार पड़ोसी राजा ने छल से उन्हें हरा दिया। शत्रु ने उदयवीर को गिरफ़्तार कर लिया। फिर वह उनकी राजधानी की ओर बढ़ चला।

रात का समय था। रानी सुनयना महल की छत पर खड़ी थीं। तभी किले की दीवार तोड़कर शत्रु सैनिक अंदर घुस आए। किले में भागदौड़ मच गई।

सुनयना खतरे को भांप गई थीं। झट राजकुमारी मुक्ता को गोदी में उठा लिया और गुप्त मार्ग से नगर के बाहर आ गईं।

गहरा अंधेरा था। मुक्ता को गोद में उठाए, रानी जंगल में चली जा रही थीं। कुछ देर बाद उन्होंने पीछे मुड़कर देखा—नगर आग की लपटों में घिरा था।

पौ फटी। रानी एक गांव के पास पहुंचीं। सामने ही तरह-तरह के फूल खिले थे। रानी सुनयना को फूल बहुत अच्छे लगते थे, पर इस समय तो उनका मन कहीं और खोया था।

तभी एक बूढ़ा आदमी वहां आया। फूल तोड़-तोड़कर वह डलिया में रखने लगा। राजकुमारी का रोना सुन, उसने मुड़कर देखा। वह रानी के पास आया—"तुम कौन हो बेटी ?"

सुनते ही रानी की आंखों में आंसू बह चले। बोलना चाहा, पर होंठ सिर्फ हिलकर ही रह गए। क्या कहे, कैसे कहे ! बूढ़े ने कई बार पूछा, पर रानी के आंसुओं ने ही मन की व्यथा कही। बूढ़ा समझ गया कि सामने बैठी स्त्री बेसहारा है। रानी सुनयना को वह अपने घर ले गया। वह बूढ़ा एक माली था।

रानी ने उसी के घर कुछ समय बिताने की सोची। वह भी फूल तोड़ने और माला बनाने में माली का हाथ बंटाने लगीं।

सुनयना के आने से माली का काम खूब चमक उठा। लेकिन वह लालची भी कम नहीं था। कड़ी मेहनत के बदले, रानी को दो समय रूखी-सूखी रोटी



ही देता था। रानी चुपचाप सब सह रही थीं।

मौसम बदला। धीरे-धीरे फूल कम होते गए। माली के साथ रानी दूर-दूर तक जाती थीं, पर फूल मिलते नहीं थे। कमाई कम होने से माली का स्वभाव कठोर होने लगा। वह रानी को बुरा-भला भी कह बैठता था। रानी अपनी नन्ही बिटिया के लिए सब कुछ सह रही थीं।

एक बार माली रानी से बोला—"पहले फूल लाओ, तभी खाना मिलेगा।" रानी भूखी थीं। राजकुमारी मुक्ता भी भूख से बिलबिला रही थी। रानी ने विवश होकर टोकरी उठाई। मुक्ता को गोद में लिया और फूलों की खोज में चल दीं। दूर-दूर तक फूल नजर नहीं आए। बिना मौसम फूल होते भी कहां ! वह न जाने कितनी देर तक चलती रहीं।

भूख से रोती-रोती मुक्ता उनकी गोद में सो गई थी। रानी ने सोचा—'मुक्ता को कहीं सुला दूं, फिर फूल खोजने जाऊं।' उन्होंने टोकरी में मुक्ता को लिटाया, फिर टोकरी को एक पेड़ की डाल से लटका दिया और आगे चल दीं।

उसी समय चार परियां जंगल में आईं। वे



परीरानी के लिए ओस के मोतियों की माला बनाने निकली थीं । तभी एक परी की नजर राजकुमारी पर पड़ी । वह टोकरी में मीठी नींद सो रही थी । परियों को देर हो रही थी, पर फिर भी वे मुक्ता को देखने रुक गईं ।

''आह ! कितनी प्यारी बच्ची है !''—एक परी ने कहा ।

—''एक अनमोल हीरा, जो धूल में पड़ा है ।''

—''बेचारी ! हमें इसे जरूर कुछ उपहार देना चाहिए । तुमने इसे हीरा कहा है । आओ, हम इसकी टोकरी हीरे-मोतियों से भर दें ।''

तीसरी परी ने अपने पंख से मुक्ता को हवा करते हुए कहा—''नहीं, हीरे-मोती इसके किस काम के । इसकी मां फूलों की खोज में भटक रही है । हमें इसे फूलों का उपहार देना चाहिए ।'' अगले ही क्षण टोकरी फूलों से भर गई ।

रानी सुनयना को कहीं भी फूल न मिले । काफी देर हो गई थी । उन्होंने सोचा—'एक बार मुक्ता को देख आऊं, कहीं रो न रही हो ।' वह लौटीं तो उनकी नाक में भीनी-भीनी सुगंध आई । उन्हें आंखों पर विश्वास न हुआ । मुक्ता की टोकरी में फूल ही फूल भरे थे । फूल इंद्रधनुषी रंग के थे । कभी गुलाबी रंग कौंधता, तो कभी नीला, फिर बैंगनी या सफेद । कभी गुलाब की खुशबू उठती, तो कभी केवड़े, मोतियां और रजनीगंधा की । रहस्य रानी की समझ में न आया । रानी ने कुछ सोचा, फिर टोकरी नीचे उतारी । रह-रहकर फूलों पर आंखें ठिठक जातीं।—'कहां से आए ये फूल ? दूर-दूर तक धरती सूनी पड़ी है । फूल तो फूल हरियाली भी नहीं है, फिर... फिर..., यही सोचती हुई रानी टोकरी लिए नगर की ओर चल दीं ।

टोकरी हाथ में उठाए हुए वह नगर में चली आईं । उन्होंने निश्चय कर लिया था कि ये फूल महारानी को ही भेंट कर दूं । उस नगर का राजा अजीतसिंह और उसकी रानी दिव्या फूलों के प्रेमी थे । फूल लेकर रानी राजमहल के दरवाजे पर पहुंचीं । महारानी दिव्या को बुलाना नहीं पड़ा । फूलों की खुशबू सारे राजमहल में फैल गई थी । वह स्वयं बाहर निकल आईं । सुनयना ने उन्हें नमस्कार किया । टोकरी नीचे रख दी । इस समय मुक्ता दिखाई नहीं पड़ रही थी । वह फूलों में छिप-सी गई थी ।

महारानी दिव्या ने एक-दो फूल सूंघे, तो बस सूंघती रह गईं । प्रसन्न होकर बोलीं—''अद्भुत फूल हैं । बोलो, क्या लोगी ?''

सुनयना ने हाथ जोड़े—''ये फूल तो भेंट हैं, महारानी जी ! इनका कुछ भी मूल्य नहीं है ।''

महारानी दिव्या हंस पड़ीं । बोलीं—''तुमने ठीक कहा । भेंट अमूल्य होती है ।'' कहते हुए सौ स्वर्ण मुद्राएं सुनयना को इनाम में दीं । कहा—''तुम रोज हमारे लिए ऐसे फूल लाया करो ।''

—''मिलेंगे तो जरूर लाऊंगी ।''

महारानी दिव्या ने सुनयना से कहा—''दासी के साथ जाकर फूलों की यह टोकरी मेरे कमरे में रख दो ।''

सुनयना टोकरी लेकर चलीं, तो उनका मन डावांडोल होने लगा—'अभी तक किसी को मालूम नहीं है कि फूलों की टोकरी में मुक्ता सो रही है । अगर

मैं इसे यों ही सोती छोड़ जाऊं तो...तो... ।' आगे की कल्पना से वह सिहर गईं । रानी ने सोचा—'हो सकता है, रानी दिव्या मेरी बेटी को अपना लें । कुछ भी हो, मुक्ता यहां अच्छी तरह पल जाएगी ।' वह टोकरी महारानी दिव्या के कमरे में रखकर बाहर निकल आईं ।

उधर महारानी दिव्या ने कमरे में आकर फूल उठाए तो चौंक पड़ी—फूल-सी कोमल एक बच्ची उसमें सो रही थी । रहस्य उनकी समझ में न आया । उन्होंने झट सैनिकों को सुनयना का हुलिया बताया । सैनिक इधर-उधर दौड़े, पर सुनयना का कुछ पता न चला ।

महारानी दिव्या ने मुक्ता को गोद में उठा लिया और प्यार करने लगीं । भगवान का दिया सब कुछ था । वहां एक हंसती-खेलती गुड़िया की कमी थी । मुक्ता राजमहल में बड़ी होने लगी । आश्चर्य यह था कि टोकरी के फूल कभी मुरझाए नहीं । मुरझाते भी कैसे ! परियों की भेंट जो थे । यह सब तो ठीक था, पर मुक्ता जैसे हंसना भूल गई थी । हरदम उदास रहती थी । सब प्रयत्न करके हार गए । पर मुक्ता गुमसुम बनी रहती । इसी तरह कई वर्ष बीत गए ।

आखिर रानी दिव्या ने घोषणा करा दी—'जो हमारी बिटिया को हंसाएगा, उसे भरपूर इनाम दिया जाएगा ।'



एक दिन यह घोषणा सुनयना ने भी सुनी । वह जान गईं कि मुक्ता क्यों उदास है ? बस सीधी राजमहल जा पहुंचीं ।

मुक्ता राजसी कपड़ों में सजी-धजी महारानी दिव्या के पास बैठी थी । उसके चेहरे से उदासी झांक रही थी । सुनयना ने धीरे से मुक्ता के दोनों गाल थपथपा दिए । फिर उसकी ओर देखकर मुसकराने लगीं । एकाएक चमत्कार हो गया । मां को देखकर मुक्ता के होंठ खिल उठे । वह पहले हंसी, फिर सुनयना से लिपट गई । अब सुनयना अपने आपको रोक न सकीं । वह बोलीं—"मेरी बेटी गुड़िया..."

महारानी दिव्या पलक झपकते सब कुछ समझ गईं । वह बोलीं—"तुम तो वही हो न, जो एक दिन फूल लाई थीं ? तुमने ऐसा क्यों किया ?"

सुनकर सुनयना का सिर झुक गया । उन्होंने सुबकते हुए अपनी पूरी कहानी सुना दी । उनकी रुलाई रोके नहीं रुक रही थी । राजा अजीतसिंह भी वहीं खड़े थे । उन्होंने कहा—"बहन, तुम दुखी मत हो । मैं कल ही तुम्हारे पति को शत्रु की कैद से छुड़ाने जाऊंगा ।"

अगले दिन अजीतसिंह एक बड़ी सेना लेकर उदयवीर को छुड़ाने चल दिए । शत्रु राजा परास्त हुआ । उदयवीर छूटकर बाहर आए तो रानी सुनयना ने पिछली बातें उन्हें बताईं । उदयवीर ने अजीतसिंह से कहा—"मैं आपका अहसान कभी नहीं भूलूंगा ।"

"इसमें अहसान की क्या बात है । आज से हम-तुम मित्र हुए । हम तो पड़ोसी भी हैं । पहाड़ी के उस पार ही तो तुम्हारा राज्य है बिल्कुल ऐसा है जैसे बस्ती के पार मेरी बगिया के फूल ।" एकाएक उन्हें फूलों की याद आ गई । उन्हीं फूलों की जो परियों ने दिए थे और अभी भी ताजे थे । अजीतसिंह ने उनमें से कुछ फूल राजा उदयवीर को दे दिए । राजा-रानी अपनी बेटी के साथ राजधानी लौट आए । ●



□ पति— मैं तुम्हारे लाड़ले की शिकायतें सुन-सुनकर तंग आ गया हूं।
पत्नी— क्या तुम्हारे पास करने को कुछ नहीं है, जो हरदम शिकायतें ही सुनते रहते हो ?

□ राम— चूहा कमरे में है और मैंने दरवाजा बंद कर दिया है। अब बिल्ली को भेजता हूं अंदर।
अतुल— तुम भूल गए, वह कमरा है, पिंजरा नहीं, चूहा तो रफू चक्कर हो चुका है।

□ मालकिन—अरे, तुमने तो आज फिर दाल में नमक ज्यादा डाल दिया।
नौकरानी—मालकिन, मैंने समझा कल वाले मेहमान शायद आज फिर आ जाएं।

□ अजय—भाई, तुम कभी चुप भी रहते हो ?
विजय—हां, जब तुम बोलते हो, तो मुझे चुप रहना ही पड़ता है।

□ एक मच्छर—भाई, आज तुम बहुत खुश नजर आ रहे हो ? बताओ, क्या बात है ?
दूसरा मच्छर—शहर में मच्छर मारने और भगाने वाली दवाओं की भारी कमी जो हो गई है।

□ पिता—बेटा, तुम बहुत तेज होने पर भी परीक्षा में फेल कैसे हुए ?
बेटा—पिता जी,तेज तो मैं अभी भी हूं पर स्कूल से भागने में, पढ़ने में नहीं।

□ किराएदार—आपके मकान में चूहे तो नहीं हैं ?
मकान मालिक—फिलहाल तो नहीं हैं। अब आप रहने लगेंगे, तो चूहे भी आपको खोजते हुए यहां आ ही जाएंगे।

□ मां—बेटा, सामने वाली दुकान पर जाकर सामान ले आओ। कहना—पैसे शाम को मिल जाएंगे।
बेटा—मां, परेशान क्यों होती हो, सामान मैं शाम को ही ले आऊंगा।

□ मालिक—और जल्दी करो भाई, गाड़ी छूट गई तो...
नौकर—तो क्या ? मुझे दोबारा आपके लिए घर पर भोजन बनाना पड़ेगा और खुद बासी भोजन खाना पड़ेगा।

□ एक महिला—माफ करना बहन जी, आज भोजन में मिर्च अधिक हो गई है।
दूसरी महिला—कोई बात नहीं, बस आप मुझे चीनी का डिब्बा दे दीजिए।

□ ग्राहक—भाई साहब, पैंट का रंग फीका पड़ गया तो...
दुकानदार—आप मुझसे पैंट की रंगाई कराने के रुपए ले लीजिएगा।

□ बबलू—डाक्टर साहब, मेरी मां कल से कुछ बीमार हैं। वह न कुछ खाती हैं न ही बोलती हैं।
डाक्टर—मैं उन्हें पीने वाली कड़वी दवा दे देता हूं। उसे पीते ही वह जोर से चिल्लाने लगेंगी।

□ डाक्टर—क्यों बेटा, तुम बार-बार सूई लगाने को क्यों कह रहे हो ?
सोनू—मां ने मुझसे कहा था,सूई लगवा कर आओगे तो पांच रुपए मिलेंगे।

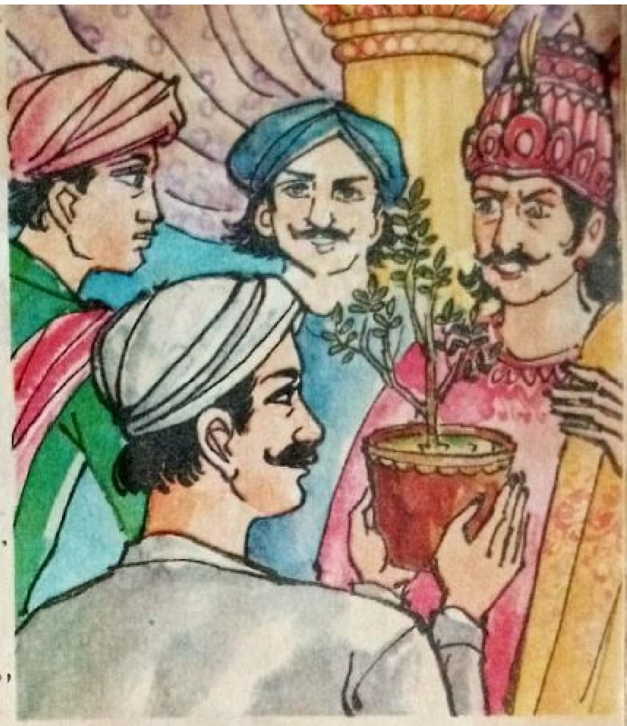
□ एक पड़ोसी—भाई साहब ! मैं इस बार आपके साथ भ्रमण करने नहीं जा सकता।
दूसरा पड़ोसी—श्रीमान जी ! यह बात आप मुझे दो दिन पहले बता देते, तो मैं अपना टिकट वापस क्यों करवाता ?

□ पति— रेल ने सीटी दे दी, जल्दी चलो, कहीं छूट गई तो...।
पत्नी— और रेल पकड़ने की भाग-दौड़ में गिरकर टांग टूट गई तो... ?

□ एक आदमी— देखो, उस आदमी ने तालाब में छलांग लगा दी है। उस बेचारे को बचाने वाला कोई नहीं है।
दूसरा आदमी— उसने किसी 'बेचारे' को बचाने के लिए ही छलांग लगाई है।

तेनालीराम ३२७

कड़वा नीम



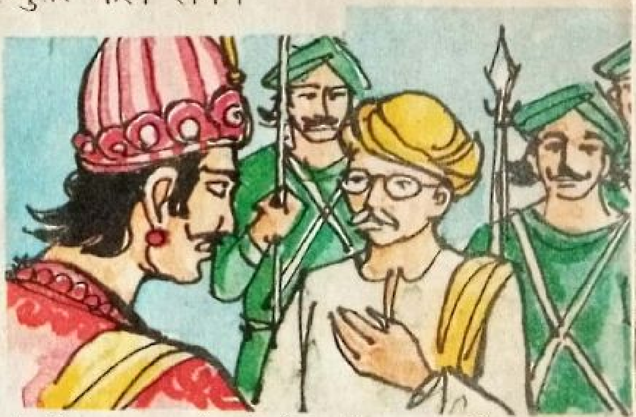
एक बार राजा कृष्णदेव राय ने युद्ध जीता। वहां से राजधानी लौटे। लेकिन तेनालीराम पीछे रह गया। अगले दिन दरबार में सब लोग उनका जय-जयकार कर रहे थे। उन्हें तरह-तरह के उपहार भी दिए जा रहे थे।

तभी एक आदमी ने राजा को नीम का पौधा लगा एक गमला दिया। कहा—"महाराज, तेनालीराम ने यह आपके लिए भेजा है।"



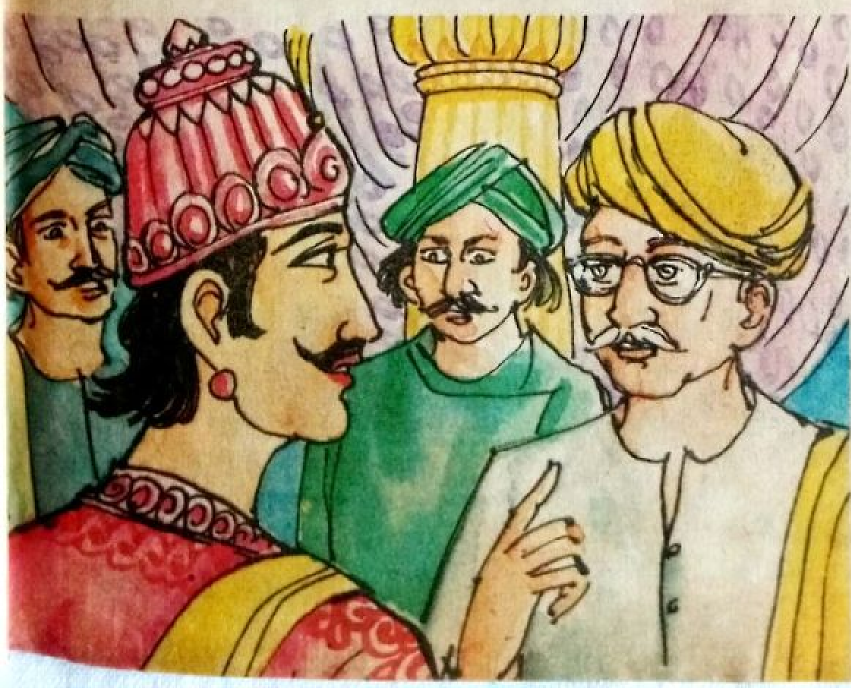
यह सुनकर महाराज गुस्से से आग-बबूला हो गए। उन्होंने आदेश दिया— "तेनालीराम को गिरफ़्तार करके दरबार में पेश किया जाए।"

महाराज का आदेश सुनकर सारे दरबारी आपस में खुसर-पुसर करने लगे।



दूसरे दिन तेनालीराम को पकड़कर दरबार में लाया गया। सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। महाराज ने कड़ककर पूछा—"तेनालीराम, हम तुम्हें कड़वे नीम से लगते हैं।"

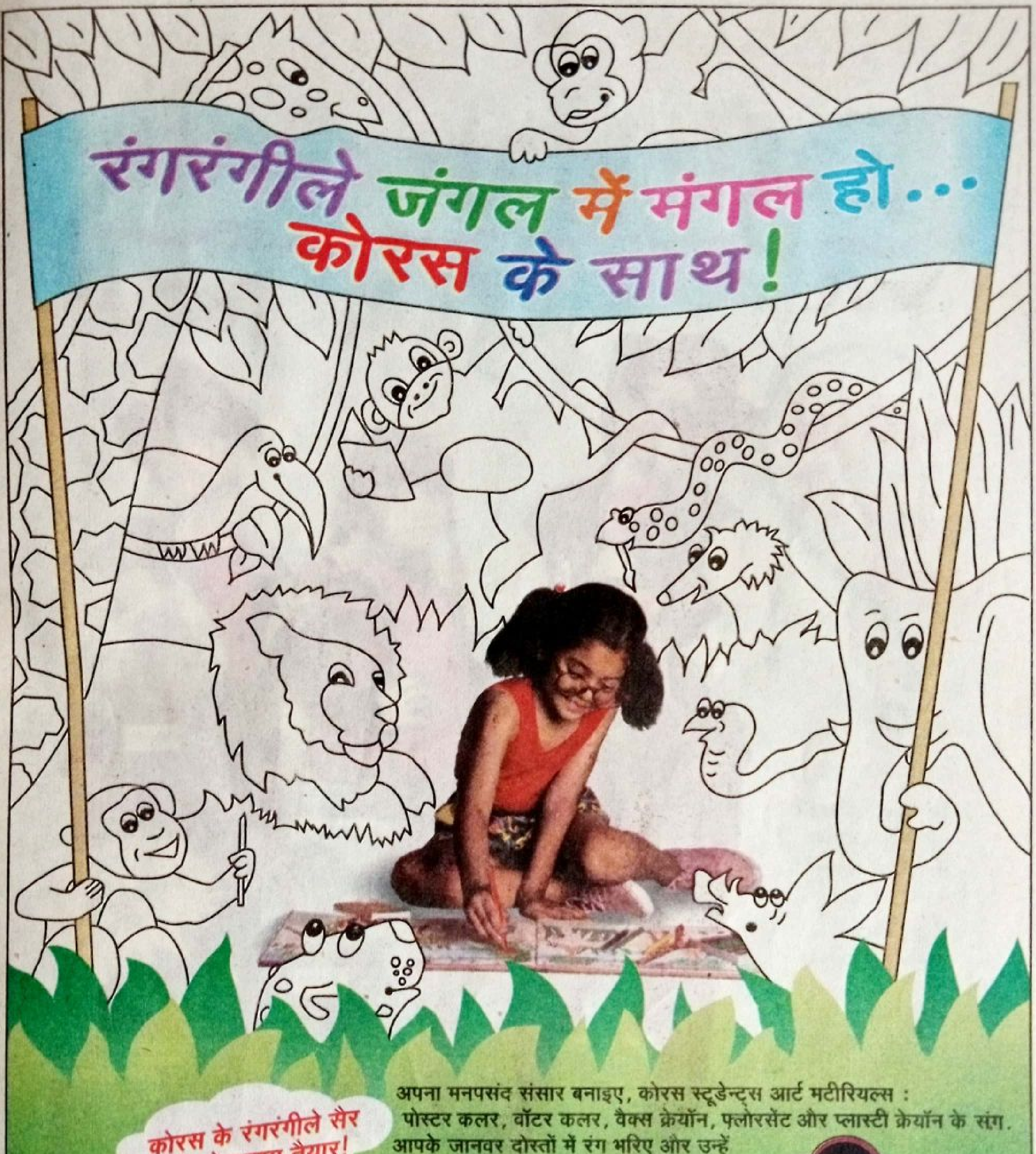
महाराज का गुस्सा देख, तेनालीराम सकपका गया। वह समझ गया, उसके विरोधियों ने षड्यंत्र किया है। कुछ पल सोचकर बोला—"जी महाराज, नीम के पेड़ की उम्र लम्बी होती है, आप भी सौ वर्ष तक जिएं। नीम से मक्खी-मच्छर दूर भागते हैं, आपके राज्य से भी शत्रु हमेशा दूर रहें। नीम की ठंडी छाया सबको प्रिय लगती है, आपकी छत्रछाया में प्रजा हमेशा सुखी रहे।"



तेनालीराम की बात सुनकर महाराज खुश हो उठे। उन्होंने उसे इनाम दिया। विरोधियों के चेहरे लटक गए।



HEAD OFFICE: M.M.Toys Industries Ltd., 5, Chandra Bagh Avenue, Mylapore, Madras-4. Ph: 835151, Fax: 843919.



AKA/723-HN-01

Scanned with CamScanner



Eagle Water Bottles
we're all game for it
How about you?
Congo
Waves
Volga
Brooks
Amazon
OVER 1 LAKH SURPRISE GAMES TO BE WON
■ For cool, hygienic & odourless water.
■ Useful at school & while travelling.
■ Zingy shapes & colours to choose from.
■ Available in capacities ranging from 325 ml. to 2200 ml.
NO ENTRY FEE
No Purchase Required
To win a surprise game, match the names of Eagle Water Bottles with the phrases given below. And get this coupon stamped from your nearest Eagle outlet.
A Brooks ☐ A river in South America
B Amazon ☐ A river in Russia
C Congo ☐ Movement of sea
D Volga A Streams of water
E Waves ☐ A country in West-Central Africa
Name:........................ B'day........
Address:........................
Entries must reach the following address before 31/8/95. Eagle Flask Industries Ltd., Eagle Estate, Talegaon-410507. Dist.Pune. Tel: 02114-22321-25. Fax 02114-22676.
Winners will be intimated by post.
EAGLE FLASK INDUSTRIES LTD.
There's a lot you can do with Eagle
DART/EF/3750

उड़ो आकाश में

— देवलीना केजरीवाल



किसी नदी के किनारे एक बड़ा-सा महल था। सुबह की धूप में वह महल चांदी की तरह चमकता था। इस महल में एक दानव रहता था। उसका नाम था विराटी। वह बहुत ही विशाल था। भारी-भरकम और लम्बा-चौड़ा । उसे देखते ही लोग डर जाते। इसलिए उसके महल के पास से होकर कोई गुजरता ही नहीं था। सबको लगता था कि कहीं आते-जाते विराटी राक्षस की नजर उन पर पड़ गई, तो वह जरूर उन्हें चबा जाएगा या अपने महल में कैद कर लेगा। लेकिन ताज्जुब की बात यह थी कि उस विराटी दानव के विशाल महल की छत पर कभी-कभी एक लड़की घूमती-फिरती दिखाई पड़ती. वह लड़की बहुत सुंदर थी। उसका नाम लाली था।

ऐसा सुनने में आता था कि वह रूपनगर के राजा की लड़की थी। वह किस तरह से इस विराटी राक्षस के महल में कैद हुई, यह बात उस लड़की के सिवाय किसी और को मालूम नहीं थी।

इसी तरह दिन, महीने और साल गुजरने लगे। राक्षस के महल में अकेली लड़की रोती रहती।

दूसरी तरफ अनजानपुर के राजा का राजकुमार किरणलाल एक बार नगर भ्रमण के लिए निकला। राजा के गुरु ने प्यार से उसे एक आकाश नैया दी थी। उस पर चढ़कर जैसे ही वह कहता—'चलो दोस्त, किसी अनजाने देश चलो' तो वह नाव आकाश के रास्ते से तैरती हुई, राजकुमार को किसी नए देश में पहुंचा देती थी। इस बार किरणलाल की आकाश नैया, मेघों के राज्य से होती हुई विराटी राक्षस की छत पर आकर रुक गई। राजकुमारी उस समय छत पर धूप में बाल सुखा रही थी।

यह लड़की आखिर है कौन ? यह सोचते-सोचते किरणलाल आकाश नैया से उतरकर चुपचाप राजकुमारी के पास जाकर खड़ा हो गया। वह चौंक उठी। बोली— "कौन हो तुम ? यहां किस तरह आए ?" किरणलाल बोला— "पहले तुम बताओ कि तुम कौन हो ? यह महल क्या तुम्हारा है ? और तुम्हारी आंखों में आंसू क्यों हैं ?"

राजकुमारी बोली— "अपनी बात बाद में बताऊंगी। पहले तुम अपना परिचय दो।"

किरणलाल के मुंह से आकाश नैया पर उसकी यात्रा का विवरण सुनने के बाद थोड़ी हिम्मत बंधी। वह बोली— "तुम्हारे आने पर मुझे बहुत खुशी हो रही है लेकिन डर भी लग रहा है। राजकुमार, तुम नहीं जानते, यह महल एक राक्षस का है। अगर तुम्हारे आने की खबर उसे लग गई, तो तुम्हारी खैर नहीं। वह मुझे भी चबा जाएगा और तुम्हें भी मार डालेगा। राजकुमार, तुम यहां से वापस चले जाओ। यहां रहने से कोई फायदा नहीं।" पर किरणलाल डरा नहीं। उसने पूछा— "पहले बताओ, इस दैत्य पुरी में तुम कैसे आईं ?"

राजकुमारी लाली लम्बी सांस लेकर बोली— "कहानी बड़ी लम्बी है, राजकुमार। कभी समय मिला तो बताऊंगी। वह देखो कोई आवाज सुनाई दे रही है। मैं जा रही हूं।"

"कैसी आवाज ?"— राजकुमार ने पूछा।

लाली बोली— "राक्षस वापस लौट रहा है। उसकी आने की आहट मुझे दूर से ही सुनाई पड़ जाती है। तुम जल्दी से छिप जाओ।"

राजकुमार बोला— "पर छिपूंगा कहां ? मेरी आकाश नैया भी तो है। उसे संभालकर रखना पड़ेगा।"

लाली बोली— "तुम मेरे पीछे आओ।" फिर दोनों छत से उतरकर नीचे एक छोटे-से कमरे में पहुंचे, जहां रोशनी का नामो-निशान नहीं था। उसने कहा— "यहां विराटी दैत्य नहीं आता। तुम इसी में रहो। मैं बाहर से दरवाजा बंद किए देती हूं।"

किरणलाल को उस अंधेरी कोठरी में बाहर से बंदकर लाली ऊपर आई। देखते-देखते एक विशाल पंछी पंख पड़फड़ाता, छत पर आकर उतरा। फिर वह पक्षी विराटी राक्षस में बदल गया। उसने राजकुमारी से कहा— "लाली, मेरे पास आओ।"

लाली पास आकर खड़ी हो गई। विराटी बोला— " पिलपिंडी पर्वत की गुफा में एक राक्षस रहता है। उसके दो सींग भी हैं। उसका नाम हिडिम्ब है। हिडिम्ब का एक लड़का है। बहुत ही खूबसूरत। वह तुम्हें जरूर ही पसंद आएगा ?"

यह सुनते ही राजकुमारी का दिल कांपने लगा। सोचने लगी—'अब न जाने क्या होगा ? कौन-सी नई मुसीबत का सामना करना पड़ेगा ?' वह बोली— "मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगी।"

विराटी राक्षस ने कहा— "लाली, मुझे छोड़कर क्यों रहना पड़ेगा ? मैं उस दैत्य को ही अपने यहां लाकर रखूंगा। उससे मेरी बातचीत हो चुकी है। तुम दोनों मेरे ही पास रहोगे।"

इसके बाद दानव अपने कमरे में सोने चला गया। लाली घुटनों पर माथा टेककर अपनी किस्मत के बारे में सोचने लगी। सोचते-सोचते लाली के मन में आया कि अगर वह राजकुमार उसका साथ दे तो वह राक्षस के चंगुल से बच निकल सकती है।

दूसरे दिन विराटी राक्षस के बाहर जाते ही लाली ने नीचे तल्ले की अंधेरी कोठरी को जाकर खोला।



हंसता हुआ किरणलाल बाहर निकला। पूछा— "राक्षस चला गया ?"

"हां गया।"— लाली बोली।

—"फिर कैसी चिंता ? चलो मेरे साथ, आकाश नैया में चढ़कर हम सीधे अपने राज्य के राजमहल में पहुंच जाएंगे।"

लाली बोली— "राजकुमार, ऐसा नहीं हो सकता। आज राक्षस ज्यादा दूर नहीं जाएगा। उसकी आदत है कि जब वह दूर जाने की बात कहता है, तब वह नजदीक जाता है और नजदीक बताकर दूर जाता है।"

किरणलाल बोला— "इसका मतलब यह है कि राक्षस किसी भी समय यहां वापस आ सकता है ?"

राजकुमारी बोली— "चलो, छत पर बैठकर ही बातें करते हैं। वहां राक्षस के आने की खबर झट से लग जाएगी।"

इसके बाद छत की मुंडेर पर बैठकर, राजकुमार और राजकुमारी आपस में बातें करने लगे। राजकुमारी लाली बीच-बीच में आकाश की तरफ आंखें उठाकर देख रही थी कि कहीं पक्षीरूपी विराटी न आ टपके।

किरणलाल बोला— "राजकुमारी, तुम्हारी कहानी तो मैंने सुनी ही नहीं। मैं इस दैत्यपुरी में आ ही गया हूं, तो तुम्हें इस राक्षस की कैद से अवश्य ही मुक्ति दिलवाऊंगा। लेकिन पहले यह बताओ कि तुम इस राक्षस की कैद में आईं कैसे ?"

यह सुनकर लाली की आंखें छलछला उठीं। बोली— "पहले तो मुझे कुछ मालूम ही नहीं था। इसी दैत्य से मैं सारी बातें जान पाई हूं। इस राक्षस ने



ही मुझे बताया था कि मैं जयंतिका की राजकुमारी हूं। वह मुझे वहीं से चुरा लाया था। उसने चोरी इसलिए की थी कि उसकी पत्नी राक्षसी एक बार बहुत बीमार पड़ी थी। कविराज दैत्य ने उसे कहा था कि उसकी दवा किसी नन्ही राजकुमारी की आंखों से गिरे तीन दिनों के आंसू से ही तैयार हो सकती है।

"कविराज दैत्य की बात सुनते ही विराटी राक्षस नन्ही राजकुमारी ढूंढ़ने निकल पड़ा। मैं उस समय तीन साल की थी। यह मुझे उठा लाया।"

राजकुमार अवाक होकर बोला— "फिर क्या हुआ ? तुम्हारे आंसुओं से बनी दवाई से क्या राक्षसी अच्छी हो गई ?"

लाली बोली— "ऐसा नहीं हुआ। राक्षसी तो मर गई पर राक्षस ने मुझे नहीं छोड़ा। यही मेरी कहानी है। तब से आज तक मैं यहीं हूं। मैं बहुत रोई पर राक्षस का मन नहीं पिघला। अब तो वह किसी राक्षस से मेरी शादी भी रचा रहा है।"

यह सुनकर राजकुमार किरणलाल ने तलवार निकालकर कहा— "आने दो राक्षस को।"

लाली राजकुमार का हाथ पकड़कर बोली— "सावधान ! भूल से भी राक्षस के सामने मत आना। तुम उसे नहीं जानते। सामने पड़ जाओगे तो वह तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देगा। वह जब गरजता है तो पहाड़ तक कांपने लगते हैं।"

इतनी बातें सुनने के बाद भी किरणलाल घबराया नहीं। बोला— "आने दो विराटी को। आज मुकाबला हो ही जाए।" वह बोल ही रहा था कि लाली चौंक उठी— "विराटी तो आ गया। जल्दी चलो। मैं तुम्हें कहीं छिपा दूं।" उस दिन बहुत कठिनाई से भेद खुलने से बचा।

इस तरह कई दिन बीत गए। किरणलाल को मौका ही नहीं मिल रहा था कि राजकुमारी को वह राक्षस की कैद से छुड़ाकर निकल भागे। अगर वह एक बार आकाश नैया पर बैठ सकता तो फिर मुक्ति ही मुक्ति थी।

कुछ दिनों के बाद एक दिन विराटी राक्षस महल से निकला। लाली जल्दी से जाकर दरवाजा खटखटा कर बोली-"राजकुमार ! जल्दी से अपनी आकाश नैया लेकर बाहर आ जाओ।"

किरणलाल ने अपनी आकाश नैयार को छत पर उतारा। फिर बोला— "राजकुमारी, तुम आकर यहां बैठो।"

लाली आकाश नैया पर बैठने ही जा रही थी कि विराटी राक्षस लौट आया।

राजकुमार ने लाली से कहा— "बैठ जाओ, हम अभी आकाश पथ पर उड़ जाएंगे।"

पर तब तक राक्षस छत के किनारे तक चला आया। बोला— "आज मैं तुझे पूरा का पूरा निगल जाऊंगा। इसे भी मार डालूंगा।"

तभी राजकुमार ने तलवार निकाली। चिल्लाकर कहा— "खबरदार, जो आगे बढ़ा। मैं तेरा सिर गर्दन से अलग कर दूंगा।" इससे पहले कि विराटी कुछ कर पाता, आकाश नैया दोनों को लेकर उड़ गई।

राजकुमारी को लेकर राजकुमार खुशी-खुशी अपने घर लौट आया। चारों दिशाओं में और सभी राज्यों में खबर फैल गई कि राजकुमार किरण राक्षस की कैद में पली एक राजकुमारी को छुड़ाकर ले आया है। जयंतिका के राजा को समाचार भेज दिया। राजकुमारी के माता-पिता तुरंत आ गए।

आसपास के सभी राज्यों में राजकुमार और राजकुमारी की शादी का न्योता भेजा गया। खूब धूमधाम से शादी हुई। खूब मिठाइयां, धन-दौलत, आभूषण बांटे गए।

काली परी

— सविता चड्ढा

'आओ,आज तुम्हें परियों की कहानी सुनाई जाए ।'

दीपक को लगा यह आवाज उसकी सुनी हुई है । उसने आवाज पहचानने की कोशिश की— 'अरे हां, यह तो मेरी टीचर हैं ।' दीपक ने आज तक परियों की एक भी कथा नहीं सुनी थी । उसके घर में उसकी दादी भी है और मां भी । दादी ने न तो कभी परियों की, न ही राक्षस की कोई कहानी दीपक को सुनाई थी । दीपक की मां ने उससे कई बार कहा था— ''मेरे पास सो जाओ बेटा । मैं तुम्हें कहानी सुनाऊंगी ।'' परंतु दीपक अपनी मां का कहा न मानता । उसे अपनी मां पसंद नहीं थी । लम्बी बीमारी में उसकी मां के सिर के बाल उड़ गए थे । रंग पहले से ज्यादा स्याह पड़ गया था । आगे के दांत भी कमजोरी के कारण बड़े-बड़े दिखते थे । यह सब देख, दीपक अपनी मां को मन ही मन बुरा-भला कहता । दीपक की मां समझ गई थी कि दीपक उसे पसंद नहीं करता है ।

वह टीचर की बात ध्यान से सुनने लगा । दीपक ने सुना,टीचर कह रही थीं— 'बच्चों, तुम्हें पता है, धरती की परियां बिना पंखों के उड़ती हैं । बिना किसी जादू की छड़ी के कई काम करती हैं । आकाश की परियां कवल तुम्हें घुमा सकती हैं, खिला सकती हैं और सुंदर दृश्य दिखा सकती हैं ।' दीपक ने देखा, कहानी सुनने वालों में उसकी कक्षा के सभी विद्यार्थी हैं, जो उसके साथ बैठकर टीचर से कहानी सुन रहे हैं ।

टीचर कह रही थीं— 'तुम सबने अपनी मां देखी हैं, क्या वह तुम्हें किसी परी से कम लगती हैं ? रात को वह चाहे कितनी भी देर से सोए, सुबह जल्दी उठ जाती हैं । सारे घर को बुहारती हैं । सबके उठने से पहले ही चाय-नाश्ता बना लेती हैं । तुम्हें स्कूल की तैयारी करवाती हैं । खाना बनाती हैं । घर के प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी उठाती हैं । तुम सबके उज्ज्वल भविष्य के सपने देखती हैं । बच्चे बुरा करें तो उन्हें रोकती हैं । अत्यंत सहनशील ये परियां, अपने-अपने परिवारों के साथ एक बार जुड़ जाती हैं, तो अंत तक उनकी सेवा करती रहती हैं । प्यारे बच्चो, तुम्हें धरती की इन परियों का सम्मान करना चाहिए । यदि ये एक बार भगवान के पास चली गईं, तो तुम बेसहारा हो जाओगे । यदि इन परियों के दिल को दुखाओगे, तो ये तुम्हें शाप नहीं देंगी । ये परियां अपने बच्चों को ही नहीं, इस धरती के सभी बच्चों को आशीर्वाद देती हैं ।'

स्कूल की घंटी बजते ही दीपक की आंखें खुल गईं । दीपक ने देखा, टीचर कक्षा में खड़ी होकर हिंदी का पाठ 'मेरी मां' पढ़ा रही हैं । उसे पता ही नहीं चला कब उसकी आंख लग गई थी । उसकी छोटी बहन रात भर खांसती रही थी और मां उसे संभालती रही । 'एक रात नींद पूरी न होने पर मैं कक्षा में झपकी लेने लगा ।'— दीपक सोचने लगा ।

सुबह पांच बजे उठकर तो मां भी सारा काम करती हैं । चाहे रात को देर से सोएं, तो भी सुबह-सुबह उठकर खाना बनाती हैं । दीपक को मां के साथ किए गए अपने व्यवहार पर दुःख होने लगा । जब वह बाजार जाता है, तो अपनी मां का हाथ नहीं थामता । उसे शर्म आती है कि मां को देखकर उसके दोस्त क्या कहेंगे । दीपक ने कई बार अपने पिता से कहा था— ''आप तो कितने गोरे हैं और मां कितनी काली ।'' पिता हमेशा इस बात को हंसकर टाल देते ।

दीपक को लगा,सपने में जो कुछ उसने सुना,वह तो बिलकुल सच है । उसकी मां कितना काम करती हैं । फिर भी गुस्सा नहीं करतीं । उसकी हर छोटी-बड़ी जरूरत को पूरा करती हैं । उसके कदम तेजी से घर की ओर बढ़ने लगे । वह जल्दी से जल्दी घर पहुंचकर अपनी मां से माफी मांगना चाहता था । घर पहुंचकर उसने देखा मां नहीं हैं । उसने दादी से पूछा— ''मां कहां हैं ?''

दादी ने कहा— ''आज क्यों मां को पूछ रहा है? रसोई में खाना रखा है । जाकर खा ले ।'' वह खाना खाते समय बराबर सोचता रहा कि मां के दिल को उसने कई बार दुखाया है । वह आज प्रायश्चित करना

चाहता था। उसने बुझे मन से खाना खा लिया और फिर पूछा— "मां कब तक आएंगी?"

"अरे डाक्टर के पास गई हैं। शाम तक आ जाएंगी।"— दादी ने कहा। दीपक सोने की कोशिश करने लगा।

उसने देखा, एक काली परी सफेद वस्त्र पहने, हाथ में जादू की छड़ी लिए उसके पास खड़ी है। उसने वह छड़ी घुमाई। दीपक की मां उसके सामने थी। परी ने कहा— 'दीपक, तुम अपनी मां का कहा नहीं मानते। तुम्हें अपनी मां का साथ केवल घर में अच्छा लगता है। मैं जादू से तुम्हारे लिए सुंदर मां ला दूंगी। आखिरी बार तुम अपनी इस मां से मिल लो। इस मां को अब भगवान ने बुलाया है।'

दीपक ने देखा, काली परी उसकी मां को अपने साथ उड़ाकर लिए जा रही है। वह चिल्लाता हुआ परी के पीछे भागने लगा। उसने देखा जंगल के बीचोबीच परी अचानक गायब हो गई। दीपक परी का पीछा करता हुआ जंगल में जा पहुंचा। जंगल में वह अकेला जोर-जोर से रोता रहा। 'मां, मां' की पुकार से पूरा जंगल गूंज उठा। उसने देखा, वही काली परी नीचे उतर रही है। वह दीपक के पास आकर बोली— 'तुम रो क्यों रहे हो? तुम्हारी मां तो अब नहीं आएगी।'

'क्यों नहीं आएगी? कहां ले गई हो तुम उसे। मुझे सुंदर मां नहीं, अपनी मां चाहिए।'-कहते हुए दीपक ने परी की जादू की छड़ी पकड़ ली।

'उसे तो मुझसे एक राक्षस ने छीन लिया है।'-यह सुनकर दीपक रोने लगा था।

'उस राक्षस को मैं नहीं मार सकती।'— परी ने कहा और दीपक का चेहरा देखने लगी।

'मैं बचाऊंगा राक्षस से अपनी मां को।'— दीपक बोला।

'परंतु तुम तो बच्चे हो। उसे तो कोई ताकतवर ही मार सकता है।'— परी ने फिर कहा।

'मुझे अपनी मां चाहिए। मैं राक्षस को मार दूंगा। मां के आशीर्वाद से मुझमें ताकत आ जाएगी। तुम देखना।'— दीपक ने कहा।

'तुम्हारी मां को राक्षस ने उस पहाड़ी के पार एक गुफा में बंद कर दिया है। तुम चाहो तो मैं तुम्हारी उस पुरानी मां के बदले एक सुंदर मां दे सकती हूं।'— परी ने दीपक को समझाया।

— 'नहीं, मुझे मेरी मां चाहिए। मुझे मेरी मां वापस चाहिए।'

काली परी ने मुसकराते हुए कहा— 'तुम अपनी मां को तो बहुत दुःख देते हो। उसका कहना नहीं मानते, इसलिए राक्षस ने तुम्हारी मां को मुझसे छीन लिया है।' दीपक काली परी की पूरी बात सुने बिना गुफा की ओर भागने लगा।

दीपक ने देखा वह राक्षस की गुफा के सामने खड़ा है और गुफा का दरवाजा एक बड़े पत्थर से बंद है। वह उस काली परी को याद करने लगा। पलक झपकते ही काली परी उसके सामने खड़ी थी। उसने जादू से गुफा का पत्थर हटा दिया। दीपक ने जैसे ही गुफा में प्रवेश किया, सामने भयानक राक्षस दिखाई दिया। राक्षस ने दीपक को उठाकर गुफा के दरवाजे से बाहर पटकना चाहा, तो दीपक चिल्लाया— 'मेरी मां को छोड़ दो। मेरी मां को छोड़ दो।'

राक्षस ने दीपक को गुफा के बाहर पटक दिया। दीपक ने देखा, वह अपनी मां की गोद में है। काली परी भी उसके साथ खड़ी मुसकरा रही है।

तभी दीपक जाग उठा। उसकी मां सामने खड़ी कह रही थी— "क्या हुआ बेटा? मैं तो यहां खड़ी हूं। तुम मुझे किससे छुड़ाकर ला रहे थे?"

दीपक चारपाई से उठा और मां के गले से लिपट गया— "मां, मां, तुम कहां चली गई थीं? अब तुम मुझे छोड़कर मत जाना, नहीं तो राक्षस उठा ले जाएगा।"

मां ने उसका माथा चूमा और कहा— "मेरा बेटा दीपक और उसकी बहन सारे राक्षसों से मुझे बचा लाएंगे। है न!"



कमल में कैद

—रत्नप्रकाश शील



धौलागिरि के राजा थे विश्वमंगल। उनके एक ही बेटा था— राजकुमार विक्रम। विक्रम को घुमक्कड़ी का शौक था।

एक दिन विक्रम घोड़े पर सवार हो, उत्तर-पूर्व की ओर चल पड़ा। शाम ढले तक वह एक पहाड़ी की चोटी पर जा पहुंचा। चारों ओर विचित्र-सी गंध थी। कुछ देर वहीं ठहरकर, वह जैसे ही वापस जाने को मुड़ा, चौंक उठा। पहाड़ी के नीचे एक विशालकाय कमल पर पंखों वाला बड़ा ही मनोरम मंदिर बना था। मंदिर के सामने सात लड़कियां हाथ जोड़े बैठी थीं।

वह कुछ सोच रहा था कि हाथ जोड़े बैठी सातों लड़कियां उठीं। देखते-देखते झाड़ी से उन्होंने एक-एक जोड़ी सफेद पंख निकाले और आसमान की ओर उड़ गईं। उनके उड़ते ही वह मंदिर कमल में समा गया।

विक्रम घर लौटा, तो बड़ा परेशान था।

उस दिन से विक्रम का स्वभाव बदल गया। सुबह-सुबह ताजे गुलाब-सा उठने वाला विक्रम सूरज चढ़े तक सोता रहता था। पहले की तरह घुमक्कड़ी के प्रति उत्साह न दिखाता। अब वह दोपहर ढलते ही सबसे तेज घोड़े पर सवार होकर उत्तर-पूर्व की उसी पहाड़ी पर जा पहुंचता। कमल को खिलते देखता। उस पर मंदिर उगते देखता और फिर मंदिर में रोज पूजा करने आती उन सात परियों के बारे में सोचता रहता।

एक दिन उसके मन में आया कि जाकर देखूं, मंदिर में किस देवता की मूर्ति है। किंतु पहाड़ी से मंदिर के अंदर देख पाना सम्भव न था।

मंदिर को अंदर से देख पाने की इच्छा लिए विक्रम उस दिन महल में लौटा, तो बेहद उलझन में था। उस रात वह ठीक तरह सो भी न पाया। अगले दिन सूर्य उगने से पहले ही उठा। घोड़े पर बैठा और पहाड़ी का चक्कर काट कर वहां जा पहुंचा, जहां मंदिर का कमल उगता था।

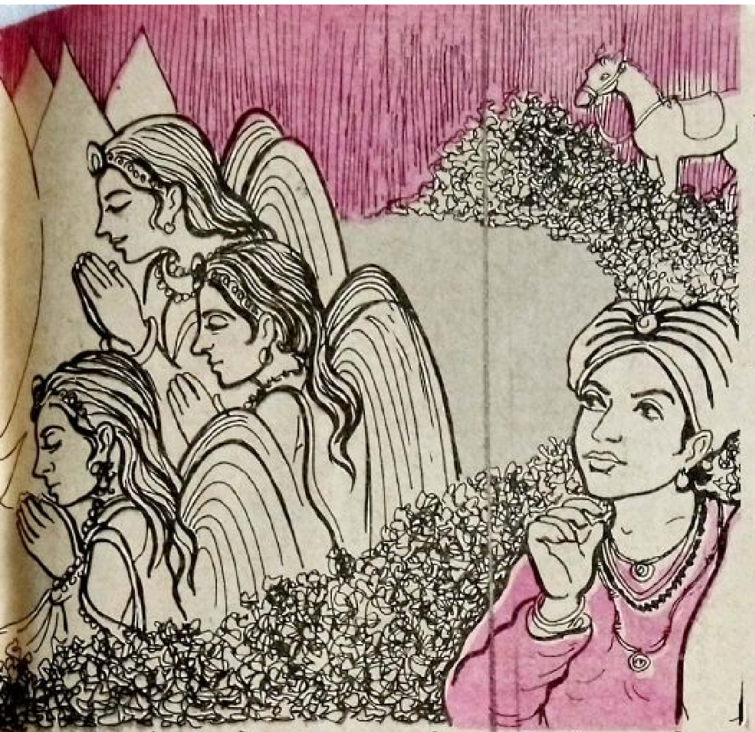
शाम होते ही विक्रम ने देखा, आसमान से सात बगुले धरती पर उतरे। उस दिन उसने पूरा दिन वहां गुजार दिया। उतरते ही वे सात परियों में बदल गए। विक्रम के आसपास सरसराहट-सी होने लगी। धरती के कमल की पंखुड़ियां फूटने लगीं। उसे ऐसा लगा जैसे वह किसी दिव्य लोक में पहुंच गया है।

मंदिर के बाहर सातों परियां हाथ जोड़े कुछ कह रही थीं। विक्रम ने ध्यान से सुनने की कोशिश की, तो उसे पता चल गया कि मंदिर का रहस्य क्या है।

यह मंदिर परियों की दादी मां का था। दादी परी पहली परी थी, जिसने धरती की खोज की थी, किंतु यहां से अपने लोक वापस न जा सकी। यह समाधि उसी दादी परी की थी। हर दिन परी लोक से सात परियां आकर दादी परी की स्तुति करती थीं।

विक्रम के मन की उलझन दूर हो चुकी थी। परियां दादी परी को प्रणाम करके झाड़ी की ओर जा चुकी थीं। विक्रम ने भी उठना चाहा, किंतु उठ न सका। कमल बंद हो चुका था। उसी के साथ कमल में बंद विक्रम भी लोप हो गया।

उस रात विक्रम महल में नहीं पहुंचा, तो सब ओर बेचैनी फैल गई। ऊहापोह में सवेरा हो गया। राजा ने तुरंत गुप्तचर बुलाए। सेनापति को बुलाया। उन्हें विक्रम की तलाश में भेजा। सारे राज्य के चप्पे-चप्पे पर सैनिक और गुप्तचर फैल गए। कुछ सैनिक



उत्तर-पूर्व की ओर भी गए। उन्हें पहाड़ी की तलहटी में विक्रम का घोड़ा मिल गया।

आनन-फानन में वहां सैनिक छावनी बन गई। दोपहर ढलते न ढलते आसमान पर फिर सात बगुले आए। नीचे देखते, फिर ऊपर उड़ जाते। आपस में कहते— "कितना निर्दयी है यहां का राजा! हमारा नियम भंग कर दिया।"

काफी देर तक वे आसमान में मंडराते रहे। फिर बेबस हो चले गए। न उस दिन कमल खिला, न मंदिर बना और न विक्रम की मुक्ति हुई। वे राजा के आदेश से वहीं पड़े रहे। कई दिन बीत गए। परियां बगुलों के वेश में रोज आतीं और वापस चली जातीं।

पांचवें दिन एक बुढ़िया लाठी टेकती सैनिकों के पास आई। पूछने लगी— "आप लोग इस घोड़े के चारों ओर क्यों पड़े हैं?"

सेनापति ने विक्रम के लापता होने की बात बुढ़िया को बताई, तो वह मुसकराने लगी। लाठी टेकती हुई घोड़े के पास गई। फिर गायब हो गई

तब तक शाम ढलने लगी थी। आकाश में सातों बगुले मंडराने लगे थे। वहां चंदन का छोटा-सा बगीचा था। बगुले उस बगीचे में उतर गए। उतरते ही वे परियों में बदल गए।

"दादी परी की स्तुति किए बिना आज पांचवां दिन हो गया।"— एक परी बोली— "यदि दो दिन में हमने कुछ न किया, तो धरती पर कोई परी न आ सकेगी।"

"यह सब राजा विश्वमंगल का किया-धरा है।"— दूसरी परी ने कहा— "हमें तुरंत बौनों की मदद लेनी चाहिए। ऐसे दुष्ट राजा को दंड तो मिलना ही चाहिए।"

बौने वहां से दूर किसी घाटी की तलहटी में रहते थे। कुछ ही देर में परियां वहां जा पहुंचीं।

बौने सरदार ने उनकी बात सुनी, तो वह चौंक उठा। बोला— "न...न...विश्वमंगल एकदम निर्दोष है।"

परियां कुछ समझ न सकीं। बौने सरदार ने उन्हें बताया— "मेरे पास कल बुढ़िया जादूगरनी आई थी। विश्वमंगल ने टोने-टोटके करने के अपराध में उसे अपने देश से निकाल दिया था। तभी से वह उससे बदला लेने के चक्कर में रहती थी। कल उसे राजा के सैनिक मिले, तो पता चला— राजकुमार विक्रम गायब है। केवल उसका घोड़ा मिल सका है। बुढ़िया घोड़ों की भाषा जानती है। उसने राजकुमार के घोड़े से बात करके पता लगा लिया कि विक्रम दादी मां के मंदिर में बंद हो गया है। वह चाहती थी कि मैं राजकुमार को मंदिर से निकाल, उसके हवाले कर दूं ताकि वह विश्वमंगल से बदला ले सके। मैंने उसे कल आने को कहा है।"

बौने सरदार की बात सुनते ही सातों परियां अवाक् रह गईं। वे तो विश्वमंगल को ही नष्ट करने की सोच रही थीं। काफी देर तक उनमें और बौने सरदार में विचार-विमर्श चलता रहा कि क्या किया जाए। सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि वहां से सैनिकों का पहरा कैसे उठवाया जाए। पहरा उठवाए बिना न मंदिर उगेगा, न राजकुमार को उसकी कैद से छुटकारा दिलाया जा सकेगा।

अचानक बौने सरदार की आंखें चमक उठीं। वह परियों से बोला— "तुम कल ठीक समय पर आना। एक भी सैनिक तुम्हें वहां नहीं मिलेगा।"

अगले दिन बुढ़िया जादूगरनी बौने सरदार के पास

आई। बोली— "क्या सोचा ? यदि तुम किसी तरह विक्रम को मुझे सौंप दो, तो मैं तुम्हें रहने के लिए एक घाटी और दे दूंगी।"

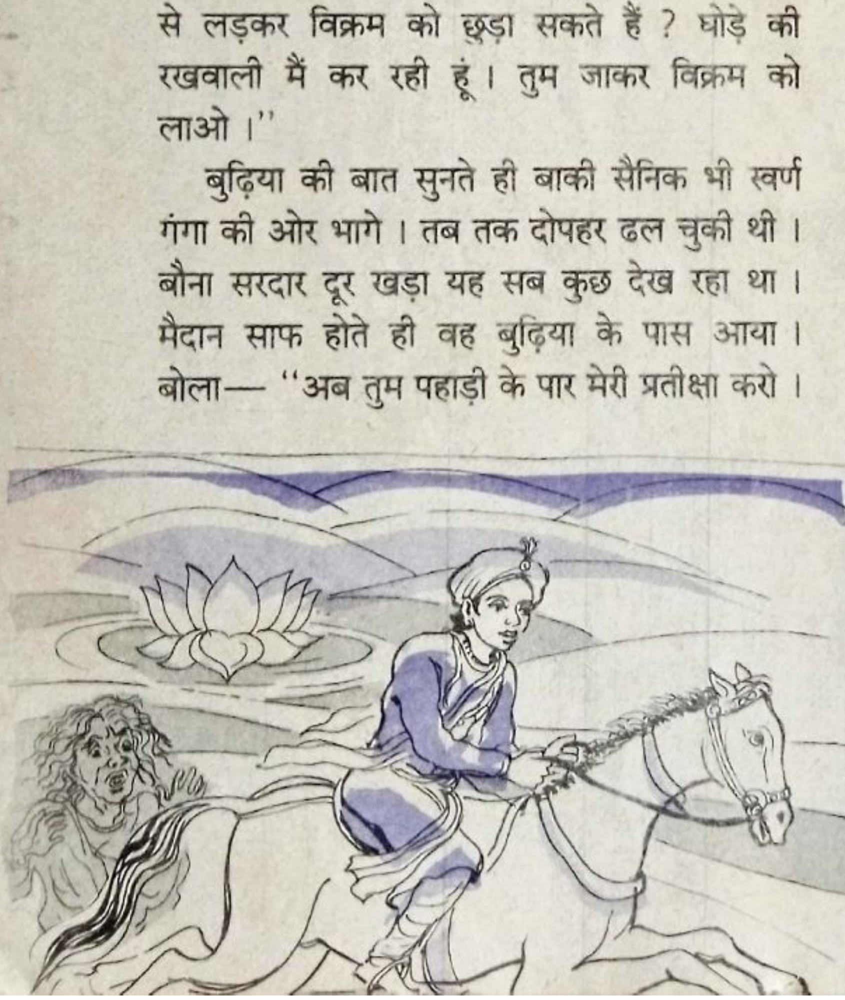
बौना सरदार बोला— "मगर राजा की सेना वहां से हटे, तो मैं परियों को बुलाकर मंदिर उगवाऊं। परियों के आए बिना मंदिर न उगेगा, न मैं राजकुमार को पकड़ सकूंगा।"

बुढ़िया जादूगरनी हंसने लगी— "राजा की सेना को तो मैं एक पल में हटवा दूंगी।" वह लाठी टेकती हुई राजा की सेना के पड़ाव पर जा पहुंची। सेनापति से बोली— "मैंने राजकुमार विक्रम को यहां से दस कोस दूर पश्चिम में स्वर्ण गंगा के किनारे एक गुफा में देखा है।"— कहकर वह दूर झाड़ियों में छिप गई।

तुरंत आधे सैनिक स्वर्ण गंगा की ओर रवाना हो गए। उनके जाने के कुछ देर बाद बुढ़िया जादूगरनी फिर वहां आई। आधे सैनिक अभी भी घोड़े के पास जमे थे।

"अरे, तुम मूर्ख तो नहीं हो!"— बुढ़िया ने चीख कर उनसे कहा— "क्या मुट्ठी भर सैनिक राक्षस से लड़कर विक्रम को छुड़ा सकते हैं? घोड़े की रखवाली मैं कर रही हूं। तुम जाकर विक्रम को लाओ।"

बुढ़िया की बात सुनते ही बाकी सैनिक भी स्वर्ण गंगा की ओर भागे। तब तक दोपहर ढल चुकी थी। बौना सरदार दूर खड़ा यह सब कुछ देख रहा था। मैदान साफ होते ही वह बुढ़िया के पास आया। बोला— "अब तुम पहाड़ी के पार मेरी प्रतीक्षा करो। मैं परियों को बुलाता हूं।"



बुढ़िया जानती थी, परियां किसी मनुष्य की उपस्थिति में नहीं आतीं। वह चुपचाप लाठी टेकती वहां से चली गई। उसके जाते ही आकाश पर सात बगुले उड़ते दिखाई देने लगे।

इधर-उधर देखते हुए वे नीचे उतरे। वे परियों में बदले ही थे कि धरती से विशाल कमल उगने लगा। उस पर मंदिर उभरने लगा। परियां हाथ जोड़कर स्तुति करने लगीं।

मंदिर में छह दिन से बंद राजकुमार विक्रम भी जैसे गहरी नींद से जागा। कमल से कूद वह घोड़े के पास आया और उस पर बैठ सीधा महल की ओर चल पड़ा। उसे जाता देख बौने सरदार और परियों ने चैन की सांस ली।

अब उन्हें धरती पर आने से कोई नहीं रोक सकता था। वे चली गईं। मंदिर और कमल लोप हो गए, तो बुढ़िया जादूगरनी लाठी टेकती, तेज-तेज चलती वहां आई। बौने सरदार से बोली— "कहां है विक्रम ?"

"वह तो भाग गया।"— बौने सरदार ने कहा।

बुढ़िया जादूगरनी का चेहरा क्रोध से लाल हो गया— "अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगी।"

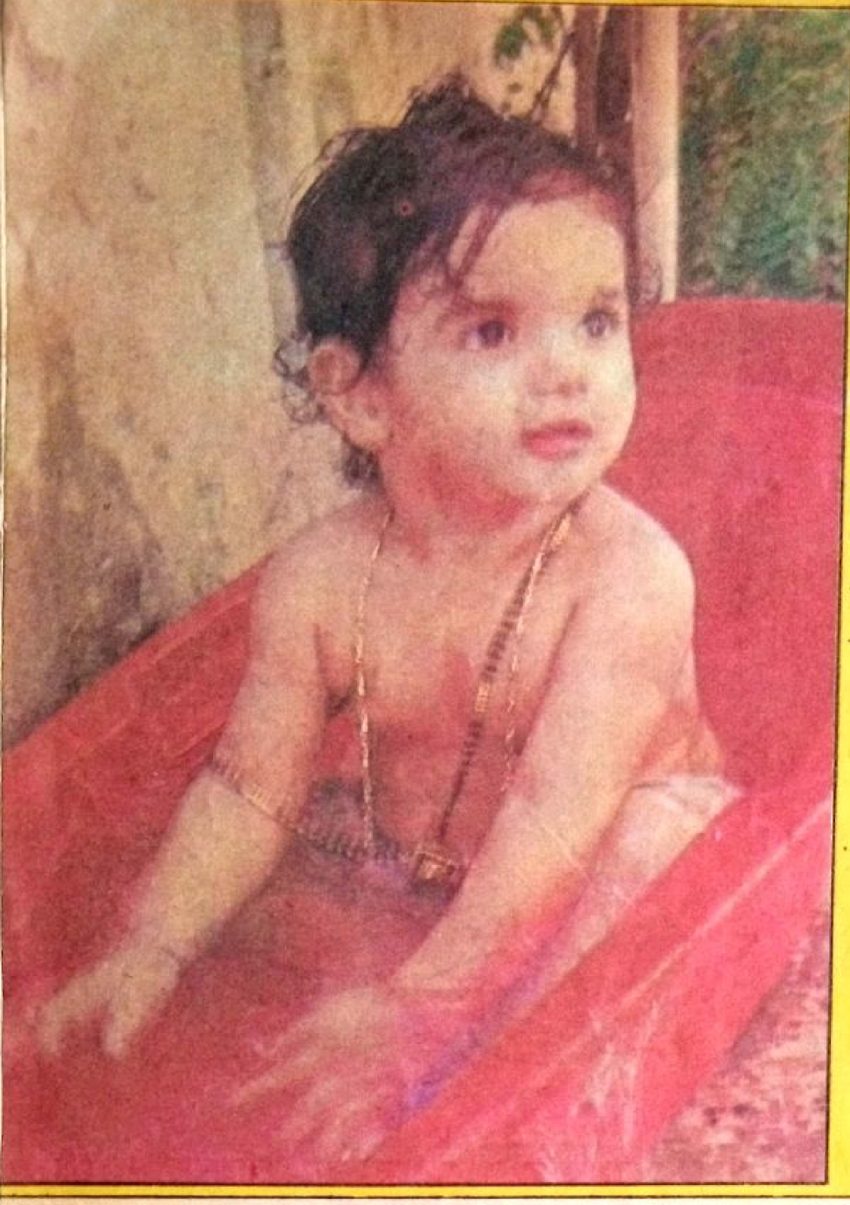
कहकर उसने काले जादू की फूंक अपनी लाठी पर मारी। बौने सरदार का चेहरा पीला पड़ गया। वह थर-थर कांपने लगा। बुढ़िया जादू से कीली गई लाठी उसकी ओर फेंकना ही चाहती थी कि पीछे से किसी ने तलवार के एक ही वार से उसे मार डाला।

बौने सरदार ने देखा— बुढ़िया को मारने वाला राजा का सेनापति था।

सेनापति बौने सरदार से बोला— "मैंने छिपकर तुम दोनों की बातें सुन ली थीं। यहां जो कुछ हुआ, वह भी देख लिया था। असल में बुढ़िया पर मुझे शुरू से ही संदेह हो गया था। इसीलिए मैं स्वर्ण गंगा की ओर न जाकर यहीं छिप गया था।"

सेनापति बौने सरदार और परियों को राजा की ओर से धन्यवाद देना चाहता था, किंतु वह कुछ कहता, इससे पहले ही बौना सरदार लोप हो गया। ●


चीटू-नीटू
चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेकर मैं प्रथम पुरस्कार…
प्रथम पुरस्कार मेरा, क्योंकि मैं भी भाग ले रही हूं
अरे, नीटू क्या बनाएगी! मेरा 'झोंपड़ी और हिरण' चित्र देखकर सभी दंग रह जाएंगे
लेकिन नीटू ने भी 'झोंपड़ी और हिरण'…
'झोंपड़ी और हिरण' उसे ही बनाने दो, अब मैं 'गाय और बछड़ा'.
'झोंपड़ी और हिरण' तो उसने मुझे दे दिया, अब वह भी 'गाय…'
यह देखो, नीटू के 'गाय और बछड़े' की कतरनें! अब वह भी…
हटाओ 'बतख और कमल' अब मैं 'जंगल का राजा' चमकीले रंगों में…
नीटू, चीटू अब चमकीले रंग इस्तेमाल कर रहा है
रखो इसे, तुम्हारे काम आएगा, अब मैं सोने और चांदी के रंग…
उनकी कटी तस्वीरों के टुकड़े जोड़कर मैं भी प्रतियोगिता में…
गोंद
प्रथम
मेरा कतरन चित्र 'जंगल में मंगल' प्रथम आया, आपकी आपसी फूट के कारण.



शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए । इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं । आप भी सोचिए, कोई छोटा-सा सुंदर शीर्षक । उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ जुलाई '९५ तक शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए । चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे ।

पुरस्कृत चित्र

ऐश्वर्य सारथ (१० वर्ष)
सी ४ डी —७ बी,
जनकपुरी, नई दिल्ली ।



इनके चित्र भी पसंद आए—
मधुपर्ण मुखर्जी, वाराणसी; विनय छेत्री, गंगटोक; रेणु कुमारी, मुजफ्फरपुर; गुंजन मोहन, देहरादून ।

बाल सभा



मृत्युंजय कुमार



प्रेमकुमार थापा



माधुरी पटेल



संजीव शुक्ला



पूजा चतुर्वेदी

पत्र मिला

□ 'नंदन' पत्रिका ज्ञान का भंडार है । मैं इसे नियमित रूप से पढ़ती हूं । घर के सभी सदस्य इसे बड़े उत्साह से पढ़ते हैं । हम सब अगले अंक का इंतजार करते हैं । मैं आठ वर्ष की हूं । तीन वर्ष से इसे पढ़ रही हूं । मैं आजीवन इसे पढ़ूंगी ।

—लक्ष्मीरानी बरनवाल, गोपालगंज (बि.)

□ 'प्राचीन कथा विशेषांक' आया, खूब सारी प्रतियोगिताएं लाया, कहानियों ने ज्ञान बढ़ाया, 'चटपट' ने खूब हंसाया । 'चित्रकथाओं' ने मनोरंजन कराया— मैं इस अंक को देख फूला न समाया ।

—भमराराम एस. जोगू, रामसर, बाड़मेर (राज.)

□ मैं आठ वर्षों से 'नंदन' पत्रिका पढ़ रहा हूं । यह रोचक और ज्ञानवर्धक है । अगर इसके प्रत्येक अंक में महापुरुषों की जीवनियों को छापा जाए तो यह पत्रिका और अधिक प्रेरणादायक हो जाएगी ।

—राजेंद्रकुमार लाड़ेकर, राउरकेला (उड़ीसा)

□ 'नंदन' मुझे बहुत अच्छी लगती है । 'प्राचीन कथा विशेषांक' अच्छा लगा । इस अंक में 'लौटी चमक', 'मांगो वर' व 'चोंच में तलवार' कहानियां अनोखी थीं । 'चित्रकथाएं' भी रोचक थीं ।

—श्यामसिंह अधिकारी, लालकुआं (उ. प्र.)

□ नया अंक मजेदार लगा । यह पत्रिका मुझे बहुत भाती है । 'प्राचीन कथा विशेषांक' विशेष पसंद आया । 'चीटू-नीटू' पढ़कर हंसते-हंसते लोट-पोट हो गए । 'अजब-अनोखी दुनिया' में भी अच्छी जानकारी मिलती है ।

—हिमांशु खन्ना, मद्रास (तमिलनाडु)

□ मई '९५ का अंक मन को भा गया । मेरे सभी भाई-बहन इसे चाव से पढ़ते हैं । 'रानी की पुकार', 'आम को शाप' कहानियां अच्छी लगीं । 'चीटू-नीटू' ने तो बहुत हंसाया । सम्पादकीय तथा आवरण पृष्ठ विशेष प्रेरणादायी रहे । यह हम सब की प्रिय पत्रिका है ।

—रमेश उज्ज्वल, नागौर (राज.)

□ हाल ही में 'नंदन' पढ़ना शुरू किया है । पहले पहल मेरे दोस्त ने मुझे यह पत्रिका पढ़ने को दी । पढ़कर बहुत अच्छी लगी । इस अंक में 'चटपट' व 'तेनालीराम' बेहद पसंद आए । सभी कहानियां एक से बढ़कर एक लगीं ।

—स्वप्न चक्रवर्ती, गुवाहाटी (असम)

□ 'नंदन' यानी ज्ञान का भंडार । यही दुनिया में एकमात्र ऐसी पत्रिका है, जिसको पढ़ने से बालकों की कल्पना शक्ति का विकास होता है । यह सुरुचिपूर्ण एवं प्रेरणादायी है । इसमें प्रकाशित सभी कहानियां ज्ञानवर्धक होती हैं । यह बच्चों के लिए नहीं अपितु बड़ों के भी मनोरंजन का एक सस्ता व सुलभ साधन है ।

—गोविंद पुरी, मेरठ कैंट (उ. प्र.)

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : दिनेशकुमार चौधरी, सागर (म. प्र.); भवदीया, अनुराधा, दिल्ली ।

आगामी अंक

एक से बढ़कर एक मजेदार कहानियां । साथ में—

□ अग्निबेताल के आगे सब बेबस थे । जब राजा विक्रमादित्य सामने आए तो... 'विश्व की महान कृतियां' में पढ़िए गुजराती के उपन्यास 'वीर विक्रमादित्य' का सार संक्षेप ।

जन्माष्टमी पर विशेष :

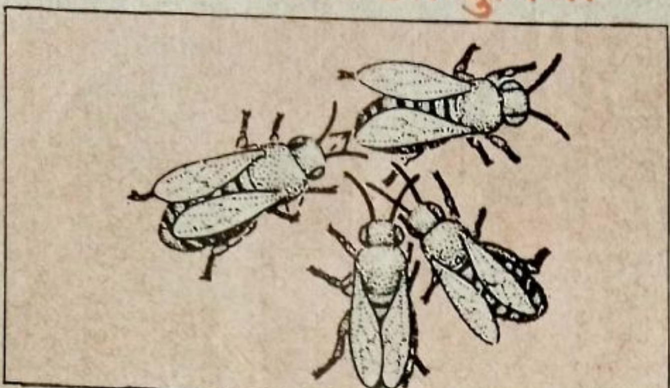
□ राधाकृष्ण की अनोखी मूर्तियां— एलबम में ।

□ तेनालीराम ने नगर के सारे दरवाजे बंद करा दिए । क्या वह राजा का गुस्सा झेल सका ?

□ उसे उपहार में मिला टूटा-फूटा कलश लेकिन... मजेदार चित्र-कथा ।

□ माटी मटाल का प्रदेश : कलिंग उत्कल उड़ीसा· रंगीन छवियां ।

अजब-अनोखी दुनिया



साक्षर मधुमक्खियां : शहद की मक्खियों को भला गिनने की क्या जरूरत है ! बाजार में उन्हें लेन-देन तो करना नहीं होता । बर्लिन के खुले विश्वविद्यालय के कीट विज्ञानियों का कहना है कि गिनती याद रखने से मधुमक्खियों को भोजन ढूंढ़ने में मदद मिलती है । एक दिलचस्प प्रयोग किया गया । मधुमक्खियों के छत्ते से ढाई सौ मीटर दूर चीनी का घोल रखा गया । बीच में बाधा डालने के लिए दस-दस फीट ऊंचे चार तम्बू लगाए गए । मधुमक्खियां वहां पहुंच गईं । बाद में कई फेर-बदल किए गए । पहले हर तम्बू के बाद घोल रखा गया । तम्बुओं की संख्या बढ़ाई गई लेकिन हर बार वे वहां जा पहुंचीं ।

बर्लिन के कीट विज्ञानियों का कहना है कि शायद मक्खियां गिन सकती हैं । जहां तम्बू नहीं होते, वहां वे झाड़ियां और पेड़ गिनकर काम चलाती होंगी ।

कपड़े की सड़कें : नदी हो या समुद्र का किनारा, सब तरफ रेत की मोटी तह बिछी रहती है । रेत में मोटर गाड़ियों के पहिए धंस जाते हैं । रेत पर सड़कें बनाना भी आसान नहीं ।

फ्रांस की एक कम्पनी ने रेत पर सड़कें बनाने की तरकीब निकाली है । ये सड़कें पोलिएस्टर के धागों से बनती हैं । इन धागों से टाट-पट्टियां बनाई जाती हैं । इन्हें रेत पर जरूरत के मुताबिक बिछा देते हैं । इन पट्टियों पर पांच टन वजन तक की गाड़ियां आसानी से दौड़ सकती हैं । कम्पनी का इरादा पोलिएस्टर धागों की मोटाई बढ़ाकर, करीब ४० टन वजन के वाहनों के लिए रेत पर सड़कें बिछाने का है ।

उपग्रह से मरीजों की जांच : दिल्ली में मरीज आराम से अपने बिस्तर पर लेटा रहे, उधर अमरीका में बैठा डाक्टर इस मरीज की नब्ज टटोल ले । इलाज की पर्ची कंप्यूटर से भेज दे । अगर ऐसा हो तो कितनी आसानी हो ।

मरीजों का यह सपना जल्दी ही पूरा होने वाला है । अटलांटा के वैज्ञानिक इसी उधेड़-बुन में लगे हैं । वे ऐसी संवेदी मशीनें बना रहे हैं कि अगर पत्ता भी खड़के तो पता चल जाए । इस मशीन को मरीज के शरीर पर फेरना होगा । इससे तापमान, खून की चाल, गांठों और बीमारियों के अन्य लक्षणों का प्रसारण शुरू हो जाएगा । उपग्रह की मदद से ये जानकारियां अमरीकी डाक्टर के पास पहुंचेंगी । उसके अस्पताल में रखे मशीनी मानव (रोबोट) में मरीज जैसे ही लक्षण दिखने लगेंगे । डाक्टर उससे मिली जानकारी के आधार पर इलाज कर देगा ।

शताब्दी का आखिरी सम्पूर्ण सूर्यग्रहण : बीसवीं सदी का आखिरी खग्रास (सम्पूर्ण) सूर्यग्रहण इस साल भारत में कुछ स्थानों पर २४ अक्तूबर '९५ को दिखाई देगा । पंद्रह साल पहले १६ फरवरी १९८० को सम्पूर्ण सूर्यग्रहण पड़ा था । तब लोग डर की वजह से बाहर नहीं निकले थे । वैज्ञानिकों का कहना है कि इसमें डर की कोई बात नहीं है । खग्रास सूर्यग्रहण एक दुर्लभ अवसर है । इसे जरूर देखना चाहिए । देखने के लिए कालिख लगे कांच का प्रयोग करें । विशेष चश्मों और एक्सपोज (काली) की गई कैमरे की फिल्म का इस्तेमाल भी किया जा सकता है ।

सम्पूर्ण सूर्यग्रहण के दौरान कई मजेदार घटनाएं भी हो सकती हैं । उदाहरण के लिए कई पौधे सिमटकर बंद हो जाते हैं, जैसा कि वे रात में करते हैं । रात में जो पौधे सुगंध छोड़ते हैं, वैसी ही गंध निकल सकती है । पक्षियों को रात का भ्रम होने लगता है । वे घोंसलों की तरफ लौटने लगते हैं । सम्पूर्ण सूर्यग्रहण में रात की तरह का अंधेरा होने से कई बार चमकदार तारे भी दिखने लगते हैं ।

—बृजमोहन गुप्त

नीलदेश का राजकुंवर

—चन्द्रदत्त 'इंदु'

दूर पहाड़ों की घाटी में एक छोटा-सा राज्य था—नील देश । राजा का एक सुंदर, राजकुंवर था । मां-बाप का लाड़ला ।

उसने परियों की बहुत-सी कहानियां पढ़ी-सुनी थीं । राजकुंवर सोचने लगा—'जब परियों के बारे में ढेर सारी कहानियां लिखी गई हैं, तो परियां कहीं न कहीं जरूर मिलेंगी । वे अक्सर परीलोक से धरती पर आती रहती हैं । उन्हें ढूंढ़ना चाहिए ।'

दूसरे ही दिन उसने एक घोड़ी सजवाई । हाथ में तलवार ली और चल पड़ा परी की खोज में । राजा-रानी ने उसे बहुत रोका, समझाया, मगर राजकुंवर न माना । मानता भी कैसे, वह तो परियों से मिलने के लिए बैचेन हो रहा था ।

भटकता-भटकता राजकुंवर ठंडे पानी की एक झील के पास जा पहुंचा । प्यास लगी थी । उसने जी भर पानी पिया और अपनी घोड़ी को भी पिलाया बेहद थका था । हरी घास पर लेटा, तो कुछ ही देर में नींद आ गई ।

अचानक राजकुंवर की नींद टूटी । वह आंखें मलते हुए उठा तो सिरहाने एक सुंदर लड़की को बैठे देख आश्चर्य में पड़ गया । पूछा—"क्या तुम कोई परी हो ?"

राजकुंवर की बात सुनकर लड़की खिलखिलाकर हंस दी । बोली—"क्या तुम्हें मेरे पंख दिखाई दे रहे हैं ?"

"तुम देखने में बिलकुल राजकुमारी-सी लग रही हो ?" —राजकुंवर बोला ।

"क्यों नहीं, अब तो मैं राजकुमारी से कम हूं भी नहीं । इसीलिए मेरा नाम नीलिमा रानी रखा गया है । पहले मेरा नाम था चम्पाकली ।" —कहकर वह फिर जोर-जोर से हसने लगी ।

—"चम्पाकली से नीलिमा रानी बनने की कहानी सचमुच बहुत मजेदार होगी । सुनाओ तो !"

नीलिमा बताने लगी—"एक दिन मैं भूखी-प्यासी नगरसेठ के दरवाजे पर आई । मुझे देखकर सेठानी ने दुत्कार दिया ।

"मैं जाने लगी, तभी सेठ जी आ गए । बहुत ही दयालु हैं । उन्होंने मुझे रोका । अंदर से खाना लाए । पैसे भी देने लगे पर मैंने न लिए । मैंने कहा कि मुझे काम चाहिए । मुझसे कुछ काम लो, तभी मैं यह खाना खाऊंगी ।

"मेरी बात सुनकर सेठ जी प्रभावित हुए । वह मुझे हवेली के अंदर ले गए । उनके कहने पर सेठानी ने मुझे हवेली में सफाई का काम दे तो दिया, मगर वह मुझे बहुत तंग करने लगीं । कभी-कभी बुरी तरह मार भी खानी पड़ती थी । एक दिन सेठानी ने मुझे जंगल से सूखी लकड़ियां लाने को कहा । शायद उन्होंने सोचा होगा कि अब यह कभी वापस नहीं आएगी, मगर ऐसा हुआ नहीं ।"

"तब कैसा हुआ ?" —नीलिमा को बीच में टोकते हुए राजकुंवर ने पूछा ।

—"कैसा क्या, भयानक जंगल था । डर के मारे मेरे प्राण सूख गए । दुःख से गला भर आया । मैं एक चट्टान पर बैठकर रोने लगी । नंगे पैरों आई थी । कांटों से पैर लहूलुहान हो रहे थे, पर करती क्या ! तभी किसी को देखकर मैं ठगी-सी रह गई ।"

"क्यों, ऐसा क्या देखा तुमने ?" —राजकुंवर ने पूछा ।

"एक परी बिलकुल मेरे पास आकर बोली— 'मैं तुम्हारे लिए परीलोक से ये मीठे-मीठे अंगूर लाई हूं । लो, खाकर देखो ।'

"भूख तो मुझे लगी ही थी । मैं अंगूर खाने लगी । वाह क्या स्वाद था ! मैंने भर पेट अंगूर खाए । मगर अपनी हालत पर मुझे फिर से रोना आने लगा ।

"परी ने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा—'चिंता न करो । मैं तुम्हारा दुःख दूर करने ही

आई हूं। लो, यह फूल लो। इसकी एक पंखुड़ी तोड़कर हवेली की बगिया में बिखरा देना। देखना, रात भर में पूरी बगिया फूलों से भर जाएगी। उन फूलों की सुगंध में तुम्हारा सुख और खुशियां भरी होंगी। जैसे ही सेठ और सेठानी उस गंध को सूंघेंगे, तुम्हें बेटी मानकर प्यार करने लगेंगे। मगर याद रखना, मेरे मिलने की बात उन्हें न बताना। यह फूल भी उन्हें न दिखाना। देखो, दुष्ट स्वभाव के किसी भी व्यक्ति के हाथ में आने पर यह फूल मुरझा जाएगा। तुम इसे छिपाकर अपने पास रखना। अगर तुम किसी दुखी का दुःख दूर करना चाहो, तो उसे फूल की एक पंखुड़ी तोड़कर दे देना।'

"अच्छा! सचमुच परी बहुत दयालु थी। फिर क्या हुआ?" —राजकुंवर ने उत्सुकता से पूछा।

नीलिमा ने आगे की कहानी बताते हुए कहा—"सांझ ढलने पर जैसे ही आकाश में तारे चमके, परी छम-छम करती, पता नहीं कहां चली गई और मैं घर लौट आई।"

"घर आने पर सेठानी ने क्या कहा?" —कुंवर पूछ बैठा।

"बस कुछ न पूछो। बहुत बिगड़ीं। मैं देर से आई थी। लकड़ी भी नहीं लाई थी। इसी बात पर उन्होंने जमकर मेरी पिटाई की। मैं भूखी-प्यासी, रोती-रोती वहां से चली गई। जब सब लोग सो गए तो मैं चुपके से उठकर बगिया में आई। जैसा परी ने कहा था, मैंने वैसा ही किया। इसके बाद जाकर सो गई।

"सुबह होते ही वहां का दृश्य ही बदल गया। पूरी बगिया फूलों से भरी थी। सेठ जी बगिया में आए। महकते फूलों को देखकर वह खुशी से भर उठे। सेठानी को बुला लाए। कहने लगे कि उनका सपना सच हो गया। उन्होंने सपने में एक परी को देखा था।

"परी ने कहा था कि वह उनकी बगिया में सुख और खुशियां बो रही है। जब तक ये फूल महकेंगे, वह सुखी और प्रसन्न रहेंगे। मगर घर में जो अनाथ लड़की है, उसे कभी दुःख न देना। उसे अपनी बेटी मानना। बड़ी सौभाग्यशाली है वह।

"फूलों की सुगंध ने सेठानी का मन भी बदल दिया। दोनों ने आकर मुझे खूब प्यार किया। अपने किए पर पश्चात्ताप करते हुए सेठानी ने कहा कि चम्पाकली, आज से तू मेरी बेटी और मैं तेरी मां। सेठ जी ने तब से मेरा नाम नीलिमा रानी रख दिया।"

"मगर नीलिमा नाम ही क्यों रखा?" —राजकुंवर ने पूछा।

"क्योंकि बगिया में खिले सारे फूल हलके नीले रंग के थे। और उसके बाद तो मैं क्या बन गई, तुम देख ही रहे हो। मेरी खुशी के लिए यह बाग लगाया गया। यह झील बनाई गई। यहां मैं घूमने आती हूं।" —इतना कहकर नीलिमा मुसकराने लगी।

राजकुंवर बोला—"यह मेरा सौभाग्य है कि मैं चला था परी ढूंढ़ने और मिल गईं तुम। पता नहीं, तुम्हारी तरह मैं भी कभी परी से मिल पाऊंगा या नहीं।"

"हो सकता है, मैं किसी परी की प्रेरणा से ही तुम्हारे पास आई हूं। देखो, परियों को जो याद करते हैं, परियां किसी न किसी रूप में उनसे मिलने आती हैं। लो, फूल की एक पंखुड़ी ले जाओ। जाकर इसे अपनी बगिया में बो देना। फिर फूलों के रूप में ढेर सारी खुशियां और सुख तुम्हें मिल जाएंगे, मगर याद रखना—जो खुशियां तुम्हें मिलें, उन्हें दूसरों को भी बांटना। बड़ा आनंद आएगा।" —नीलिमा ने कहा।

फूल की पंखुड़ी लेकर राजकुंवर चलने को हुआ। तभी उसने नीलिमा से विदाई लेने के लिए पीछे मुड़कर देखा। वह हैरान रह गया। न वहां नीलिमा थी, न बाग और झील। दूर तक वीरान रास्ता था।

वह सोच में पड़ गया। उसे लगा, नीलिमा और कोई नहीं, एक परी ही थी। उसकी थकान मिटाने और प्यास बुझाने के लिए ही परी ने यह हरियाली और झील रच डाली। परी की दयालुता देखकर वह गद्‌गद हो उठा। उसने घोड़ी पर बैठकर एड़ लगाई। घोड़ी सरपट दौड़ चली। वह याद करता जा रहा था, उस कहानी को, जो नीलिमा बनकर परी ने उसे सुनाई थी।



Arms Communications/01/RFL/5/95

पिता ने कहा

राजू और राधा दोनों भाई-बहन थे। उनके पिता बचपन में ही गुजर चुके थे। उनके पिता रामनाथ एक बहुत अच्छे मूर्तिकार थे। राजू ने उनसे ही मूर्तियां बनाना सीखा था। उनकी मृत्यु के बाद राजू, राधा के साथ लकड़ी की मूर्तियां बनाकर बेचा करता था, जिससे उनका जीवन गुजर रहा था।

वे जिस राज्य में रहते थे उसका नाम था, रतनगढ़। वहां के राजा थे राजसिंह। वह बहुत उदार, न्यायप्रिय और वीर थे। उन्होंने राज्य में घोषणा की थी कि इस वर्ष गणेश पूजन के अवसर पर राजमहल में सार्वजनिक गणेश पूजा होगी। जो गणेशजी की सबसे अच्छी मूर्ति बनाएगा, उसकी मूर्ति पूजन के लिए रखी जाएगी। इनाम भी दिया जाएगा।

राजा की यह घोषणा राजू और राधा ने भी सुनी। राजू बोला— "राधा, चलो हम भी गणेश भगवान की मूर्ति बनाएं।" राधा ने भी सहमति जताई। दोनों ने जंगल में जाकर बड़ी मेहनत से एक बड़े और मोटे पेड़ का सूखा तना काटा।

राजू ने मोटे तने पर गणेश भगवान की आकृति बनानी शुरू कर दी। मूर्ति जब तैयार हुई तो काफी बड़ी और सुंदर बनी थी। गणेशजी को सजाना भी था पर उसके लिए धन चाहिए था। राजू ने कुछ पुरानी मूर्तियां बेचीं और राधा ने छोटी-छोटी जलाई जा सकने वाली लकड़ियां। मिले पैसों से दोनों ने गणेशजी को सजाने के लिए जरी, गोटा, झालर, चमकीले कपड़े व अन्य चीजें खरीदीं। जल्दी ही गणेशजी की मूर्ति सजकर तैयार हो गई।

गणेश पूजन के दिन राजमहल में बहुत-सी सुंदर मूर्तियां इकट्ठी थीं। राजा निर्णय सुनाने के लिए खड़े हुए। उन्होंने सभी की उत्सुकता को शांत करते हुए कहा— "जिसने गणेशजी की सबसे अच्छी मूर्ति बनाई है, वे हैं दो भाई-बहन— राजू और राधा।"

लोग यह सुनकर आश्चर्य से राजू और राधा को देखने लगे। राजा राजसिंह ने फिर कहा— "मैं आपके आश्चर्य का कारण जानता हूं कि ये बच्चे इतने छोटे होकर भी... । पर मैंने वेश बदलकर राज्य में घूमते समय इनकी लगन और मेहनत को देखा है। गरीब होते हुए भी इन्होंने काम से जी नहीं चुराया। यह पुरस्कार केवल इस मूर्ति की सुंदरता का नहीं, बल्कि मेहनत का है।" फिर उन्होंने राजू व राधा को बुलाकर कहा कि अपनी मूर्ति को सबसे पहले माला वे ही पहनाएं। मूर्ति बहुत बड़ी थी। दोनों ने स्टूल पर चढ़कर दो मालाओं को जोड़कर गणेशजी को माला पहनाई। दरबार तालियों से गूंज उठा।

राजा राजसिंह ने कहा —"पुरस्कार के अलावा मैं इन निर्धन और अनाथ बच्चों के पालन-पोषण और शिक्षा की व्यवस्था कराऊंगा।" दरबार 'गणेश भगवान' व 'महाराज' के जयकार से गूंज उठा। राजू और राधा बहुत खुश थे। उन्हें लगा जैसे उनके पिता सामने खड़े कह रहे हों— 'तुम दोनों ने मेरे सपने को सच कर दिखाया। दरअसल मेरी कला का सम्मान तो आज ही हुआ है।'

—दीपक कटियार, कानपुर

भगवान की माला

एक गांव में पुजारी रहता था। गरीब था। मंदिर में जो भी चढ़ावा आता,उसी से गुजारा करता। उसके दो बच्चे थे। बेटा राम बड़ा और बेटी गौरी छोटी थी। पुजारी गणेश जी का भक्त था। दोनों बच्चे भी श्रद्धापूर्वक गणेश जी की पूजा किया करते थे।

एक बार दोनों बच्चे खेलते-खेलते जंगल में जा पहुंचे। तरह-तरह के पेड़। चिड़ियों की मधुर आवाज। कभी वे इधर जाते तो कभी उधर। वहां उन्होंने ढेर सारे फूल तोड़े। गौरी के पास थैले में सुई-धागा था। दोनों ने मिलकर एक सुंदर माला बनाई। फिर वे इधर-उधर घूमने लगे। तभी राम को दूर कुछ दिखाई दिया। उसने गौरी से कहा— "चलो, वहां चलकर देखते हैं।"

दोनों वहां पहुंचे तो देखा पेड़ों के बीच में एक गुफा थी। चारों ओर सुनसान था। गौरी डरने लगी तो राम बोला— "गौरी, डरने की क्या बात है ? मैं जो हूं। वैसे भी हमारे पास गणेश भगवान को चढ़ाने के लिए माला है। भगवान हमारे साथ हैं।"

वे दोनों गुफा के अंदर गए। गुफा में बहुत अंधेरा था। गौरी ने कहा— "भइया, बाहर चलो। अंदर न जाने क्या हो ?" लेकिन राम न माना। वह गौरी का हाथ पकड़कर आगे बढ़ने लगा। थोड़ी दूर पर गुफा में रोशनी दिखाई दी। अचानक गौरी का पैर किसी चीज से टकराया तो उसकी चीख निकल गई। सामने ढेर सारी खोपड़ियां पड़ी थीं।

तभी जोर से हंसने की आवाज आई। बच्चों ने चौंककर देखा। सामने एक भयानक राक्षसी खड़ी थी। राक्षसी बोली— "बहुत अच्छे समय पर आए हो। बड़ी जोर से भूख लगी है।"

गौरी ने राम का हाथ कसकर पकड़ लिया तो वह धीरे से बोला— "तुम चिंता मत करो। यह राक्षसी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगी। भगवान गणेश हमारी रक्षा जरूर करेंगे।"

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. पिंजरे के पास खड़ी महिला का बायां पैर छोटा है।
२. उसके सिर पर बना तीर बड़ा है।
३. काले कोट वाले आदमी की जेब में रखा रूमाल बड़ा है।
४. उसके सिर पर कम बाल हैं।
५. कैंची पकड़े आदमी की टाई का डिजाइन बदल गया है।
६. उसके पीछे रखे तीन कालीनों में से आखिरी कालीन का टैग गायब है।
७. बाईं तरफ कोने में रखे फ्रेम का पिछला हिस्सा बड़ा है।
८. गोल दरवाजे की चौखट काली हो गई है।
९. दाहिनी तरफ टोप पहने खड़े आदमी की मूंछें हैं।
१०. छत पर लटकी काली बत्ती का डिजाइन बदल गया है।

राक्षसी बोली— "किसी भगवान को याद कर लो अब तुम्हें कोई नहीं बचा पाएगा। ही-ही-ही।"

तभी बच्चों ने गणेश जी को याद किया। चमत्कार हुआ। उनके हाथों की माला से चिंगारी निकली और राक्षसी के शरीर पर जा गिरी। देखते-देखते राक्षसी भस्म हो गई।

अब वे वापस लौट चले। घर पहुंचे तो पिता चिंता में थे। बच्चों ने उन्हें सारी बात बताई तो वे बहुत खुश हुए। बच्चों ने जाकर गणेश जी को माला चढ़ायी।

—**गौरव अरोरा, कालोल (गुज.)**

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : दीपक कुमार, दरभंगा; अमित मदान, दिल्ली; रीनू ग्रेवाल, बहादुरगढ़।

शीर्षक बताइए

परिणाम



ढेर सारे शीर्षक मिले। 'नंदन' मई '९५ अंक में छपे चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

हम दो बहनें नाचे गाएं, झूम-झूमकर खुशी मनाएं।
—स्तुति जायसवाल, म. नं. १८७/१८८ तिलक पार्क, (कैंट क्षेत्र) मेरठ (उ. प्र.)।

हम सखियों में इतना प्यार, देख चकित सारा संसार।
—अमृत आनंद, द्वारा मिथिलेश कुमार सिन्हा, भूमिहारी स्कूल के निकट, अमला टोली, बक्सर, भोजपुर (बि.)।

आज डाल हाथों में हाथ, नाचो-गाओ हमारे साथ।
—शालिनी शर्मा, द्वारा विद्याधर शर्मा, निकट—बस स्टैंड, शिवनगर (किश्तवाड़) जि. डोडा (जम्मू-कश्मीर)।

बालों में गजरा गले में माला, सुर में सुर मिलाकर नाचे बाला।
—गौरव गांधी, द्वारा सौरभ, २ भरावा की कुई, रतलाम (म. प्र.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : अनुराग उपाध्याय, त्रिची (तमिलनाडु); शिम्पू बान्याल, मंडी (हि. प्र.); शशांक रांका, उदयपुर (राज.); मीनाक्षी गुलिया, रोहतक (हरियाणा)।

पत्र-मित्र

पुस्तकें पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. देवआनंद वर्मा, १०वर्ष,७३१, पुरानी दीवानी के पीछे, सिविल लाइन, इटावा (उ.प्र.); २. मो. इकबाल, १५, बड़ी मस्जिद के निकट, सदर बाजार, बालोतरा (राज.); ३. प्रशांतराम, १४, सुकुल टोला लेन, जोगसर, भागलपुर (बि.); ४.विनोद माहेश्वरी, १५, डा. बलवाड़ी, ग्रा. नांधा, जि. रेवाड़ी (हरि.); ५. मोहम्मद शाकिर बोहरा,१६, १६४, भगतसिंह मार्ग, महेश्वर (म.प्र.); ६. मंजयकुमार शर्मा, १६, न्यू एतबारपुर, पो. कुरथौल,थाना फुलवारी, जि. पटना (बि.); ७. धीरज डागा, १४,१६/५४४, जोशी रोड, करोलबाग, नई दिल्ली; ८. अरुणकुमार आनंद, १४, चंद्रप्रकाश, पंजाब नेशनल बैंक, अकबरपुर, फैजाबाद (उ.प्र.); ९. यतेंद्रसिंह, १५, मोहरसिंह, म.नं. ५२६, कृष्णानगर, भरतपुर (राज.); १०. प्रभाषचंद्र तिवारी, १५, राजा तिवारी, पोस्टल कालोनी, गांधी चौक, छपरा (बि.); ११. संजीवकुमार वर्मा, १५, कृष्णा क्लाथ इंपोरियम, औरैया रोड, बकेवर (इटावा); १२. गुरमीत, १४, ८७०, निरंकारी, मिलरगंज, लुधियाना (पं.); १३. संजय गोयल,१४, सरस्वती नगर, ३७०-ए, जोधपुर (राज.); १४. सुमित धीमान, ११, २५/२३,पटेलनगर, यमुना नगर (हरि.); १५. संजीवकुमार, १६ रामचंद्र मंडल, यू.डी.एल. मीरगंज मिल, गोपालगंज (बि.); १६. मनीषा, १४, १७०, कालका गढ़ी, गाजियाबाद; १७. कौशलकुमार, १६, एच.एन. ११५४/ई, हरिओम गली, बाबरपुर, शाहदरा,दिल्ली।

खेल संगीत और चित्रकला में रुचि:

१. कमलेशकुमार मिश्र, १४, वर्ष, मिश्र निवास, न्यू प्रोफेसर्स कालोनी, बहादुरपुर, समस्तीपुर (बि.); २. सिद्धार्थ ठाकुर, १६, एस.के. गुप्ता, ३/१६६, होली चाइल्ड स्कूल, विष्णुपुरी, कानपुर (उ.प्र.); ३. मनीषकुमार गुरहड़िया, १६, ६५/एफ. २४, सैक्टर ७, रोहिणी, दिल्ली; ४. दीपककुमार, १६, २९०/डी, मिश्र भवन, माया बाजार,कोतवाली रोड, गोरखपुर (उ.प्र.); ५. बोथरा पंकज, १४, १७०/१७२, गुलालबाड़ी, सी.पी. टेक, डवा माला, बम्बई; ६. विश्वजीत सान्याल, १५, विद्युत बोर्ड कालोनी, म.नं. एफ/४५, पो. शास्त्रीनगर,पटना (बि.); ७. कु. रश्मि तिरकी, फिलिप्स कालोनी,विजय नर्सिंग होम के निकट, नर्मदा रोड, जबलपुर (म.प्र.); ८. अजयकुमार चौधरी, १३, ग्रा.+पो. सहार, जि. भोजपुर, आरा (बि.); ९. गरिमा वालिया, १४, डी. २१५, भास्कर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर (राज.); १०. दीपक सचदेव, १६, राधेश्याम सचदेव, पंजाबी कालोनी, उझानी, बदायूं (उ.प्र.); ११. संजीवकुमार महतो, १०, थाना बड़ादाहा,पो. बलियापुर, जि. धनबाद (बि.); १२. अमित बजाज, १६, ४०, गहन हट्टा स्ट्रीट, कलकत्ता; १३. आत्माराम आर्य,१४, ग्रा. +पो. पहावरी, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.); १४. श्वेता अग्रवाल, १०, मुंगेरीगंज, जि. बेगुसराय (बि.); १५. सुनयना, १५, वीरेंद्रसिंह सलूजा, नया बाजार, लाखेरी, जि. बूंदी (राज.)।



नंदन ज्ञान-पहेली : ३१७

परिणाम

इस बार भी पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। तीन सर्वशुद्ध हल आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है –

सर्वशुद्ध : तीन : प्रत्येक को एक सौ पचास रुपए

१. श्वेता कुमारी, जमालपुर ; २. अमरीता पोरवाल, इंदौर ; ३. रवीन्द्रकुमार, पटना ।

एक गलती : पंद्रह : प्रत्येक को चालीस रुपए

१. अभिनव शर्मा, अंकलेश्वर (गुजरात) ; २. शोभा, मोतिहारी ; ३. अविनाश जैन, ग्वालियर ; ४. संचित गोयल, पुन्हाना ; ५. मयूर गुप्ता, अलवर ; ६. राकेशकुमार, लामडिंग (असम) ; ७. मजहरुल हक, कर्पूरी ग्राम (समस्तीपुर) ; ८. चंदन चौरसिया, हरिद्वार ; ९. जिज्ञासा सहल, बीकानेर ; १०. श्रीभा शर्मा, चित्तरंजन (वर्धमान) ; ११. लोकेश बड़ौदिया, इंदौर ; १२. श्वेता स्वर्णिका, मुजफ्फरपुर ; १३. आदित्य बंसल, महम ; १४. अनुभव राकेश, कोरबा (बिलासपुर) ; १५. सीमा साहू, सहारनपुर ।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस
१८/२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन



बढ़ते बच्चों की बढ़ती साइकिल
एटलस हाई-ज़ूम हाई राइज़र।
बढ़ते बच्चों के साथ बढ़ता हुआ।
इसके साइड सपोर्ट और एडजस्टेबल सीट
बच्चों के बढ़ते कद के साथ कदम रखें।
1-10 साल की आयु तक साथ निभाएँ।
काश, इनके कपड़े भी
ऐसे होते !
लिलिपुट
बच्चों की पहली एटलस,
लेकिन आख़िरी कतई नहीं।
बी.एम. एक्स. स्कॉउट
छोटे जियाले उस्तादों के
हर एडवेन्चर का साथी।
रेबेल कब
नन्हे बागियों का विशेष ऑल टेरेन
फ्रेम और पहियों वाला दोस्त।
एटलस
साइकिलों की भारत में सबसे बड़ी रेंज
एटलस नन्हें साइकिलों की रेंज में है • रेबेल जूनियर • बिग बॉय • बॉस • फेयरी • प्रिन्सेस

रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९५ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६

